मेरी पहेली

(1100 पहेलियों का संग्रह)

प्रकाशक

धर्मोदय परीक्षा बोर्ड

सागर (म.प्र.)

कृति
मेरी पहेली

सर्वाधिकार
प्रकाशकाधीन

लागत मूल्य
40 /-

प्राप्तिस्थान
धर्मोदय परीक्षा बोर्ड
सागर (म.प्र.) 094249-51771

दो शब्द

भाषा, व्याकरण एवं छन्द बंधन से मुक्त पाठशाला के बालकों के ज्ञानवर्धन के लिये प्रस्तुत है यह पहेली संग्रह।

पहेलियाँ हमें मजबूर करती हैं दिमागी कसरत करने के लिये, अनेक धार्मिक पहेलियाँ इस पुस्तक में उत्तर के साथ में प्रस्तुत हैं।

इन पहेलियों का लेखन प्रातःस्मरणीय आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के निस्पृही शिष्य मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज द्वारा किया गया है।

बालसभा, प्रश्नमंच आदि प्रतियोगिताओं में लयबद्धता के साथ संगीतमय प्रयोग करते हुए आबालवृद्धजनों के लिये उपयोगी बनें।

इसी भावना के साथ समर्पित आपके कर कमलों में ....

प्रकाशक

पहेली पूछने की पद्धति

1. भजन से प्रारम्भ कर फिर अन्त में लय के साथ पहेली पूछें। जैसे- 1. जीवन है पानी...2. प्रभु नाम जपने से ...3. थोड़ा ध्यान लगा... 4. विद्यासागर नाम हमें प्राणों ...... हे मुनिवर धन्य हो तुम.......
2. अन्त में मेरी पहेली का जबाव दो, दो ना, ऐसी भी लय के साथ पूर्ण करें तथा एक, दो, तीन, चार... से दस तक गिनती पूर्ण करने तक करें।
3. पहेली का दो, तीन बार तक रुक-रुक कर पाठन करें, तथा बच्चों से दुहराने को कहें जिससे सबको समझ में आ जावे, आवश्यकता हो तो उस पहेली का खुलासा गद्य में करें।
4. पहेली का जबाव सही आने पर भी अन्य दो तीन बच्चों से और भी पूछें। जिससे आत्मविश्वास का पता चल सके एवं जिस बच्चे ने सबसे पहले सही बताया था, उसे पुरस्कृत करें।
5. बच्चे द्वारा सही उत्तर बताये जाने पर संचालक मंच से पुनः उस उत्तर को दोहरावें, जिसमें सभी को उत्तर पता चल सकें।
6. कम से कम दो माईक रखें तथा पुरस्कार प्राप्त करने वाले बच्चे को मंच पर बुलाना, पहले उसका सामान्य साक्षात्कार (इंटरव्यू)लें। जैसे- 1. आपका नाम... 2. आप कौन-सी कक्षा में पढ़ते हैं। 3. आप क्या बनना चाहते हैं। 4. आपके माता-पिता का क्या नाम है। 5. आपकी मम्मी कहाँ तक पढ़ी हैं। 6. पापा क्या करते हैं। फिर पुरस्कृत करें।
7. कठिन पहेलियों के उत्तर बच्चों को दो-चार दिन पूर्व लिखवा दें।

1 मंत्रों में जो महामंत्र है, सुख पाने का एक यंत्र है।
उसी मंत्र का नाम बताओ, शुद्ध बोलकर सही सुनाओ॥

2 अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु जी को हम नित ध्याय ।
हमें मूलगुण सबके बोलो, कर्म काट मुक्ती पट खोलो ॥

3 रामचन्द्र की जीवन गाथा, पढ़े सुने जो शिव सुख पाता ।
पद्म पुराण ग्रन्थ पथदाता, किसने रचा बताओ भ्राता ॥

4 उमास्वामि मुनिवर की रचना,दशाध्याय पढ़ पाप से बचना ।
कुल सूत्रों की गणना गाओ, तथा ग्रन्थ का नाम बताओ ॥

5 फूल गुलाब का कितना प्यारा, कोमल तन है गंध निराला ।
कैसे उसका ज्ञान है होता, नाम बता क्यों मौका खोता ॥

6 गणित विषय था जिनको प्यारा, जिनवाणी का मिला सहारा।
संग्रह गणितसार है लिक्खा, नाम बताओ गुरु का पक्का॥

7 शान्तिसागराचार्य हमारे, भोज ग्राम में जन्म हैं धारे।
बालपने का नाम बताओ, उन जैसा तुम भी बन जाओ॥

8 णमोकार है सबसे प्यारा, सब मंत्रों में सबसे न्यारा ।
भाषा और छन्द बतलाओ, रचा किन्होंने नाम बताओ ॥

9 जिन्हें सभी हैं शीश नवाते, परमेष्ठी हैं वे कहलाते ।
कितने होते नाम बताएं, सदा शरण में इनकी जाएं ॥

10 दिव्यध्वनि के हैं जो कारण, पाप ताप का करते वारण ।
कितने गणधर सभी बताएं, समवसरण में शोभा पाएँ ॥

11 धीर वीर हैं पाण्डव भाई, संख्या पाँच उन्हीं की गाई ।
किनने मोक्ष कहाँ से पाया, किस कारण से छूटी काया ॥

12 चाचा थे जिनके नारायण, युद्ध कला में वे पारायण।
युगल भाई के नाम बताओ, राम जपो तुम पुण्य कमाओ ॥

13 चतुर्णिकायों के सुर आते, अष्टाह्निक का पर्व मनाते ।
उसी द्वीप का नाम बताओ, जिन प्रतिमा की महिमा गाओ ॥

14 श्रीमति जी के राजदुलारे, विद्यासागर जग से न्यारे ।
कहो कहाँ कब जन्में गुरुवर, मल्लप्पा जी भक्त जिनेश्वर ॥

15 कलिकाल सर्वज्ञ कहाते, सुर भी जिनकी महिमा गाते ।
उन गुरुवर का नाम बताओ, शीश नवाकर पुण्य कमाओ ॥

16 ऊर्ध्व मध्य अरु अधोलोक में, बिना बनाये बिम्ब लोक में ।
जिनमन्दिर की संख्या गाओ, शीश झुकाकर पाप नशाओ ॥

17 ओमकार है दुख का हरता, भव्य जनों को शिव में धरता ।
रचना इसकी कैसे होती, सत्य बताओ जय - जय होती ॥

18 जिनपूजा है दुख की नाशा, इससे मिटती जग की आशा ।
अष्ट द्रव्य के नाम बताकर, पूजा करना तुम नित आकर ॥

19 कौशल्या के राज दुलारे, सीता जी को सबसे प्यारे ।
कौन कहाँ से मोक्ष पधारे, नाम बताओ वरना हारे ॥

20 विद्या गुरुवर के जो गुरुवर, गुरु के, गुरु के, गुरु के गुरुवर ।
पंचाचार्य सभी के पालक, नाम बताओ उनका बालक ॥

21 समयसार छोटा कहलाता, मुक्ति महल का पथ दिखलाता ।
कवि का नाम बताओ भईया, छहढाला तो नाव खिवैया ॥

22 सम्यग्दृष्टी वो कहलाता, सात तत्त्व जो उर में लाता।
इन तत्त्वों के नाम बताओ, कर्म काट मुक्ती पा जाओ॥

23 विषयों को जो चखकर जाने, रसना इन्द्रिय वो पहचाने ।
पाँच विषय हैं उसके होते, नाम बताओ अब क्यों सोते॥

24 ऋषभदेव पितु मात सुनन्दा, और दूसरी माता नन्दा।
पुत्र - पुत्री के नाम बताओ, किसके कौन हमें समझाओ ॥

25 मानुषोत्तर पर्वत की सीमा, कर सकता नर पार कभी ना ।
कुल विस्तार हमें बतलाओ, पर सागर को भूल न जाओ ॥

26 छूकर के जो सबको जाने, स्पर्शन इन्द्रिय पहचाने ।
आठ विषय हैं उसके होते, बोलो नाम समय क्यों खोते ॥

27 सदा जहाँ से मोक्ष हैं जाते, तीर्थंकर उपदेश सुनाते।
क्षेत्र कहाँ पर कितने - कितने, नाम बताओ जानो जितने ॥

28 पार्श्व प्रभु हैं सबसे न्यारे, कर्म शत्रु भी जिनसे हारे।
प्रभु की कुल आयु बतलाओ, प्रभु चरणों में शीश झुकाओ॥

29 कुष्ट रोग क्षण में है भागा, भाग्य सितारा नृप का जागा ।
धन्य धन्य मुनि उनकी रचना, नाम कहो जग में ना फँसना॥

30 रानी चेलना ने समझाया, सम्यक्‌दृष्टि जिसे बनाया ।
उस राजा का नाम बताओ, आगे क्या होगा बतलाओ ॥

31 मोक्षमहल है सुख की शाला, जाना चाहें बालक-बाला ।
कैसे तुम उसको पा जाओ, मोक्षमार्ग है हमें बताओ ॥

32 णमोकार की महिमा न्यारी, सदा रखो तुम इससे यारी ।
शत अठ बार जपे क्यों त्राता, ज्ञात तुम्हें हो कह दो भ्राता ॥

33 कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, हम सबको हैं प्राण से प्यारे ।
पाँच ग्रन्थ के नाम उचारे, गुरु रचित हैं हमें सहारे ॥

34 कोयल मीठा - मीठा गाती, किन्तु काया काली पाती।
कैसे तुमने ऐसा जाना, किस इन्द्रिय से है पहचाना॥

35 सती अंजना के थे ललना, डाला द्वीप हनुरुह में पलना ।
हनुमान जी वे कहलाए, नाम दूसरा कौन बताए ॥

36 भटक-भटक कर दुख ही पाता, चउगतियों में कहीं न साता ।
इन गतियों के नाम बताओ, सबसे पहले इनाम पाओ॥

37 तीन-तीन पद के हैं धारी, जीती जिनने धरती सारी ।
तीर्थंकर का नाम बताओ, कामदेव पदवी पा जाओ ॥

38 मानतुंग मुनिवर ने गाया, भक्तिभाव से बंध छुड़ाया ।
उस रचना का नाम बताओ, तथा छन्द की गणना गाओ ॥

39 भव-भव में जो दुख के दाता, गति आगति कर भटकाता ।
अष्टकर्म के नाम बताओ, कर्म काट मुक्ती पा जाओ ॥

40 जिनवाणी का सार बताता, शिवपुर का जो पता जताता ।
तत्त्व बोध जो हमें कराता, गुरु, ग्रन्थ का कौन है ज्ञाता ॥

41 मरना सबको इक दिन पड़ता, मरण से वो तो कभी न डरता ।
सम्यक् दृष्टी मरण सुधारे, पाँच मरण के नाम उचारे ॥

42 देवों में उत्सव है छाया, जन - जन ने उल्लास मनाया ।
कहे गये कल्याणक जिनके, पाँच कौन से तीर्थंकर के ॥

43 दिव्यध्वनि को हैं जो सुनते, सब मुनियों में आगे रहते ।
परमेष्ठी गणधर कहलावें, कुल कितने हैं कौन बतावें ॥

44 आतम की पहचान कराती, चखें सूंघती और दिखाती ।
छूना सुनना और सुनाना, नाम पाँच इन्द्रिय के गाना ॥

45 राम ज्येष्ठ लघु लक्ष्मण भ्राता, भरत शत्रुघन से था नाता ।
तीर्थ काल में किसके जन्में, पूजित हैं तीर्थंकर जग में ॥

46 प्रवचन देना धर्म सुनाना, पाप कर्म से सदा बचाना ।
स्वाध्याय का भेद कहाता, नाम कौन सा कौन बताता ॥

47 योजन एक लाख विस्तारा, जीव द्रव्य से भरा है सारा ।
नाम द्वीप का कौन बताएं, बीच सुमेरु उसके पाएं ॥

48 णमोकार का पहला पद वो, णमो अरिहन्ताणं है जो ।
कितनी मात्रा हमें गिनाओ, णमोकार को शीश नवाओ ॥

49 नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, हरते हैं जन जन का क्रन्दन ।
कितनी आयु हमें बताना, ऋषभदेव को शीश नवाना ॥

50 कल्पकाल है वह कहलाता, हम सबका है उससे नाता ।
कितने सागर इसमें होते, शीघ्र बताओ क्यों तुम सोते ॥

51 शुक्ल पक्ष चन्दा की भांति, बढ़े निरन्तर माँ बतलाती ।
अवधिज्ञान का नाम बताओ, ज्ञानी बनकर कर्म नशाओ ॥

52 तुंगीगिरि से मोक्ष पधारे, अति सुंदर जो काया धारे ।
हनुमान जी वे कहलायें, मात-पिता थे कौन बताएं ॥

53 सरस्वती के पुत्र हैं प्यारे, नाम ज्ञानसागर जी धारे ।
जन्म भूमि का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ ॥

54 दूजा पद है णमोकार का, पिण्ड रहा जो शुद्ध गणों का ।
सदा णमो सिद्धाणं ध्याओ, मात्रा गिनकर हमें बताओ ॥

55 कर्म धूल को हैं चिपकाती, आतम को मैला है बनाती ।
नाम कषायों के बतलाओ, छुटकारा तुम इनसे पाओ ॥

56 अद्भुत समवसरण की महिमा, पार्श्वप्रभु का है क्या कहना ।
वरदत्तादिक मोक्ष पधारे, तीर्थ कौन सा नाम उचारे ॥

57 मरणकण्डिका ग्रन्थ निराला, सुख पाता है पढ़ने वाला ।
कृपा हुई है किन गुरुवर की, नाम बताओ जय जिनवर की ॥

58 मुकुटबद्ध अन्तिम थे राजा, नाम बताओ लेलो बाजा ।
भद्रबाहु से दीक्षा लीनी, गुरु की नित ही भक्ति कीनी ॥

59 तीन काल अरु तीन लोक की, बातें जाने सभी लोक की ।
वही कौन सा गुण कहलाता, अरहन्तों से जिसका नाता ॥

60 गणनायक जो मार्ग प्रदाता, सब जीवों के हैं सुख साता ।
जयति जय णमोआइरियाणं, कुल मात्रा तुम कहो प्रमाणम् ॥

61 सिद्ध पूज्य है जय भगवन्ता, जिनके ज्ञान का कोई न अंता ।
हमें छोड़कर कहाँ विराजे, सत्य बताओ बजेंगे बाजे ॥

62 गिरी सम्मेद शिखर है प्यारा, जन-जन का है तारन हारा ।
है तीर्थंकर कितने सारे, मोक्ष पधारे हमें सहारे ॥

63 नरक निगोद हमें ले जाता, पाप काम है बुरा कहाता ।
पाँच पाप के नाम बताओ, पाप त्याग कर मुक्ती पाओ ॥

64 देवों के भी देव कहाते, सुर-नर जिनको शीश नवाते ।
कौन देव सच्चे कहलाते, पाप ताप से हमें बचाते ॥

65 कभी मोक्ष ना वो पायेगा, मुनि बन स्वर्ग भले जायेगा ।
उसी जीव का नाम बताओ, अपना है पुरुषार्थ जगाओ ॥

66 देखो विद्याधर की माता, छोड़ा घर-द्वारे से नाता ।
आर्या जी का नाम बताएं, श्रीमति जी को शीश झुकाए ॥

67 सती अंजना देश निकाला, पवनंजय था हुआ बिहाला ।
सास ससुर का नाम बताओ, हनूमान को शीश नवाओ ॥

68 उपाध्याय है ज्ञान विधाता, द्वादशांग युत मुक्ति प्रदाता ।
ओम णमो श्री उवज्झायाणं, कुल मात्रा तुम कहो प्रमाणम् ॥

69 तीर्थंकर हैं तीर्थ के नायक, भव्य जनों को हैं सुखदायक ।
किस आसन से मोक्ष पधारे, तीर्थंकर चौबीस हमारे ॥

70 अनशन तप है मुक्तिप्रदाता, मोह त्याग वैराग्य बढ़ाता ।
विद्यागुरु नौ अनशन कीने, क्षेत्र बताओ बहुत है जीने ॥

71 दो हाथ दो पैर हैं होते, सुखसागर में लेते गोते ।
मनुजों में हैं इन्द्र कहावें, कौन है उनका नाम बनावें ॥

72 ब्रह्मस्वर्ग के अन्त में रहते, मेरा - तेरा कभी ना करते ।
देव कौन से वे कहलाते, अगले भव से मोक्ष हैं पाते ॥

73 मक्खी का वह वमन कहाता, जीव सैकड़ों है उपजाता ।
भूल इसे तुम कभी न खाना, नाम व्यसन का हमें बताना ॥

74 चक्रवर्ती ने सबको जीता, विषय भोग का नित रस पीता ।
छह खण्डों के नाम बताओ, उन सब के स्वामि बन जाओ ॥

75 चलते फिरते तीर्थ दिगम्बर, रखे न जो पैसा आडम्बर ।
णमो लोए श्री सव्वसाहूणं, कुल मात्रा अब कहो प्रमाणम् ॥

76 सब अचलों में जो महान् है, तीर्थंकरों का मुक्तिधाम है ।
भाव सहित वंदन जो करता, नाम बताओ दुख का हरता ॥

77 बहुत परिग्रह है जो रखता, भाई-बहन से नित प्रति लड़ता ।
दिन में सोता रात में खाता, गति कौन सी वो है पाता ॥

78 केश रहित हैं फिर भी सुन्दर, विचरण करते द्वीप समुन्दर ।
देवों के तुम भेद गिनाओ, अच्छे बच्चे नाम बताओ ॥

79 शिव पथ चलते हमें चलाते, उन आचार्य को शीश झुकाते ।
पद आचार्य का कब है पाया, विद्यासागर नाम सुभाया॥

80 हल्का अपने तन को बनाया, तन्तु भी फिर टूट न पाया।
ऋद्धि कौन सी है कहलाती, देवों की महिमा बतलाती॥

81 हार जीत का खेल कहाता, नरकों में निश्चित ले जाता।
व्यसन बड़ा है यह दुखदाई, नाम बताओ मेरे भाई॥

82 ध्वज लहराता शान बढ़ाता, पवन के संग देखो इठलाता।
जीव कौन सा वो कहलाता, है आकार इसी का पाता॥

83 तीर्थक्षेत्र जो सबसे न्यारा, आदिप्रभु जी का मिले सहारा ।
रत्नमयी प्रभु चन्द्र विराजे, गुफा में दर्शन कौन करावे ॥

84 बुद्धि को है भ्रष्ट बनाता, घर भर में दुख दारिद्र लाता ।
भूल इसे तुम कभी न छूना, नाम व्यसन का बताओ जूना ॥

85 देखो बिलाव जैसी काया, सिन्दूरी का रंग है पाया ।
बारह योजन आग लगाया, शरीर कौन सा बताओ भाया ॥

86 नेमिनाथ ना राजुल ब्याहा, चलना मोक्षमार्ग पर चाहा ।
मोक्ष कहाँ से उनने पाया, दूजा नाम भी बताओ भाया ॥

87 ज्ञान ही भव का कूल कहाता, राग सहित जग में भटकाता ।
हम हैं कितने ज्ञान के धारी, सोच बताओ सब नर-नारी ॥

88 उपसर्ग परीषह जिनने जीते, ज्ञानामृत को जो नित पीते ।
प्रथमाचार्य जिन्हें सब कहते, नाम बताकर इनाम जीते ॥

89 बाहुबली की अतिशयकारी, प्रतिमा देखो बड़ी निराली ।
किसने कब प्रतिमा बनवाई, दक्षिण प्रान्त में है पधराई ॥

90 धवल हंस के जैसी काया, संग में इसके कुछ न माया ।
सुभिक्ष करता है उपकारी, नाम बताओ देह का प्यारी ॥

91 गगन में देखो जिनका यान, चमक से होती है पहचान ।
देव कौन से वे कहलाते, कभी-कभी वे यहाँ भी आते ॥

92 लक्षण जीव द्रव्य का मानो, सब द्रव्यों से पृथक् है जानो ।
कौन-कौन से नाम बताओ, सब जीवों में दोनों पाओ॥

93 समन्तभद्र स्वामि जगनामी, जिनशासन की महिमा जानी ।
रचित ग्रन्थ के नाम बताओ, कम से कम हैं तीन गिनाओ ॥

94 शुद्धातम की बात बताता, समयसार शुभ ग्रन्थ कहाता ।
किसने और कब रचना की है, शीघ्र बताओ जीत तभी है ॥

95 देखो कितनी है वो सयानी, छुपकर रहती जैसे रानी ।
खुरपा सम आकार है इसका, नाम बताओ उस इन्द्रिय का ॥

96 रूप अनेक हैं देव बनाता, पलक झपकते दूर है जाता ।
पड़ती इसकी कभी न छाया, कौन सा तन है बताओ भाया ॥

97 पर्वत नदी गुफा में वास, चैत्यालय में भी आवास ।
देव कौन से सदा विचरते, नाम से जिनके तुम हो डरते ॥

98 द्रव्य क्षेत्र अरु काल की सीमा, भाव सहित प्रत्यक्ष है कीना ।
ज्ञान कौन सा वह कहलाता, चउगतियों में जीव है पाता ॥

99 देव देखने रूप हैं आये, रूप देखकर मन हर्षाये ।
चक्रवर्ती वे कौन कहावें, तपकर स्वर्ग सम्पदा पावें ॥

100 कुण्डलसा आकार है जिसका,बड़ा अतिशय है वहाँ के जिन का ।
बड़ेबाबा कह सभी पुकारे, कौन वहाँ से मोक्ष पधारे ॥

101 एकेन्द्रिय है पेड़ कहाता, मीठे-मीठे फल का दाता ।
शरीर उसका पर उपकारी, नाम बताओ जीतो पारी ॥

102 मुनि के तन से जिसका नाता, शुभ्र वर्ण है सीधा जाता ।
उस शरीर का नाम बताओ, शंका अपनी सभी मिटाओ ॥

103 भूत पिशाच से भय न खाओ,कभी किसी को तुम न सताओ ।
देव कौन से ये कहलाते, सुन्दर रूप है फिर क्यों डराते ॥

104 मन में स्थित बात है जाने, दूजों की धड़कन पहचाने ।
ज्ञान कौन सा मुनिवर धारे, भेद सहित बतलाओ प्यारे ॥

105 पञ्चम चक्रवर्ती कहलाते, इन्द्र भी जिनको शीश झुकाते ।
चक्रवर्ती का नाम बताओ, पुण्य कमाओ पाप खपाओ ॥

106 पुद्‌गल है इक द्रव्य कहाता, पूरन गलन स्वभाव है पाता ।
इसके दो तुम भेद बताओ, ध्यान लगाकर शीघ्र हटाओ ॥

107 जिन मंदिर है हमको प्यारा, जिन दर्शन ही एक सहारा ।
कितने मंदिर कौन बताए, नगर में अपने आप गिनाए ॥

108 नगर बनारस खुशियाँ छाई, घर - घर देखो बजी बधाई ।
जनमें कौन से हैं तीर्थंकर, पुण्यशाली वे सर्वहितंकर ॥

109 सौधर्मादिक देव कहाते, है विमान में मौज उड़ाते ।
संज्ञा इनकी क्या बतलाओ, पुण्य कमाओ स्वर्ग में जाओ ॥

110 बड़े भाई वे नारायण के, युद्ध कला में पारायण वे ।
महापुरुष हैं वे कहलाये, कौन हैं कितने कुल बतलाये ॥

1 णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

2 अरिहन्त परमेष्ठी - (46)
सिद्ध परमेष्ठी - (8)
आचार्य परमेष्ठी - (36)
उपाध्याय परमेष्ठी - (25)
साधु परमेष्ठी - (28)

3 श्री रविषेण आचार्य

4 ग्रन्थ का नाम - तत्त्वार्थ सूत्र
कुल सूत्र - 357

5 कितना प्यारा - चक्षु इन्द्रिय से (आँख)
कोमल तन - स्पर्शन इन्द्रिय से (स्पर्श)
निराली गंध - घ्राण इन्द्रिय से (नाक)

6 महावीराचार्य

7 सातगौड़ा

8 णमोकारमंत्र भाषा - प्राकृत
छन्द - आर्या
किन्होंने - आ. पुष्पदन्तजी
ग्रन्थ - षट्खण्डागम
काल - द्वितीय शताब्दी

9 परमेष्ठी पाँच होते हैं-
अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु

10 कुल चौबीस तीर्थंकरों के कुल गणधर - 1452 अथवा 1467

11 युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन ने शत्रुंजय (पालिताणा) से मोक्ष प्राप्त किया एवं नकुल व सहदेव सर्वार्थसिद्धि को प्राप्त हुए।

12 अनंग लवण व मदनांकुश अथवा लव-कुश

13 आठवाँ नन्दीश्वर द्वीप
महिमा - 52 अकृत्रिम चैत्यालय, प्रत्येक चैत्यालय में 500 धनुष ऊँची प्रमाण वाली पद्मासन विराजित 108-108 जिनप्रतिमा है।

14 विद्याधर का जन्म स्थान - चिक्कोड़ी
ग्राम सदलगा
जिला - बेलगाम 'कर्नाटक'
कब- अश्विन शुक्ला पूर्णिमा
(शरद पूर्णिमा) वि. सं. 2003
10 अक्टूबर, सन् 1946

15 आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी

16 अकृत्रिम चैत्यालयों की कुल गणना
ऊर्ध्वलोक में- 84, 96, 700
मध्यलोक में- 458
अधोलोक में- 7 करोड़ 72 लाख

17 ओंकार की रचना
अरिहन्त का प्रथम अक्षर -अ
सिद्ध यानि अशरीरी का प्रथम अक्षर-अ
आचार्य का प्रथम अक्षर -आ

उपाध्याय का प्रथम अक्षर -उ
साधु यानि मुनि का प्रथम अक्षर -म
= ओम् = ॐ

18 अष्टद्रव्य के नाम - 1. जल 2. चन्दन 3. अक्षत 4. पुष्प 5. नैवेद्य 5. दीप 7. धूप 8. फल

19 श्री रामचन्द्र जी, तुंगीगिरी (मांगीतुंगी) से मोक्ष पधारे।

20 पाँच गुरुपरम्परा के आचार्य
1. आचार्य श्री शान्तिसागर जी 'दक्षिण'
2. आचार्य श्री वीरसागर जी
3. आचार्य श्री शिवसागर जी
4. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी
5. आचार्य श्री विद्यासागर जी

21 पं. दौलतराम जी

22 साततत्त्व -1. जीव 2. अजीव 3. आस्त्रव 4. बन्ध 5. संवर 6.निर्जरा 7. मोक्ष।

23 रसना इन्द्रिय के पाँच विषय-1. खट्टा 2. मीठा 3. कड़वा 4. चरपरा 5. कषायला

24 माता सुनन्दा की पुत्री -सुन्दरी, भाई बाहुबली
माता नन्दा की पुत्री - ब्राह्मी, भाई भरत आदि सौ
ये ऋषभदेव की पुत्रियाँ एवं पुत्र थे।

25 कुल विस्तार - 45 लाख योजन है।
व्याख्या-ढाईद्वीप एवं दो समुद्र के बाहर मनुष्य नहीं जा सकता। पुष्कर द्वीप के मध्य में मानुषोत्तर पर्वत है।
1. जम्बूद्वीप - 1 लाख योजन
2. लवण समुद्र - 4 लाख योजन
3. धातकी खण्ड - 8 लाख योजन
4. कालोदधि समुद्र - 16 लाख योजन
5. पुष्करार्ध द्वीप - 16 लाख योजन
नोट- यद्यपि पुष्कर द्वीप का कुल विस्तार 32 लाख योजन है। मानुषोत्तर पर्वत से उसके दो भाग किये जाने पर आधे पुष्कर द्वीप का विस्तार 16 लाख योजन कहा।

26 स्पर्शन इन्द्रिय के विषय- 1. हल्का 2. भारी 3. कड़ा 4. नरम 5. रूखा 6. चिकना 7. ठण्डा 8. गरम

27 विदेहक्षेत्र से सदा ही जीव मोक्ष जाते है। जम्बूद्वीप में एक, धातकीखण्ड में दो एवं पुष्करार्ध में दो ऐसे कुल ढाईद्वीप में पाँच विदेह क्षेत्र हैं।

28 पार्श्वप्रभु की आयु-100 वर्ष

29 रचना का नाम - एकीभाव स्तोत्र
मुनिवर का नाम - श्री वादिराज मुनि

30 राजा का नाम - श्रेणिक राजा
क्या होगा - भविष्य काल में महापद्म नाम के प्रथम तीर्थंकर

31 रत्नत्रय की एकता ही मोक्षमार्ग है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र को रत्नत्रय कहते हैं।

32 कर्मों के आगमन हेतु 108 द्वार कहे गये उन्हें रोकने/बन्द करने हेतु।
108- (3)मन, वचन, काय ×(3)कृत, कारित, अनुमोदना × (3)समरंभ, समारंभ, आरंभ ×(4)क्रोध, मान, माया, लोभ 108

प्रकार अथवा 1+0+8 = 9 शाश्वत पद की प्राप्ति हेतु आठ कर्मों को शून्य करने पर एक आत्मा की उपलब्धि हो सके।

33 कुन्दकुन्द आचार्य द्वारा रचित पाँच ग्रन्थ
1. समयसार
2. प्रवचनसार
3. नियमसार
4. पञ्चास्तिकाय
5. अष्टपाहुड।

34 मीठा गाती – कर्ण इन्द्रिय (कान) से
काली काया – चक्षु इन्द्रिय (नेत्र) से

35 हनुमान का दूजा नाम – श्री शैल था।

36 चार गतियाँ –1. नरकगति 2. तिर्यञ्चगति 3. मनुष्यगति 4. देवगति

37 तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव पद के धारी शान्तिनाथ जी, कुन्थुनाथ जी व अरनाथ जी।

38 रचना का नाम – भक्तामर स्तोत्र
छन्द संख्या – 48

39 आठ कर्मों के नाम– 1. ज्ञानावरण 2. दर्शनावरण 3. मोहनीय 4. वेदनीय 5. आयु 6. नाम 7. गोत्र 8. अन्तराय।

40 ग्रन्थ का नाम – तत्त्वार्थ सूत्र
गुरु का नाम – उमास्वामी महाराज

41 पाँच मरण के नाम – 1. बाल–बाल मरण 2. बाल मरण 3. बाल–पण्डित मरण 4. पण्डित मरण 5. पण्डित–पण्डित मरण।

42 पाँच कल्याणक निम्न प्रकार हैं :–
1. गर्भकल्याणक 2. जन्मकल्याणक 3. तपकल्याणक अथवा दीक्षाकल्याणक 4. केवलज्ञानकल्याणक 5. निर्वाण/मोक्ष कल्याणक

43 चौबीस तीर्थंकरों के कुल गणधर 1452 (चौदह सौ बावन)

44 पाँच इन्द्रियों के नाम :–1. स्पर्शन इन्द्रिय (त्वचा) 2. रसना इन्द्रिय (जिव्हा) 3. घ्राण (नासिका) इन्द्रिय 4. चक्षु (नेत्र) इन्द्रिय 5. कर्ण (कान) इन्द्रिय

45 राम आदि चारों भाईयों का जन्म बीसवे मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकर के काल में हुआ था।
विशेष :– मुनिसुव्रत नाथ एवं नमिनाथ के मध्यकाल में।

46 स्वाध्याय का भेद :–धर्मोपदेश

47 एक लाख विस्तार वाला द्वीप :– जम्बूद्वीप

48 कुल मात्रा:–11 (ग्यारह) णमो अरिहन्ताणं (।–एक, ऽ–दो)। 2 11 2 2 2 = 11

49 ऋषभदेव जी, कुल आयु :– 84 चौरासी लाख पूर्व वर्ष

50 एक कल्पकाल में वर्ष होते है :–
कुल–20 कोड़ा–कोड़ी सागर

51 निरन्तर बढ़ने वाला अवधिज्ञान।
वर्द्धमान अवधिज्ञान

52 हनुमान जी के माता–पिता का नाम :– पिता का नाम – श्री पवनञ्जय, माता का नाम – श्रीमति अञ्जना

53 श्री ज्ञानसागर जी का जन्मस्थान :–ग्राम–

राणोली, जिला- सीकर (राजस्थान)

54 णमो सिद्धाणं 1 2 2 2 2 कुल मात्रा-9

55 कषाय मूल में चार प्रकार की हैं एवं उत्तरभेद की अपेक्षा 16 सोलह भी हैं।
1. क्रोध 2. मान 3. माया 4. लोभ
प्रत्येक कषाय के 4-4 भेद करने पर - 16 हो जाते हैं।
1. अनन्तानुबन्धी क्रोधादि-4
2. अप्रत्याख्यान क्रोधादि-4
3. प्रत्याख्यान क्रोधादि-4
4. संज्ज्वलन क्रोधादि-4

56 वरदत्तादि की मोक्षस्थली, सिद्धक्षेत्र - नैनागिरी (रेशिंदीगिरी) अथवा नयनागिरि (छतरपुर जिला)

57 मरणकण्डिका ग्रन्थ के लेखक श्री अमितगति आचार्य (द्वितीय)

58 अन्तिम मुकुटबद्ध राजा दीक्षाधारी- सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य

59 जीव का - केवलज्ञान गुण

60 णमो आइरियाणं- 1 2 2 11 22 = 11 कुल मात्रा

61 सिद्ध भगवान का निवास स्थान- ईषत् प्राग्भार नामक अष्टम् पृथ्वी के ऊपर तनु वातवलय के ऊपरी भाग में।

62 श्री आदिनाथ, श्री वासुपूज्य, श्री नेमीनाथ एवं श्री महावीर भगवान को छोड़कर शेष बीस तीर्थंकर श्री सम्मेद शिखर जी मोक्ष पधारे।

63 पाँच पाप-हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह

64 जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी होते है, वे सच्चे देव कहलाते हैं।

65 जीव का नाम - अभव्य

66 आर्यिका जी का नाम - श्री 105 समयमति जी

67 अञ्जना की सास का नाम - रानी केतुमती
ससुर का नाम - राजा प्रहलाद

68 णमो उवज्झायाणं - कुल मात्रा
12 12 2 2 2 = 12

69 भगवान आदिनाथ एवं नेमीनाथ पद्मासन से एवं शेष 22 तीर्थंकर खड्गासन से मोक्ष पधारे।

70 श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तागिर जी

71 मनुजों (मनुष्यों) का इन्द्र- चक्रवर्ती

72 लौकान्तिक देव

73 मधु व्यसन (शहद खाना)

74 छह खण्ड़ों में - एक आर्यखण्ड व पाँच म्लेच्छ खण्ड होते है।

75 णमो लोए सव्वसाहूणं कुल मात्रा
1 2 21 2 1 222 = 15
प्राकृत भाषा में ए के ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीनों भेद होते हैं।

76 श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र

77 नरकगति

78 देवों के चार भेद है - 1. भवनवासी देव

2. व्यन्तर देव 3. ज्योतिषी देव 4. वैमानिक देव

79 22 नवम्बर 1972 मगसिर कृष्णा 2 वि. सं.-2029 में। आचार्य पद प्रदाता- आचार्य श्री ज्ञानसागर जी

80 लघिमा ऋद्धि अथवा गुण

81 जुआ खेलना

82 वायुकायिक (एकेन्द्रिय) जीव

83 अतिशय क्षेत्र श्री चाँदखेड़ी ''खानपुर''

84 मद्य (मदिरा) पान व्यसन

85 अशुभ तैजस शरीर

86 नेमिनाथ भगवान श्री गिरनार जी से मोक्ष गये।
दूसरा नाम - श्री ऊर्जयन्तगिरि सिद्धक्षेत्र

87 पाँच ज्ञानों में दो सम्यग्ज्ञान हैं।
1. मतिज्ञान 2. श्रुतज्ञान
सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का उपासक सम्यग्दृष्टि होता है, इस विवक्षा से हम अपने आपको सम्यग्दृष्टि मानते हैं।

88 आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज

89 गोमटेश बाहुबली की प्रतिमा सेनापति श्री चामुण्डराय ने सन् 982 में बनवाई थी।

90 शुभ तैजस पुतला

91 ज्योतिष्क देव-सूर्य चन्द्रमा आदि

92 जीव का लक्षण :- उपयोग के दो भेद- 1. ज्ञानोपयोग 2. दर्शनोपयोग

93 समन्तभद्र स्वामी द्वारा रचित ग्रन्थ :-
1. बृहत् स्वयम्भू स्तोत्र
2. रत्नकरण्डक श्रावकाचार
3. युक्त्यानुशासन
4. स्तुति विद्या
5. देवागम स्तोत्र

94 समयसार की रचना -
किसने - आचार्य श्री कुन्दकुन्द महाराज
कब - लगभग 2000 वर्ष पूर्व, वीर निर्वाण-514-601

95 जिह्वा इन्द्रिय (जीभ)

96 वैक्रियिक शरीर

97 व्यन्तर देव

98 अवधिज्ञान

99 सनतकुमार चक्रवर्ती

100 कुण्डलपुर से श्रीधरकेवली मोक्ष पधारे।

101 औदारिक शरीर

102 आहारक शरीर

103 व्यन्तर जाति के देव

104 मन:पर्यय ज्ञान- इसके दो भेद है :-
1. ऋजुमति 2. विपुलमति

105 श्री शान्तिनाथ चक्रवर्ती

106 पुद्गल के दो भेद होते हैं -
1. अणु 2. स्कन्ध

107 अपने-अपने नगर में स्थित जिन मन्दिर की संख्या जैसे गुना में-नौ दिगम्बर जैन मंदिर।

108 1. सुपार्श्वनाथ 2. पार्श्वनाथ

109 वैमानिक देव

110 बलदेव या बलभद्र संख्या- नौ

1 सुन्दर देखो देव की काया, पर नारक की मन न भाया ।
जन्म है इनका कौन सा होता, शीघ्र बता क्यों समय है खोता ॥

2 एक मुहुर्त के भीतर भीतर, मिटती जिसकी काया जीकर ।
उस सम्यक्त्व का नाम बताओ, सम्यग्दृष्टि तुम बन जाओ ॥

3 पारस नाम महासुखदाई, उपसर्गों पर विजय है पाई ।
माता-पिता कौन थे उनके, नाम बताओ भाग्य है चमके ॥

4 उड़े गगन में धूम मचाते, तोता मैना मन को भाते ।
जन्म है इनका कौन-सा होता, शीघ्र बता क्यों समय है खोता ॥

5 समूह कर्मों का कहलाता, कोई न इससे बच है पाता ।
उस शरीर का नाम बताओ, देह त्याग सिद्धी को पाओ ॥

6 मध्यलोक के बीच में पर्वत, नाम सुमेरु देव हैं अर्चत ।
इसकी तुम ऊँचाई बताओ, कितने मन्दिर यहाँ गिनाओ ॥

7 णमोकार शुभ मन्त्र कहाता, पैंतीस अक्षर की है गाथा ।
सोलह अक्षर का मन्त्र बताओ,नित जप कर तुम कर्म खपाओ ॥

8 मध्यम पाण्डव अर्जुन भाई, कीरत सबमें ज्यादा पाई ।
मुनि बने और मुक्ति पाई, सिद्ध क्षेत्र बतालाओ भाई ॥

9 बाहुबली देखो बलशाली, सभी युद्ध में विजय है पा ली ।
उनकी माँ का नाम बताओ,आदिनाथ को शीश झुकाओ ॥

10 चेतन की पहचान करावे, समयसार वह ग्रन्थ कहावे ।
कितनी गाथा कौन बताए, सही बताकर इनाम पाए ॥

11 मरना सबको इक दिन पड़ता, मरण से वो तो कभी न डरता ।
सम्यग्दृष्टि व्रत को धारे, अन्त समय में नाम उचारे ॥

12 जिन की वाणी है जिनवाणी, पार हुआ है जिसने मानी ।
चार भेद हैं आप बताओ, अनुयोगों को उर में लाओ ॥

13 अणुव्रत ब्रह्मचर्य की महिमा, देवों से भी जाय कही ना ।
मुनिव्रत सेठ सुदर्शन धारे, कहो कहाँ से मोक्ष पधारे ॥

14 जिनेन्द्रवर्णी ने संजोया, जैनधर्म का जिसमें खोया (खोबा) ।
मूल ग्रन्थ का नाम बताओ, मधुर जैनगीता भी गाओ॥

15 तीर्थंकर चौबीस हमारे, तीन लोक में मात्र सहारे ।
रची गयी रचना तो बताओ, समन्तभद्र को शीश नवाओ ॥

16 परनारी को हरकर लाया, मन्दोदरी ने था समझाया ।
मात - पिता कौन थे उसके, नाम बताओ दशआनन के ॥

17 है भक्तामर रचना प्यारी, भुक्ति मुक्ति की है तैयारी ।
गाते हैं किस छन्द में इसको,नाम बताओ पता हो जिसको ॥

18 अरिहन्तों की अद्‌भुत काया, खून पीव न पड़ती छाया।
कैसी काया की है माया, नाम बता काया का भाया॥

19 एक बार बस पढ़ा सुना हो, कभी न भूले यदि छुआ हो ।
उन आचार्य का नाम बताओ, जैन धर्म की शान बढ़ाओ ॥

20 तीर्थंकर अन्तिम कहलाते, चेतन सुख कैसा बतलाते ।
कौन से शुभ दिन मोक्ष पधारे, तिथि बताओ बंधु हमारे ॥

21 राम लखन ने कीरत पाई, सब मिल जय-जयकार लगाई ।
तीर्थंकर के काल में जन्में, कौन से आप बताए क्षण में ॥

22 भक्ति रस से भरी है रचना, भक्तामर पढ़ पाप से बचना ।
कितनी सदियों पहले लिक्खा, सही बताओ मिलती शिक्षा ॥

23 अन्तिम केवली जम्बूस्वामी, मात पिता की बात न मानी ।
पच्चीस वर्ष में दीक्षा धारे, कहो कहाँ से मोक्ष पधारे ॥

24 षट्खण्डागम जी दुख का हरता, पुष्पदन्त भूतबली जी करता ।
पहले का है नाम बताओ, युगल मुनि को शीश नवाओ ॥

25 भद्रबाहु स्वामि श्रुतधारी, शीश झुकाए जनता सारी ।
देह कहाँ पर त्यागी गुरुवर, कौन बताए सुख का सरवर ॥

26 षट् द्रव्यों का कथन है जिसमें, द्रव्यसंग्रह नाम है जगमें ।
कितनी गाथा कौन बताएं, गणना बताकर इनाम पाएं ॥

27 चेतना जिसमें पाई जाती, जीव की संज्ञा वस्तु पाती ।
भेद जीव के हैं बतलाओ, भेद बताकर इनाम पाओ ॥

28 पूज्यपाद मुनि ने है लिक्खा, इष्टोपदेश शुभ नाम है रक्खा ।
कुल श्लोक है कितने इसमें, सही बताओ ज्ञात हो क्षण में ॥

29 अष्टकर्म को किया है नाश, रही न जिनको कुछ भी आश ।
परमेष्ठी वे कौन कहाते, बीच हमारे कभी न आते ॥

30 झूठी है संसार की माया, युद्ध क्षेत्र में समझ है आया ।
गज पर ही कचलोंच है कीना,राजा कौन सा कहो नवीना ॥

31 चतुर्दशी को हिंसा त्यागा, लोभ था पत्नि के मन जागा ।
देवों ने की उसकी रक्षा, नाम बताओ बच्चो सच्चा ॥

32 पक्ष जिन्होंने धर्म का रक्खा, विद्याधर था नियम का पक्का ।
लंका का था राज्य वो पाया, कौन वीर था बताओ भाया ॥

33 बार-बार मरकर भी जनमता, लाख चौरासी योनि भटकता ।
इनको पृथक् पृथक् गिनवाओ,सिद्ध बनो फिर लौट न आओ ॥

34 कभी जिन्होंने वस्त्र न पहने, और कभी न पहने गहने ।
उन आचार्य का नाम बताओ,जयकारा मिल जोर लगाओ ॥

35 तन धन वतन है सब कुछ त्यागा, पड़े न सुख का कभी भी नागा ।
तीन लोक में कहाँ विराजे, सुख वो भोगे निशदिन ताजे ॥

36 दूध समान खून है जिनका, समचतुस्त्र संस्थान है तन का ।
अतिशय किनका कौन-सा भईया, हम सब मिलकर पड़ते पँईया ॥

37 सती अंजना कर्म की मारी, बजरंगी की वो महतारी ।
पिता का उसके नाम बताओ, सही बताकर इनाम पाओ ॥

38 दक्षिण में गुरुकुल है बनाया, हम सबका है भाग्य जगाया ।
समन्तभद्र जी पूज्य हैं मुनिवर, कौन थे उनके दीक्षा गुरुवर ॥

39 न नाखून न बाल है बढ़ता, भोजन पान से काम न पड़ता ।
अतिशय कब है ऐसा होता, कर्म घातिया कौन है खोता ॥

40 रावण का था मान गलाया, मंदिर की रक्षा है कराया ।
मुनिवर कौन अतुल बलशाली, कर्म काट मुक्ति है पाली ॥

41 जीता मरता जीव अकेला, संग में चलता गुरु न चेला ।
भावना कौन सी है कहलाती, मोह भाव को दूर भगाती ॥

42 तन गत चेतन सबसे प्यारा, वहाँ करो तुम नित संचारा ।
नारी को तुम सदा है त्यागो, धर्म कौन सा अब तुम जागो ॥

43 आम जाम केला नारंगी,कहीं कभी भी पड़े न तंगी ।
एक साथ सब फल है लगते, प्रभु हैं अतिशय कौन सा कहते ॥

44 देखो कर्म की गति निराली, सासू ने उसे घर से निकाली ।
पूर्व कर्म का फल है पाया, नाम सती का बताओ भाया ॥

45 जन्म मरण यह जीव है करता, चहु गतियों में दुख ही भरता ।
भावना कौन सी है कहलाती, मोक्षमार्ग में प्रीत जगाती ॥

46 मन न भाता कभी न साता, मुझसे छूटे इसका नाता ।
रात दिवस ही चिन्तन करता, ध्यान कौन सा दुख में धरता ॥

47 श्वेताम्बर से बने दिगम्बर, पूज्य सभी के सच्चे गुरुवर ।
मानतुंग मुनि वे कहलाये, स्वर्ग कहाँ से थे पधराये ॥

48 टन-टन-टन है घण्टा बजता, सुन्दर-सुन्दर मण्डप सजता ।
है अरिहन्त का कौन सा अतिशय, तीर्थंकर की हो नित जय जय ॥

49 कुम्भकर्ण अरु रावण भाई, बात न उनकी है बन पाई ।
बहिन का उनकी नाम बताओ, भाई विभीषण भूल न जाओ ॥

50 मल मूत्रों का बना पिटारा, दुर्जन जैसा तन का सहारा ।
भावना कौन सी है कहलाती, है वैराग्य भाव उपजाती ॥

51 णमोकार शुभ मन्त्र कहाता, पैंतीस अक्षर की है गाथा ।
छः अक्षर का मन्त्र बताओ, नित जप कर तुम कर्म खपाओ ॥

52 पद्मपुराण है ग्रन्थ निराला, ग्रन्थ पढ़ा हो तो बतलाना ।
कुम्भ कर्ण रावण का भाई, मुक्ति कहाँ से उनने पाई ॥

53 कठिन है मिलना मानव काया, फिर मिलना है धर्म की छाया ।
भावना कौन सी है कहलाती, सफल करो जीवन बतलाती ॥

54 आहारौषध वा आहारा, अभयदान का करो विचारा ।
धर्म कौन सा हमें बताता, उभयलोक में सुख दिलवाता ॥

55 स्वर्ग नरक की रचना सारी, नर तिर्यञ्च करे संचारी ।
भावना कौन सी है कहलाती, सिद्धशिला की याद दिलाती ॥

56 तन जर्जर उपसर्ग हुआ हो, अतिभयंकर रोग छुआ हो ।
काय कषाय को कृश है कराना, व्रत है कौन सा हमें बताना ॥

57 शत्रु भरा हो क्रोध भाव से, असभ्य बोले बहुत ताव से ।
मारे पीटे सब कुछ सहना, धर्म कौन सा अपना गहना ॥

58 क्षत्रिय राजपुत्र कहलाता, पर चोरी का काम था भाता ।
दृढ़ श्रद्धालु कौन सा भाई, णमोकार पढ़ सिद्धी पाई ॥

59 सात भूमि में कहीं न साता, दुख ही दुख मिलता है भ्राता ।
अष्टम्भूमि का नाम बताओ, प्राप्त करो तो सुख पा जाओ ॥

60 उदय असाता का जब आता, सबसे टूटे अपना नाता ।
वर था कौन अंजनासती का, मित्र कौन था उसके जी का ॥

61 जिनवर की भक्ति है करना, अष्ट द्रव्य से थाल है भरना ।
आवश्यक है क्या कहलाता, पाप नशाता पुण्य को लाता ॥

62 खट्टा मीठा ज्ञान कराती, कभी हवा न वह चख पाती ।
कौन सी इंद्रिय नाम बताओ, पाँच जीव का ज्ञान कराओ ॥

63 कल्याण मंदिर पाठ निराला, पार्श्वनाथ का हमें सहारा ।
किसने यह स्तोत्र है गाया, कौन बताए हमको भाया ॥

64 पाँच महाव्रत के हैं धारी, पच्चीस मूलगुण के अधिकारी ।
परमेष्ठी वे कौन कहाते, सत्य असत्य का ज्ञान कराते ॥

65 कभी भेद है वो न करता, एक साथ है सबको धरता ।
कौन सा नय है वह कहलाता, संघ में शक्ति है बतलाता ॥

66 ठंड लगे तन कप-कप कपता, अरु गर्मी में खूब है तपता ।
कैसे अनुभव हमको होता, है आतम का चिह्न ना खोता ॥

67 चार घातिया कर्म नशाया, प्रभु ने केवलज्ञान है पाया ।
नाम घातिया के बतलाए, अरिहन्त प्रभु जयकार लगाए ॥

68 चम-चम चमके चन्द्र गगन में, अरु जुगनु भी चमके नभ में ।
नाम कर्म है कौन सा पाया, सही बताओ मन को भाया ॥

69 तन का मोह महादुखदायी, निज चेतन ही एक सहायी ।
व्रत उपवास किये थे कितने, शान्तिसागराचार्य गुरु ने ॥

70 अहमिन्द्रों की कथा निराली, मुनि बन जिनने पदवी पाली ।
रहते हैं सब इन्द्र कहाँ पर, कौन बताएं यहाँ पे आकर ॥

71 कोयल मीठा सुन्दर गाती, बात गधे की रास न आती ।
ऐसा फर्क है कैसे आया, कौन कर्म का फल है भाया ॥

72 राम की पत्नि सीता रानी, रावण से भी हार न मानी ।
कितने दिन संन्यास को धारा, स्वर्ग सौख्य का मिले सहारा ॥

73 धर्म चक्र को जिनने धारा, तीर्थंकर पद भव दुख हारा ।
एक साथ है कितने होते, कहाँ-कहाँ सुख बीज वे बोते ॥

74 हिंसा झूठ व चोरी करना, जोड़-जोड़ धन को है रखना ।
ध्यान कौन सा है कहलाता, दुर्गतियों में जो ले जाता ॥

75 मन वा इंद्रिय में न फंसना, वध से जीवों के है बचना ।
बंधन भी मुक्ति का कारण, धर्म कौन सा दुख का वारण ॥

76 तीर्थंकर पद है दिलवाती, भव-भव की बाधा मिटवाती ।
भावना कौन सी है कहलाती, घर में भी शोभा है पाती ॥

77 मिले संपदा वैभव भारी, तप से की है मैने यारी ।
ध्यान कौन सा वह कहलाता, घाटे का सौदा बतलाता ॥

78 देखो सुन्दर रूप है मेरा, धन बल कुल का एक ही डेरा ।
यह अभिमान कभी न करता, धर्म कौन सा चेतन धरता ॥

79 कृष्ण कन्हैया थे नारायण, सभी कलाओं में पारायण ।
मात-पिता का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ ॥

80 राजा दशरथ की वो दुलारी, सर्व कला कौशल युत नारी ।
पिता का उसके नाम बताओ, पर माता को भूल न जाओ ॥

81 जिनवर मुखरित आगम वाणी, तत्त्व द्रव्य पर्याय कहानी ।
भेद कौन सा चिन्तन करना, धर्मध्यान श्रद्धा उर धरना ॥

82 दोष लगे हो यदि व्रतों में, चलते-फिरते और छलों में ।
आवश्यक वह दूर है करता, नाम बताओ सुख में धरता ॥

83 कुण्डलपुर में बजी बधाई, जन-जन में खुशियाँ हैं छाई ।
मात-पिता का नाम बताओ, वीर प्रभु को शीश नवाओ ॥

84 श्रमण पूज्य है परम दिगम्बर, रखते जो न कुछ आडम्बर ।
सात नाम मुनिवर के बताएं, विद्यागुरु से जो दीक्षा पाएं ॥

85 पाप उदय से दुखमय बनता, सुखमय पुण्य से भारी जनता ।
भेद कौन सा चिन्तन करना, धर्मध्यान कर पाप से डरना ॥

86 मुनिवर की चर्या की चर्चा, द्वादशांग की कर ले अर्चा ।
अंग कौन सा हमें बताना, मुनि बन के कर्मों को भगाना ॥

87 बीच सरोवर ध्यान लगाया, मुक्ति को उनने है पाया ।
सिद्ध क्षेत्र है कहो कहाँ पर, शासन नायक हैं तीर्थंकर ॥

88 रक्त रहित हैं सुन्दर काया, चम-चम चमके देव की माया ।
कम ज्यादा तुम उम्र बताओ, जाना हो तो पुण्य कमाओ ॥

89 अपना प्यारा दूर हुआ हो, मिले न जब तक क्लेश हुआ हो ।
भेद कौन सा आर्तध्यान का, दुखमय जीवन बने शान का ॥

90 तीर्थंकर अंतिम कहलाते, स्वर्णमयी काया है पाते ।
कितनी ऊँची काया भाई, जग में होती सदा बढ़ाई ॥

91 राजा राम अरु सीता रानी, पद्मपुराण में इनकी कहानी ।
दूजा नाम है कौन बताए, प्राण जाए पर वचन निभाए ॥

92 पर्वों में वो पर्वराज है, दशलक्षण पर हमें नाज है ।
कब और कितने बार मनाते, सब मिलकर जयकार लगाते ॥

93 मूल में ठंडा किरण गरम हो, सूर्य विमान काअपना धरम हो।
धर्म कौन सा है कहलाता, जिसका यह फल जीव है पाता ॥

94 छटवे पद्मप्रभ जी स्वामी, धारण पिता सुशीला नामी ।
जन्मभूमि का नाम बताओ, शीश झुकाकर पुण्य कमाओ ॥

95 रुचि तत्त्व में सदा ही रखना, देव शास्त्र गुरु शीश है धरना ।
जीव का कौन-सा गुण कहलाता, मोक्षमार्ग का मूल कहाता ॥

96 सर्वांग सुन्दरी सीता रानी, रामचन्द्र की वो पटरानी ।
पिता के उनका नाम बताओ, कहाँ के राजा थे बतलाओ ॥

97 आपस में जो प्रीत न करते, नरकगति में तन को धरते ।
विक्रिया कैसे इनकी होती, शीघ्र बता क्यों समय को खोती ॥

98 द्रव्य भाव अरु नो कर्मों से, रहित सिद्ध है युत धर्मों से ।
तीन लोक में कहाँ विराजे, सुख अनुभवते ताजे - ताजे ॥

99 दिव्यशक्ति है प्रकटित होती, केवलज्ञान की मिलती ज्योति ।
बीजाक्षर का ज्ञान कराओ, ध्यान लगाकर कर्म खपाओ ॥

100 बाहर ग्राम गली से न जाना, भीतर-भीतर ही धन पाना ।
व्रत ये कौन-सा है कहलाता, संतोषी है हमें बनाता ॥

101 णमोकार शुभ मन्त्र कहाता, पैंतीस अक्षर की है गाथा ।
अक्षर पाँच का मन्त्र बताओ, नितजप कर तुम कर्म खपाओ ॥

102 सुबह शाम नित वंदन करना, आत्मध्यान कर तीर्थ की शरणा ।
शिक्षाव्रत है कौन कहलाता, छोड़ परिग्रह सबसे नाता ॥

103 देवों ने जयकार लगाई, नगर कम्पिला बजी बधाई ।
तीर्थंकर है कौन से जन्में, नाम बताओ सोच के क्षण में ॥

104 एक हाथ की सुन्दर काया, पास नहीं है जिनके माया ।
देव कौन से वे कहलाते, अगले भव में मुक्ति पाते ॥

105 चार मास अरु दो व तीन में, व्रत पालन में नर प्रवीण वे ।
मुनिवर आठ बीस गुणधारी, गुण का नाम बताओ भारी ॥

106 सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्रादि, तारागण न जिनकी आदि ।
चन्द्र का कुल परिवार बताओ, कितनी संख्या हमें गिनाओ ॥

107 तीर्थंकर हैं आदि कहाते, ऋषभदेव जयकार लगाते ।
कितनी आयु उनने पाई, सही सही बतलाओ भाई ॥

108 लघु सम्मेदशिखर कहलाता, मध्यप्रदेश की शान बढ़ाता ।
तीर्थ कौन सा सबको भाता, सिद्ध जिनों को शीश नवाता ॥

109 आर्या ऐलक क्षुल्लक श्रावक, जिनशासन के वे आराधक ।
गुणस्थान है कौन सा उनका, सत्य बताओ भेष है जिनका ॥

110 जल सिंचन अरु घास तोड़ना, बिना प्रयोजन पाप जोड़ना ।
कौन सा गुणव्रत है कहलाता, इसे त्याग कर बनो प्रमाता ॥

1 उपपाद जन्म

2 उपशम सम्यग्दर्शन

3 पिता का नाम-विश्वसेन (अश्वसेन)
माता का नाम - ब्राह्मीदेवी (वामादेवी)

4 गर्भ जन्म का भेद - अण्डज

5 कार्मण शरीर

6 सुमेरु पर्वत की ऊँचाई-1 लाख 40 योजन
कुल मन्दिर - 16
भद्रशाल वन, सौमनस वन, नन्दन वन एवं पाण्डुक वन प्रत्येक में 4-4 चैत्यालय

7 सोलह अक्षर का मन्त्र -
अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः ।

8 अर्जुन ने मोक्ष प्राप्त किया -
शत्रुंजय 'पालिताणा'

9 सुनन्दा

10 समयसार में कुल गाथाएं - 415

11 समाधि-मरण (सल्लेखना व्रत)

12 चार अनुयोग -
1. प्रथमानुयोग
2. करणानुयोग
3. चरणानुयोग
4. द्रव्यानुयोग

13 गुलजार बाग (पटना)

14 समणसुत्तं

15 बृहत् स्वयंभू स्तोत्र एवं स्तुति विद्या

16 पिता-रत्नश्रवा एवं माता- कैकसी

17 बसन्ततिलका छन्द

18 परम औदारिक काया

19 आचार्य अकलंक देव

20 भगवान महावीर कार्तिक अमावश्या के दिन मोक्ष गये।

21 बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जी के शासन काल में

22 सातवी शताब्दी (1300 वर्ष पूर्व)

23 मथुरा 'चौरासी' से

24 पूर्व का नाम -
1. श्री पुष्पदन्त जी- सुबुद्धिसागर
2. श्री भूतबली जी- नरबाहन

25 चन्द्रगिरि पर्वत (श्रवणबेलगोला)

26 58 गाथाएँ

27 जीव के दो भेद हैं-
1. मुक्त जीव 2. संसारी जीव

28 इष्टोपदेश ग्रन्थ में कुल श्लोक -51

29 श्री सिद्ध परमेष्ठी

30 राजा मधु

31 यमपाल चाण्डाल

32 रावण का भाई विभीषण

33 चौरासी लाख योनि-
पृथ्वीकायिक, जलकायिक, वायुकायिक, अग्निकायिक, नित्य निगोद, इतर निगोद प्रत्येक की 7-7 लाख, = कुल 42 लाख
प्रत्येक वनस्पतिकायिक = 10 लाख
दो, तीन, चार प्रत्येक 2-2 = 6 लाख
मनुष्य = 14 लाख
नारकी, पशु एवं देव में 4-4= 12 लाख

34 आचार्य जिनसेन स्वामी

35 सिद्ध परमेष्ठी लोक के अग्रभाग पर तनुवात वलय में विराजित रहते हैं।

36 तीर्थंकर भगवान के जन्म का अतिशय

37 राजा महेन्द्र

38 आचार्य शान्तिसागर जी के गृहस्थावस्था के बड़े भाई मुनि वर्द्धमानसागर जी
39 केवलज्ञान होने पर अरिहन्त प्रभु का अतिशय
40 बालिमुनि
41 एकत्व भावना
42 उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म
43 तीर्थंकर प्रभु का - देवकृत अतिशय
44 अञ्जना सती
45 संसार भावना
46 अनिष्ट संयोगज आर्तध्यान
47 भोजपुर "भोपाल"
48 देवकृत अतिशय
49 चन्द्रनखा
50 अशुचि भावना
51 छह अक्षर का मन्त्र :-
अरहंतसिद्ध या अरहंतसाधु
52 चूलगिरि 'बावनगजा' बड़वानी (म.प्र.)
53 बोधि दुर्लभ भावना
54 उत्तम त्याग धर्म
55 लोक भावना
56 सल्लेखना व्रत
57 उत्तमक्षमा धर्म
58 अञ्जनचोर
59 ईषत् प्राग्भार नाम की अष्टम् वसुधा है।
60 अंजना सती का वर -
पवनंजय और उसका मित्र प्रहस्त
61 देवपूजा आवश्यक
62 दूसरी रसना इन्द्रिय, दो इन्द्रिय जीव- 1. लट 2. शंख 3. सीप 4. केचुआ 5. कृमि
63 कुमुदचन्द्र आचार्य
64 उपाध्याय परमेष्ठी
65 संग्रह नय
66 स्पर्शन इन्द्रिय से
67 घातिया कर्म के नाम :-
1. ज्ञानावरण 2. दर्शनावरण 3. मोहनीय 4. अन्तराय
68 उद्योत नाम कर्म
69 आचार्य श्री शान्तिसागर जी ने 35 वर्ष के मुनि जीवन में 27 वर्ष 2 माह 23 दिन अर्थात् 9938 उपवास किए थे।
70 अहमिन्द्रों का निवास :- उर्ध्वलोक में 16 स्वर्गों के ऊपर स्थित नौ ग्रैवेयक, नौ अनुदिश एवं पाँच अनुत्तर विमानों में होता है।
71 सुस्वर एवं दुस्वर नाम कर्म के उदय से
72 सीता जी ने बासठ वर्ष तप किया एवं तैतीस दिन की आयु शेष रहने पर अनशन व्रत धारण कर सल्लेखना अंगीकार की।
73 एक साथ 170 तीर्थंकर हो सकते हैं :-
एक विदेह में 32 अत: 5 में 32×5 = 160, पाँच भरत एवं पाँच ऐरावत में 1-1 अत: = 10
74 परिग्रह संरक्षणानन्दी रौद्रध्यान
75 उत्तमसंयमधर्म
76 सोलहकारणभावना
77 निदानध्यान
78 उत्तममार्दवधर्म
79 कृष्ण जी के पिता वसुदेव, माता देवकी
80 दशरथ की रानी-कैकेय। कैकय के पिता का नाम-राजा शुभमति, माता-पृथु श्री
81 आज्ञाविचय धर्म्यध्यान

82 प्रतिक्रमण आवश्यक
83 वीर प्रभु के पिता - श्री सिद्धार्थ जी
वीर प्रभु की माता - श्री त्रिशला रानी
84 आचार्य विद्यासागर जी महाराज द्वारा दीक्षित मुनि :-
1. श्री समयसागर जी
2. श्री योगसागर जी
3. श्री नियमसागर जी
4. श्री क्षमासागर जी
5. श्री सुधासागर जी
6. श्री सरलसागर जी
7.श्री समतासागर जी
8.श्री स्वभावसागर जी
9. श्री आर्जवसागर जी
10. श्री प्रमाणसागर जी।
85 विपाक विचय धर्मध्यान
86 पहला आचारांग
87 भगवान महावीर-पावापुर सिद्धक्षेत्र (बिहार)
88 कम से कम 10 हजार वर्ष एवं अधिकतम 33 सागर
89 इष्टवियोगज आर्तध्यान
90 भगवान महावीर की ऊँचाई 7 हाथ
91 श्रीराम-श्री पद्म एवं सीता का जानकी
92 पयुर्षण पर्व साल में तीन बार मनाते हैं-:
1. माघ मास 2. चैत्र मास 3. भाद्र मास
93 आतप नाम कर्म
94 जन्म नगरी - कौशाम्बी
95 सम्यग्दर्शन
96 मिथिला पुरी के राजा जनक सीता रानी के पिता थे।
97 नरकगति में नारकी जीव अपृथक् विक्रिया करते हैं। अर्थात् स्वयं अपने शरीर को ही अस्त्र-शस्त्र बनाते हैं।
98 तीन लोक के शिखर पर अन्तिम तनुवात वलय में सिद्ध परमेष्ठी का निवास है, सभी के मस्तक प्रदेश अन्तिम छोर को स्पर्श करते हैं।
99 ॐ, ह्रीं, श्रीं, क्लीं, अर्हं, ऐं आदि बीजाक्षर कहे जाते हैं।
100 देशव्रत नाम वाला गुणव्रत
101 पाँच अक्षर का मन्त्र :- असिआउसा / नमः सिद्धेभ्यः
102 सामायिक नाम वाला शिक्षाव्रत
103 कम्पिलाजी में श्री विमलनाथ जी (तेरहवें) तीर्थंकर जन्में।
104 सर्वार्थसिद्धि नामक अनुत्तर विमान के देव।
105 केशलोंच नामक मूलगुण
106 एक चन्द्रमा के परिवार में कुल-1 सूर्य, 28 नक्षत्र, 88 ग्रह एवं 66975 कोड़ा-कोडी तारे होते हैं।
107 ऋषभदेव की आयु - 84 लाख पूर्व
108 श्री द्रोणगिरि जी सिद्धक्षेत्र
109 आर्या एवं उत्कृष्ट श्रावक का पाँचवा संयमासंयम गुणस्थान होता है। (देशविरत)
110 अनर्थदण्ड विरति नामक गुणव्रत

1 मिथिला नगरी में है जनमें, देव ले गया भाई को वन में ।
भाई-बहन का नाम बताना, युगल जन्म है जिनका जाना ॥

2 कुटिल भाव है विष का प्याला, खुले न इससे सुख का ताला ।
बालक सम है भाव बनाना, धर्म कौन सा है समझाना ॥

3 ज्ञात नहीं हो जीव कहाँ पर, खोजो उनको यहाँ वहाँ पर ।
है मार्गणा कितनी होती, सत्य बताओ पढ़ी हो पोथी ॥

4 ज्ञान समान न सुख का कारण, किन्तु कर्म है करता वारण ।
कर्म कौन सा है कहलाता, अज्ञानी है हमें बनाता ॥

5 लोभ पाप का बाप बखाना, इसके चक्कर में न आना ।
संतोष भाव ही श्रेष्ठ कहाता, धर्म कौन सा है बतलाता ॥

6 सुख दुख पाता कर्म का मारा, पराधीन क्षणभंगुर सारा ।
कर्म कौन सा तुम बतलाना, शाश्वत सुख को फिर है पाना ॥

7 काम अधूरा कहता पूरा, भूत भावी की बात न भूला ।
कौन सा नय है वह कहलाता, द्रव्य प्रयोजन आगम गाता ॥

8 बहुत विशाल है जिसकी काया, महामत्स्य है वह कहलाया।
कुल विस्तार है हमें बतलाना, उसे खोजने कहाँ है जाना ॥

9 मनुष्यगति में सुख दुख पाता, कर्म काटता मोक्ष है जाता ।
जन्म कौन सा मनुज का होता, जन्म मरण फिर क्यों न खोता ॥

10 मन चाहा जो रूप बनाया, तरह-तरह धर कर दिखलाया ।
ऋद्धि कौन सी वह कहलाती, देवों की महिमा बतलाती ॥

11 देखो सती वो सीतारानी, अग्निपरीक्षा भय ना मानी ।
किस आर्यिका से दीक्षा लीना, नाम बताओ सही सही ना ।

12 आदि दिगम्बर हैं कहलाया, गिरनारी पर ध्वज ल्हराया ।
उन आचार्य का नाम बताएं, देवी अम्बिका भूल न जाए ॥

13 जिन वच में शंका ना धारे, दृढ़ श्रद्धाधर बने सहारे ।
अंग कौन सा है कहलाता, समदृष्टि है हमें बनाता ॥

14 मुनि सात सौ आतम ज्ञानी, बैरी ने उपसर्ग की ठानी ।
किया दूर उपसर्ग है किसने, नमूँ अकम्पन आदि मुनि में ॥

15 युग के तीर्थ पुरुष कहलाते, देव-देवी सब शीश झुकाते ।
नगर द्वारिका हमें है जाना, तीर्थ प्रभु का नाम बताना॥

16 ज्यों सरवर में पानी आता, ज्ञानी को वह कभी न भाता ।
आस्रव के दो भेद बताए, नाम बताकर इनाम पाए ॥

17 चलते - चलते यदि गिरा हो, दूषित शिवपथ यदि हुआ हो ।
उसे उठाना फिर चलवाना, अंग कौन सा हमें बताना ॥

18 शान्ति भक्ति का पाठ रचाया, नयनों की ज्योति प्रगटाया ।
उन आचार्य का नाम बताओ, अपना जीवन सफल बनाओ ॥

19 कर्म उदय में है जब आता, जीव तभी है सुख दुख पाता ।
भाव कौन सा आप बताए, पाप त्याग मुक्ति पा जाए ॥

20 देव देवियाँ नित ही आकर, वंदन नर्तन करते जहाँ पर ।
महिमा जिनशासन की बढ़ाते, क्षेत्र कौन सा शीश झुकाते ॥

21 जीवादिक है तत्त्व कहाते, संख्या उनकी सात बताते ।
कैसे उनको हम पहचाने, दो भेद तो सब ही जाने ॥

22 अतिशय करते देव जहाँ पर, पुण्य भूमि विख्यात धरा पर ।
अतिशय क्षेत्र के नाम बताओ, च अक्षर से हमें गिनाओ ॥

23 देव-देवी तिर्यञ्च जहाँ पर, और मनुज की शोभा वहाँ पर ।
तीर्थंकर है बीच विराजे, नाम सभा का बताओ राजे ॥

24 चउकर भूमि देख के चलना, इधर-उधर दृग कभी न करना।
मूलगुण कौन सा है कहलाता, मुनिवर को है पूज्य बनाता ॥

25 अच्छे बुरे हैं भाव हमारे, मोह - योग के बने सहारे ।
गुणस्थान हैं कितने होते, कुल बतलाओ अब क्यों सोते ॥

26 कौन है अपना कौन पराया, भेद अभी तक जान न पाया ।
है मदिरा सम जिसकी सृष्टि, कर्म कौन सा बताओ दृष्टि ॥

27 फूल सुगंधित मन को भाता, शंख जीव जो सूंघ न पाता ।
कौन सी इंद्रिय कौन बताएं, पाँच जीव के नाम गिनाएं ॥

28 जिनवाणी भवतारक नैय्या, हम बालक हैं तुम हो मैय्या ।
ग्रन्थों के तुम नाम बताओ, 'क' अक्षर से शुरु कराओ ॥

29 जन्म जहाँ पर मोक्ष वहाँ पर, दीक्षा धारी कौन धरा पर ।
तीर्थंकर की पदवी धारे, कामदेव भी जिनसे हारे ॥

30 हित मित प्रिय है वाणी बोले, जिनवाणी का राज वे खोले ।
मूलगुण कौन सा है कहलाता, मुनिवर को मैं शीश नवाता ॥

31 छोड़ के ना जा सकते बेटा, अभी भरा ना मेरा पेटा ।
साँकल सम है जिसका बंधन, कर्म कौन सा बताओ नंदन ॥

32 तन को ही चेतन जो माने, मोटा पतला सुन्दर जाने ।
कौन सा आतम है कहलाता, मोक्ष मार्ग से तोड़े नाता ॥

33 अंगारा सम क्रोध कहाता, निज पर दोनों को है जलाता ।
भेद कौन से चार बताओ, क्रोध त्याग ज्ञानी बन जाओ ॥

34 उछल कूद है दिन भर करता, घास फूस खा पेट है भरता ।
मृग है सुन्दर मन को भाता, जन्म कौन सा है वो पाता ॥

35 अणुव्रत व गुणव्रत के धारी, शिक्षाव्रत धर पाप निवारी ।
कौन सी प्रतिमा है कहलाती, नाम बताओ मिलती ख्याती ॥

36 सर्प चिह्न है जिनने धारा, संगम देव भी जिनसे हारा ।
पार्श्व प्रभु की उम्र बताओ, कर्म नाश मुक्ति पा जाओ ॥

37 देखो कैसा रूप है पाया, सोने जैसी चमके काया ।
कौन सी इन्द्रिय ज्ञान कराए, पाँच जीव के नाम बताए ॥

38 णमोकार शुभ मन्त्र कहाता, पढ़े सुने जो सुख वो पाता ।
किसने हैं णमोकार सुनाया, मरकर कुत्ता स्वर्ग में जाया ॥

39 मेरा तेरा करता मरता, कर्म बन्ध से कभी न डरता ।
चार बन्ध हैं हमें बताए, कौन से कैसे फल समझाए ॥

40 भारी अपने तन को बनाया, कोई भी फिर हिला ना पाया ।
मिलकर चाहे सभी उठाये, ऋद्धि कौन सी है कहलाये ॥

41 क्षुल्लक ऐलक पद है धरना, घर गृहस्थी के काम ना करना ।
उत्तम श्रावक वे कहलाते, प्रतिमा कौन सी कर्म खपाते ॥

42 शान्तिनाथ शान्ति के कर्त्ता, पाप ताप सब दुख के हर्ता ।
जन्म कहाँ पर प्रभु ने पाया, शीघ्र बताओ मेरे भाया ॥

43 वरदत्तादिक मोक्ष पधारे, पार्श्व सभा में जहाँ विराजे ।
सिद्ध क्षेत्र का नाम बताएं, नाम बताकर इनाम पाएं ॥

44 दृढ़ श्रद्धा धर शीश नवाया, पिण्डी से प्रभु को प्रगटाया ।
चन्द्रप्रभु को शीश झुकाओ, उन मुनिवर का नाम बताओ ॥

45 छोटे बड़े कुल में पहुँचाता, चेतन से क्या इसका नाता ।
कुम्हार सम है इसकी माया, कर्म कौन सा बताओ भाया ॥

46 कृष्ण वर्ण पर सुन्दर काया, देखो अद्भुत पुण्य की माया ।
तीर्थंकर के नाम बताओ, पुण्य कमाकर इनाम पाओ ॥

47 भव-भव में जो संग हैं जाते, जिससे छूटे कभी ना नाते ।
पाते जीव सभी संसारी, काया ना सिद्धों को प्यारी ॥

48 देना लेना हमको तुमको, खबरदार पहचानो हमको ।
विघ्न करे कोषागार जैसा, कर्म कौन सा बताओ वैसा ॥

49 जिह्वा इन्द्रिय के वश खोया, प्राण नरक में जाकर रोया ।
चक्री का तुम नाम बताओ, विजयी होकर सब सुख पाओ ॥

50 छहों मास तक ध्यान लगाया, कई मास आहार ना पाया ।
प्रथम दान है किसने कीना, पात्र दान का पुण्य है लीना ॥

51 जिनवाणी भव तारक नैय्या, हम बालक हैं तुम हो मैय्या ।
ग्रन्थों के तुम नाम बताओ, 'स' अक्षर से हमें गिनाओ ॥

52 जन्म भूमि है पूज्य कहाती, तीर्थंकर सम ख्याति पाती ।
कितने तीर्थंकर हैं जन्में, नगर अयोध्या ख्यात है जग में ॥

53 सुन्दर रूप व कर्कश वाणी, भिन्न भिन्न रचना करवानी ।
चित्रकार सम इसकी माया, कर्म कौन सा बताओ भाया ॥

54 अशुभ कर्म का उदय था आया, महाभयंकर रोग है जाया ।
रोग कौन सा यहाँ बताओ, समन्तभद्र स्वामि गुण गाओ ॥

55 मंगलमय है चिह्न कहाता, स्वस्तिक कलश सभी मनभाता ।
तीर्थंकर का नाम बताओ, चिह्न है किनका इनाम पाओ ॥

56 दीक्षा देकर गुरुवर तारे, कितने उनके शिष्य हैं प्यारे ।
गणना उनकी आप बताओ, विद्यागुरु को शीश झुकाओ ॥

57 काल कौन सा वह कहलाता, महापुरुषों का खोले खाता ।
नाम बताकर पुण्य कमाओ, भव-भव से छुटकारा पाओ ॥

58 अरहनाथ स्वामी जग नामी, रही न उनमें कुछ भी खामी।
पदवी तीन कौन सी धारे, मोक्ष कहाँ से वे हैं पधारे ॥

59 तीन लोक में अतिशयकारी, तीर्थंकर पदवी है भारी ।
किन गतियों से आकर बनते, तीर्थ के नायक हम सब नमते ॥

60 शेर ने जिनको शीश नवाया, दूध जलेबी खा हर्षाया ।
धर्मवीर का नाम बताओ, मार्ग अहिंसा का अपनाओ ॥

61 पत्थर का स्तम्भ कहाता, टूट जाए पर झुक ना पाता ।
है कषाय वह कौन सी भाया, मिथ्यादृष्टि में है पाया ॥

62 मरण भला जीवन से माना, कैसे भी हो सीता पाना ।
सत्य तथ्य को कैसे जाना, भामण्डल ने था पहचाना ॥

63 एक मात्र मुक्ति का साधन, ज्ञानी करता तप आराधन ।
संहनन कौन सा हमें बताएं, पुण्योदय से हम भी पाएं ॥

64 जैसा को तैसा है कहना, विपरीत भाव में कभी ना बहना ।
जीव का कौन सा गुण कहलाता, मोक्षमार्ग में हमें बढ़ाता ॥

65 ऋषभदेव की पुत्री प्यारी, सबसे पहले दीक्षा धारी ।
उन दोनों का नाम बताओ, माता किनकी कौन जताओ ॥

66 धूम धाम से ब्याह रचाया, पर संतान का योग ना आया ।
धन्य धन्य वे शील के धारी, नाम बताओ श्रावक भारी ॥

67 रंग लगा हल्दी का भाया, गुणस्थान दसवें में पाया ।
है कषाय का नाम बताओ, उसे त्याग योगी बन जाओ ॥

68 भामण्डल के पालन हारे, विद्याधर जो बने सहारे ।
मात-पिता का नाम बताओ, कर्मों की बलिहारी गाओ ॥

69 तीर्थंकर की जय-जय गाएं, मुनियों के नायक कहलाएं ।
वीर प्रभु के कितने गणधर, कौन बताए संयम धरकर ॥

70 पिता पुत्र की देखो जोड़ी, पुत्र ने पहले माया छोड़ी ।
ऋषभदेव बाहुबली स्वामी, कितनी ऊँची काया नामी ॥

71 ऐरावत का रूप धराया, देव इन्द्र है धरा पे आया ।
कल्याणक है कौन मनाए, जन जन का मन है हर्षाय ॥

72 विशाल अपने तन को बनाया, कोई पकड़ ना उसको पाया ।
ऋद्धि कौन सी है कहलाती, देवों की महिमा है गाती ॥

73 चाह न रखना धर्म तो करना, एक मात्र ये ही तो शरणा ।
अंग कौन सा है कहलाता, समदृष्टि है हमें बनाता ॥

74 नीर मीन का बने सहारा, बहते-बहते उसको तारा।
द्रव्य कौन सा वह कहलाता, चलते जीव को सहाय दाता ॥

75 तीर्थंकर की जय-जय गाए, मुनियों के नायक कहलाए ।
सबसे ज्यादा किनके गणधर, कौन बताए संयम धरकर ॥

76 पृथ्वीकायिक जीव कहाता, बच्चों का उससे है नाता ।
चिह्न कौन सा कौन बताए, तीर्थंकर की जय-जय गाए ॥

77 स्वर्गों से भी देव हैं आते, कल्याणक प्रभु का है मनाते ।
लौकान्तिक वैराग्य सराहे, कौन सा जिसको योगी चाहे ॥

78 पिता पुत्र से रहें न पीछे, जिनशासन का रथ है खीचे ।
गुरु शिष्य का नाम बताएँ, मलप्पा जी को यति बनाएँ ॥

79 छोटा अपने तन को बनाया, छेद में सुई के अटक ना पाया ।
कौन सी ऋद्धि की है महिमा, नारक जिसको पाए कभी ना ॥

80 सत्य तथ्य का ज्ञान कराना, मिथ्यावाद में कभी ना आना ।
अंग कौन सा है कहलाता, समदृष्टि वो हमें बनाता ॥

81 तीर्थंकर की पदवी धारी, शीश झुकाए जनता सारी ।
आदिनाथजी के कितने गणधर, कौन बताए संयम धरकर ॥

82 स्वर्गलोक से देव हैं आते, अष्टाह्निक का पर्व मनाते ।
कब और कितने बार मनाते, सब मिलकर जयकार लगाते ॥

83 मनवांछित वस्तु का दाता, मांगे से मिलती है साता ।
तीर्थंकर का नाम बताओ, चिह्न बताकर इनाम पाओ ॥

84 देखे माँ ने सोलह सपने, आँख खुली तो नहीं थे अपने ।
कल्याणक में सेवा करती, कौन है माँ का कष्ट जो हरती ॥

85 तीर्थंकर अंतिम कहलाते, स्वर्णमयी काया है पाते ।
कितनी ऊँची काया भाई, जग में होती सदा बढ़ाई ॥

86 जिसका कोई ना अन्त कहाता,सब द्रव्यों का आश्रय दाता ।
द्रव्य कौन-सा नाम बताएँ, भेद बताकर इनाम पाएँ ॥

87 गुणस्थान पंचम के धारी, लगे छोड़ने थारी - मारी ।
श्रावक कौन से वे कहलाते, सोलम स्वर्ग तक हैं वे जाते ॥

88 तीर्थंकर की जय-जय गाए, मुनियों के नायक कहलाए ।
पार्श्व प्रभु के कितने गणधर, कौन बताए जल्दी गिनकर ॥

89 शत इन्द्रों में नाम है पाता, तीर्थंकर का चिह्न कहाता ।
नाम प्रभु का है बतलाओ, चिह्न कौन सा है समझाओ ॥

90 नहीं प्रभु थे फिर भी मनाया, देवों ने जयकार लगाया ।
महामहोत्सव कौन सा भाई, तीर्थंकर हैं सदा सहाई ॥

91 देव देवियाँ जितने आते, समवसरण में सभी समाते ।
कितने योजन था विस्तारा, ऋषभदेव का जिन्हें सहारा ॥

92 दूध में पानी जो मिल जाता, चेतन से कर्मों का नाता ।
तत्त्व कौन सा कभी न भाता, नाम बताओ यदि हो ज्ञाता ॥

93 अतिशय करते देव जहाँ पर, पुण्य भूमि विख्यात धरा पर ।
अतिशय क्षेत्र के नाम बताओ, 'प' अक्षर से हमें गिनाओ ॥

94 द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ अनोखा, षट् द्रव्यों का लेखा - जोखा ।
लेखक गुरुवर कौन हैं इसके, महिमा जिनकी ज्ञात है जग में॥

95 देखो कैसी कर्म की माया, एकेन्द्रिय का तन है पाया ।
पृथ्वीकायिक की उम्र बताओ,आकार बताकर इनाम पाओ ॥

96 बड़ी मस्त है चाल वो चलता, कान है देखो जिसका हिलता।
चिह्न कौन सा वह कहलाता, तीर्थंकर की याद दिलाता ॥

97 मौन रहे प्रभु वीर न बोले, दीक्षा लेकर ध्यान में डोले ।
केवलज्ञान हुआ कब उनको, वर्ष बताओ ज्ञात हो तुमको ॥

98 गुरु अकलंक की अद्‌भुत रचना, पढ़े सुने सब पाप से बचना।
सूत्र ग्रन्थ की टीका कहाती, नाम बताओ पथ बतलाती ॥

99 लाल वर्ण है सुन्दर काया, मन में धरते कभी न माया ।
तीर्थंकर का नाम बताओ, उन जैसा तुम पुण्य कमाओ ॥

100 उछलकूद में सबसे आगे, देख सिंह को दूर से भागे ।
है शाखा मृग वो कहलाता, किस नायक का चिह्न कहाता॥

101 जिनशासन का ध्वज लहराया, बौद्धों को जिनने था हराया ।
उन आचार्य का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ ॥

102 नगर बनारस खुशिया छाई, घर-घर देखो बजी बधाई ।
जनमें कौन से हैं तीर्थंकर, पुण्यशाली वे सर्वहितंकर ॥

103 स्वभाव से ही मैली काया, सार न इसमें कुछ भी पाया ।
मुनि तन देख न ग्लानि कीजे, अंग कौन सा दृष्टि दीजे ॥

104 सकल कर्म से मुक्त है होना, पाप ताप को जड़ से खोना ।
तत्त्व कौन सा मुनिवर कहते,नाम बताओ दुःख क्यों सहते ॥

105 रस न गंध न और वर्ण न, जीव द्रव्य का कोई पर्स न ।
द्रव्य कौन सा इनको कहते, सिद्ध शिला पर हैं वे रहते ॥

106 धर्म मानकर नदी नहाना, सूरज को है शीश झुकाना ।
समदर्शी का दोष बताओ, दोष त्याग दर्शी बन जाओ ॥

107 हिंसा पाप है बड़ा कहाता, दुर्गतियों में वो ले जाता ।
चार भेद हैं कौन बताए, त्यागी बन कर सुख पा जाए ॥

108 पृथ्वी पर ना जीवन पलता, जल में सोता जल में चलता ।
चिह्न कौन सा कौन बताए, तीर्थंकर की जय - जय गाए ॥

109 सुन्दर रूप मनोहर काया, श्वेत वर्ण है जिनने पाया ।
तीर्थंकर को शीश झुकाओ, फिर उनका है नाम बताओ ॥

110 साधर्मी के दोष छुपाना, सत्य बात है उसे सुझाना ।
अंग कौन सा है कहलाता, समदर्शी का बताओ भ्राता ॥

1 सीता एवं भामण्डल

2 उत्तमआर्जवधर्म

3 मार्गणा चौदह होती हैं :-
1. गति 2. इन्द्रिय 3. काय 4. योग 5. वेद 6. कषाय 7. ज्ञान 8. संयम 9. दर्शन 10. लेश्या 11. भव्यत्व 12. सम्यक्त्व 13. संज्ञित्व 14. आहारक

4 ज्ञानावरणकर्म

5 उत्तमशौचधर्म

6 वेदनीयकर्म अथवा सातावेदनीय एवं असातावेदनीयकर्म

7 नैगमनय

8 महामत्स्य अन्तिम स्वयम्भूरमण समुद्र में रहता है। यह महामत्स्य 1000 योजन लम्बा, 500 योजन चौड़ा एवं 250 योजन मोटा है।

9 जरायुज, गर्भ जन्म मनुष्य का होता है।

10 सकाम रूपित्व विक्रिया ऋद्धि

11 आर्यिका पृथ्वीमति

12 आचार्य कुन्दकुन्द महाराज

13 निःशंकित अंग

14 विष्णुकुमारमुनि

15 श्री नेमिनाथ जी

16 आस्रव के दो भेद :-
1. ईर्यापथ आस्रव 2. साम्परायिक आस्रव
अथवा
1. द्रव्य आस्रव 2. भाव आस्रव

17 स्थितिकरण अंग

18 आचार्य पूज्यपाद स्वामी

19 औदायिक भाव

20 श्री अतिशय क्षेत्र

21 जीवादि तत्त्वों के जानने के उपाय :-
1. प्रमाण 2. नय

22 अतिशय क्षेत्र के नाम :-
1. चाँदखेड़ी 2. चमत्कार जी 3. चन्देरी 4. चँवलेश्वर पार्श्वनाथ

23 समवसरण

24 ईर्यापथ समिति

25 कुल चौदह गुणस्थान होते हैं।

26 मोहनीय कर्म

27 शंख दो इन्द्रिय जीव है, अन्य दो इन्द्रिय जीव-कृमि, सीप, केंचुआ, लट आदि

28 'क' अक्षर से जिनवाणी 'ग्रन्थ' के नाम - 1. कार्तिकयानुप्रेक्षा 2. कल्याणकारक 3. कषायपाहुड 4. कर्मकाण्ड 5. कल्याण मंदिर स्तोत्र

29 श्री वासुपूज्य स्वामी चम्पापुर में जन्में एवं वहीं से मोक्ष गये।

30 भाषा समिति

31 आयु कर्म

32 बहिरात्मा

33 क्रोध के चार भेद :-
1. अनन्तानुबन्धी क्रोध
2. अप्रत्याख्यान क्रोध
3. प्रत्याख्यान क्रोध
4. संज्वलन क्रोध

34 पोत जन्म (गर्भ जन्म का भेद)

35 द्वितीय व्रत प्रतिमा

36 श्री पार्श्वनाथ प्रभु की उम्र-100 वर्ष

37 चक्षु इन्द्रिय से रंग का ज्ञान हुआ, चौइन्द्रिय जीवः-मक्खी, मच्छर, पतंगा, भौरा, तितली

38 श्री जीवन्धरकुमार ने मरते हुये कुत्ते को णमोकार मन्त्र सुनाया।

39 चार बंध उनका स्वभाव (फल)

1. प्रकृति बन्ध - नामानुसार फल
2. स्थिति बन्ध - कालानुसार फल
3. अनुभाग बन्ध- कम ज्यादा शक्ति के अनुसार
4. प्रदेश बन्ध परमाणु-स्कन्धों की गणना

40 गरिमा ऋद्धि

41 क्षुल्लक, ऐलक 11वीं प्रतिमा उद्दिष्टत्यागी

42 हस्तिनापुर में

43 नैनागिर 'रेशिन्दीगिरि'

44 आचार्य समन्तभद्र स्वामी

45 गोत्र कर्म

46 1. मुनिसुव्रत 2. नेमिनाथ भगवान श्याम वर्ण अथवा कृष्ण वर्ण के थे।

47 तैजस और कार्मण शरीर

48 अन्तराय कर्म

49 सुभौम चक्रवर्ती

50 आदिनाथ जी को प्रथम आहार दान - राजा सोम व राजा श्रेयांस ने दिया।

51 'स' अक्षर से ग्रन्थ के नाम :-
1. समयसार 2. सर्वार्थसिद्धि 3. सुदृष्टि तरंगिणी 4. सूर्यप्रज्ञप्ति 5. समयसार कलश 6. समाधितन्त्र 7. सम्यक्त्वसारशतक 8. सुभाषित रत्न संदोह

52 पाँच तीर्थंकर :- आदिनाथ, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ, अनंतनाथ।

53 नामकर्म

54 भस्मक व्याधि रोग

55 सुपार्श्वनाथ जी का स्वस्तिक, मल्लिनाथ जी का कलश

56 आचार्य विद्यासागर जी द्वारा दीक्षित शिष्य - 89 मुनि, 114 आर्यिकाएं, 19 ऐलक, 14 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिकाएं कुल = 239

57 चतुर्थ दुषमा-सुषमा काल

58 अरनाथ भगवान तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव तीन पद के धारी थे। श्री सम्मेदशिखर जी से मोक्ष गये।

59 नरकगति एवं स्वर्ग (देव) गति से आकर जीव तीर्थंकर बनते हैं।

60 दीवान अमरचन्द्र जी

61 अनन्तानुबन्धी मान कषाय

62 जातिस्मरण से

63 वज्र वृषभ नाराच संहनन

64 सम्यग्ज्ञान

65 सुनन्दा से सुन्दरी, नन्दा से ब्राह्मी

66 विजय सेठ और विजया सेठानी

67 संज्वलन लोभ कषाय

68 पिता – चन्द्रगति व माता –पुष्पवती
69 कुल 11(ग्यारह) गणधर
70 बाहुबली भगवान की ऊँचाई – 525 धनुष तथा ऋषभदेव की ऊँचाई – 500 धनुष
71 जन्मकल्याणक
72 महिमा ऋद्धि
73 निःकांक्षित अंग
74 धर्म द्रव्य
75 सुमतिनाथ भगवान के 116 गणधर
76 चन्द्रप्रभ का चन्द्रमा
77 तप कल्याणक
78 आचार्य श्री धर्मसागर जी द्वारा दीक्षित – मुनि श्री मल्लिसागर जी महाराज
79 अणिमा ऋद्धि
80 अमूढ़दृष्टि अंग
81 84 (चौरासी गणधर)
82 तीन बार अष्टाह्निका पर्व मनाते हैं। कार्तिक, फाल्गुन एवं आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक।
83 दसवें शीतलनाथ भगवान के कल्पवृक्ष का चिह्न
84 श्री ह्री आदि देव कुमारियाँ (संख्या 8 अथवा 56)
85 7 हाथ ऊँचाई, भगवान महावीर
86 आकाश द्रव्य के दो भेद हैं – 1. लोकाकाश 2. अलोकाकाश
87 नैष्ठिक श्रावक अथवा व्रती श्रावक
88 स्वयंभू आदि दस गणधर
89 भगवान महावीर का चिह्न सिंह (शेर)
90 निर्वाण / मोक्ष कल्याणक
91 बारह योजन
92 बन्ध तत्त्व
93 'प' अक्षर से अतिशय क्षेत्र के नाम :- 1.पवाजी 2. पद्मपुरा 3. पजनारी 4. पावागढ़
94 आचार्य श्री नेमिचन्द्र जी सिद्धान्तिदेव
95 पृथ्वीकायिक मसूर के समान आकार एवं आयु 22 हजार अथवा 12 हजार वर्ष
96 अजितनाथ जी का हाथी
97 दीक्षा के बारह वर्ष बाद केवलज्ञान हुआ
98 श्री तत्त्वार्थवार्तिक अथवा राजवार्तिक
99 पद्मप्रभ एवं वासुपूज्य भगवान
100 अभिनन्दन नाथ भगवान का चिह्न बंदर
101 आचार्य अकलंक देव
102 सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ
103 निर्विचिकित्सा अंग
104 मोक्ष तत्त्व
105 शुद्ध जीव द्रव्य / अमूर्त द्रव्य
106 लोक मूढ़ता
107 हिंसा के चार भेद :-
1. संकल्पी हिंसा 2. उद्योगी हिंसा
3. आरंभी हिंसा 4. विरोधी हिंसा
108 अरनाथ भगवान का मत्स्य चिह्न
109 चन्द्रप्रभ एवं पुष्पदन्त भगवान
110 उपगूहन अंग

1 केवलज्ञान है जिनने पाया, कर्मघातिया उसने नशाया ।
भाव कौन सा आप बताए, पाप त्याग मुक्ति पा जाएँ ॥

2 जिनवर कथित जिनागम प्यारा, भवसागर का मिले किनारा।
प्रश्न पूछ श्रद्धान बढ़ाना, स्वाध्याय का भेद बताना ॥

3 प्राण जाए पर वचन न जाए, रघुकुल रीत सदा चली आए ।
रघु के पुत्र का नाम बताओ, श्री राम जयकार लगाओ ॥

4 कल्याणकारक ग्रन्थ निराला, आयुर्वेद का जिसमें हवाला ।
किन आचार्य की रचना प्यारी, पढ़ो सुनो है जन हितकारी ॥

5 चिन्तन करना ज्ञान बढ़ाना, बार-बार है मन में लाना ।
स्वाध्याय का भेद बताना, जिनवाणी को शीश नवाना ॥

6 मैं मैं करता प्राण गँवाता, तीर्थंकर का चिह्न कहाता ।
नम्बर कौन से प्रभु का आता, सच बतलाना इनाम पाता ॥

7 'अ' से अच्छा काम करें, अरिहन्तों का ध्यान करें ।
तीर्थंकरों के नाम बताओ, अ अक्षर से शुरु कराओ ॥

8 ऋषभदेव नेमीश्वर स्वामी, वेद पुराणों में भी नामी ।
किस आसन से मोक्ष पधारे, शीश नवाते बच्चे सारे ॥

9 वाह-वाह है जग-जन करते, जिनशासन की महिमा पढ़ते ।
अंग कौन सा हमें बताना, दर्शी श्रावक तुम बन जाना ॥

10 एक देश कर्मों का झड़ना, जैसे पेड़ से पत्ता पड़ना ।
तत्त्व कौन सा वह कहलाता, धीरे धीरे कर्म नशाता ॥

11 उपशम क्षय ना उसका कारण, कर्म उदय का भी हो वारण।
भाव कौन सा आप बताएं, सभी द्रव्य में उसको पाएं ॥

12 आयुर्वेद का जहाँ सहारा, श्री समन्तभद्र का ग्रन्थ निराला ।
नाम कौन सा हमें बताएं, द्वादशांग की कीरत गाएं ॥

13 देखो उदय है कर्म का आया,ना संयम जीवन में पाया ।
कषाय कौन सी वह कहलाती,भव-भव में हमको भटकाती ॥

14 पाप त्याग शिवपथ पर चलना, मुक्ति हेतु एक ही शरणा ।
मंजिल तक हमको पहुँचाता, गुण है जीव का क्या कहलाता ॥

15 कर्म ही जग में दुख का कारण, करो शीघ्र तुम इसका वारण ।
कर्म काट मुक्ति है पाता, क्षेत्र कौन सा वह कहलाता ॥

16 कंकर पत्थर ढेर लगाना, पर्वत से गिरकर मर जाना ।
समदर्शन का दोष बताओ, दोष त्याग दर्शी बन जाओ ॥

17 एक साथ जनमें दो भाया, गौर वर्ण अरु श्याम है काया ।
कर्म उदय है कौन सा पाया, नाम बताओ मिटती माया ॥

18 विमलनाथ तीर्थंकर जनमें, त्याग तपस्या की है वन में ।
जन्मभूमि का नाम बताओ, शीश झुकाकर पुण्य कमाओ ॥

19 वंश हमारा कितना प्यारा, सिद्धारथ का राज दुलारा ।
वीर प्रभु का वंश बताओ, अपना जीवन सफल बनाओ ॥

20 सियालनी ने तन को खाया, स्वर्ग सम्पदा उनने पाया ।
मुनिवर तीन दिवस वे ध्यानी, नाम बताओ उनका ज्ञानी ॥

21 देवसेन आचार्य की रचना, पाप कर्म से हमको बचना ।
ग्रन्थों के तुम नाम बताओ, कम से कम हैं तीन गिनाओ ॥

22 जीव कर्म की बात-बताता, जीवकाण्ड है ग्रन्थ कहाता ।
कर्मकाण्ड भी जिनकी गाथा, कौन है गुरुवर नवाओ माथा ॥

23 टेढ़ा मेढ़ा अंग बनाया, रूप न सुन्दर उसने पाया ।
कौन सा वह संस्थान कहावे, अशुभ कर्म से जीव है पावे ॥

24 पुत्र - पुत्री वा धन की आशा, मन में लेकर रगड़े नाशा ।
राग - द्वेष युत देवी - देव का, दोष बताओ समदर्शी का ॥

25 देखो कर्म की लीला न्यारी, पाना चाहो सीता प्यारी ।
धनुष कौन सा राम चढ़ाये, जनक पुरी में हर्ष बढ़ाये ॥

26 अनन्त भव तक जो भटकाती, सम्यक् चारित्र घात कराती ।
कषाय का तुम नाम बताओ, छुटकारा इससे पा जाओ ॥

27 दस-दस दो दो जिनकी गणना, हम तुम लेते जिन की शरणा।
श, ष, स से नाम गिनाओ, तीर्थंकर कितने बतलाओ ॥

28 तत्त्वों का है ज्ञान कराता, तत्त्वार्थसूत्र जो नाम है पाता ।
कितनी सदियों पूर्व रचाया, उमास्वामि ने हमें बताया ॥

29 ध्यान तो हमको निशिदिन करना, पाप काम में कभी न पड़ना ।
धर्मध्यान के भेद बनाओ, चार कौन से हमें गिनाओ ॥

30 सिद्ध चक्र का पाठ रचाया, कुष्ट पति का जिसने भगाया ।
महासती का नाम बताओ, पिता-पति का ज्ञान कराओ ॥

31 नेमिचन्द्र गुरुवर ने गाया, सेनापति के लिए बनाया ।
नाम ग्रन्थ का हमें बताना, दोनों को है शीश नवाना ॥

32 जल रेखा सम उसकी लीला, यथाख्यात की घातक शीला ।
उस कषाय का नाम बताओ, उसे त्याग योगी बन जाओ ॥

33 राजा जनक को लेकर भागा, उड़ता जैसे नभ में कागा ।
अश्व का रूप जिसने बनाया, कौन था वो विद्याधर भाया ॥

34 देवागम स्तोत्र कहाता, प्रभु का हमको ज्ञान कराता ।
किन आचार्य की रचना भाई, नाम बताओ हमें सहाई ॥

35 भूख से कम है भोजन करना, प्रमाद शत्रु से है फिर लड़ना ।
कौन सा तप है वह कहलाता, मुनिवर धारे कर्म नशाता ॥

36 देखो गगन में चन्द्र चमकता, पृथ्वी तल से दूर ही रहता ।
कितनी दूरी कौन बताए, बिना ऋद्धि के पहुँच न पाएं ॥

37 कर्म है जग में सुख दुख दाता, स्वर्ग नरक में ही पहुँचाता ।
कुल कर्मों के भेद बताओ, शाश्वत् पद को तुम पा जाओ ॥

38 पत्थर पर अंकित जो रेखा, मिटा कभी न कर्म का लेखा ।
देखो कितनी शक्ति भारी, कषाय का वो नाम है धारी ॥

39 श्रावक का आचार पढ़ाता, ग्रन्थ श्रावकाचार कहाता ।
रत्नकरण्डक नाम है पाया, किन आचार्य ने इसे बनाया ॥

40 तीन लोक की जिसमें गाथा, तिलोयपण्णत्ति नाम कहाता ।
गुरुवर का तुम नाम बताओ, कितनी गाथा हमें गिनाओ ॥

41 पाप नशाता पुण्य बुलाता, चउगतियों से हमें छुड़ाता ।
कितने मंगल कौन बताए, नाम सभी के हमें गिनाए ॥

42 अनेक विध की विधियाँ लेना, रत्नत्रय की जोड़े निधियाँ ।
कौन सा तप है वह कहलाता, कर्मों की है जाँच कराता ॥

43 दिव्य देशना जहाँ पर होती, दुनियाँ अपने दुख को खोती ।
समवसरण की सभा है भाई, कितने ऊपर धरा से जाई ॥

44 समय से पहले कर्म झड़ाना, जल्दी जल्दी मोक्ष है पाना ।
निर्जरा कौन सी वह कहलाती, द्वार मुक्ति का है खुलवाती ॥

45 भोगभूमि का जीव कहाता, भोग भोगता पुण्य खपाता ।
मरकर जन्म कहाँ है पाता, मनुजों से था जिनका नाता ॥

46 प्रभु ने केवल ज्ञान है पाया, भव्य जनों का मन हर्षाया ।
समवसरण की रचना करता, कौन प्रभु को शीश पे धरता ॥

47 देव लोग ही जहाँ हैं जाते, हम तुम केवल भाव बनाते ।
नंदीश्वर में कितने मंदिर, कौन बताए पहुँच के अन्दर ॥

48 मुनियों का आचार बताता, मूलाचार है ग्रन्थ कहाता ।
गुरुवर को है शीश नवाओ, रचना किनकी हमें बताओ ॥

49 तीन लोक की जिसमें गाथा, त्रिलोकसार है ग्रन्थ कहाता ।
गुरुवर का तुम नाम बताओ, कितनी गाथा हमें गिनाओ ॥

50 जीवन का जब अन्त है आया, साम्य भाव उनने अपनाया ।
मरण समाधि कहाँ पे धारे, शिवसागर आचार्य हमारे ॥

51 भोग भोगते स्वर्ग हैं जाते, मेहनत कर न कभी कमाते ।
भोगभूमि है कितनी यहाँ पर, मनुज विचरते सदा जहाँ पर ॥

52 कर्मों की आयु है बढ़ाना, और भाव से उसे घटाना ।
क्रिया कौन सह है कहलाती, जिनवाणी सब ज्ञान कराती ॥

53 परमातम है सकल कहाते, देव भी जिनको शीश झुकाते ।
प्रभु अरिहन्त हैं कौन कहाते, सही बताओ पढ़ी हो बातें ॥

54 पूज्य पाद हैं गुरु हमारे, भव भव में हैं सदा सहारे ।
रचना इनकी हमें बताओ, कम से कम हैं तीन गिनाओ ॥

55 पाप से निज आतम को बचाता, आत्मानुशासन ग्रन्थ कहाता।
गुरुवर का है नाम बताओ, रचना पढ़कर कर्म खपाओ ॥

56 कुत्सित पात्र को दान जो देता, कुभोग भूमि जन्म वो लेता ।
कितनी भूमि कौन बताए, ऐसा कभी न पुण्य कमाए ॥

57 भूख लगी पर अन्न न देना, मारपीट कर बदला लेना ।
छेदन-भेदन भार लदाना, अतिचार किस व्रत का बताना ॥

58 बिना छना जल कभी न पीना, जलगालन ही मोक्ष का जीना ।
कितने जीव हैं कौन बताए, व्यर्थ बूँद न कभी बहाए ॥

59 त्रस हिंसा का त्याग कराया, पर थावर से बच ना पाया ।
कौन सा व्रत है वह कहलाता, मोक्ष मार्ग में हमें बढ़ाता ॥

60 रत्नप्रभा पृथ्वी कहलाती, देव नारकी को सहलाती ।
तीन भेद हैं कौन बताए, नाम सभी के यहाँ गिनाए ॥

61 अनुप्रेक्षा का ग्रन्थ कहाता, कार्तिकेय संग नाम है पाता ।
किन आचार्य की रचना निराली, नाम बताओ धर्म के माली ॥

62 बिच्छु मच्छर तन में काटे, चेतन को ये कभी न बाँटे ।
समता धर कर सब कुछ सहना, कौन परीषह गुरु का कहना ॥

63 पर उपदेश बिना है होता, समदर्शी है दुख को खोता ।
भेद कौन सा वह कहलाता, भव्य जनों को सुख पहुँचाता ॥

64 असत्य का है त्याग कराया, लौकिक दृष्टि से समझाया ।
कौन सा व्रत है वह कहलाता, मोक्ष मार्ग में हमें लगाता ॥

65 प्यास लगे पर जल न पीना, संयम का दृढ़ पालन कीना ।
ज्ञानामृत का पीता प्याला, परीषह कौन सा बताओ लाला ॥

66 दूजों के दुख देख है डरना, सब जीवों पर दया है करना ।
कौन सा गुण है वह कहलाता, समदर्शी है हमें बनाता ॥

67 कभी किसी से प्रेम न करते, अधो लोक में नित ही लड़ते।
कितनी ऊँची उनकी काया, नाम नारकी जिसने पाया॥

68 गिरी पड़ी वस्तु ना उठाना, ना ही उसका दान कराना।
कौन सा व्रत है वह कहलाता, मोक्षमार्ग में हमें लगाता॥

69 समदर्शन का बनता कारण, भव दुख का फिर होता वारण।
पञ्च लब्धियाँ हमें बताओं, नाम बताकर इनाम पाओ॥

70 क्षुधा वेदना तन में भारी, पर समता है मन में धारी।
सब कुछ सहना कुछ न कहना, भेद कौन का संवर गहना॥

71 मधुर सुस्वाद पेय का दाता, कल्पवृक्ष शुभ नाम है पाता।
कल्पवृक्ष का भेद बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

72 भोगों से वैराग्य है धारा, झूठा सब संसार है खारा।
कौन सा गुण है वह कहलाता, समदर्शी है हमें बनाता॥

73 अश्वपदादिक सेना सारी, देखो इन्द्र का वैभव भारी।
देव कौन से वे कहलाते, सभा में इन्द्र की शोभा पाते॥

74 गगन में उड़ते पर फैलाते, यहाँ वहाँ वे जाते आते।
जीव कौन सा नाम है पाते, पञ्चेन्द्रिय के भेद कहाते॥

75 पर स्त्री काँटा सम भाई, पाप त्याग कर करो भलाई।
कौन सा व्रत है वह कहलाता, मोक्षमार्ग में हमें बढ़ाता॥

76 जेठ मास में आग बरसती, साँय-साँय कर लू है चलती।
भीतर रहना कुछ न कहना, कौन परीषह साधु सहना॥

77 कंगन हार मुकुट का दाता, कल्पवृक्ष शुभ नाम है पाता।
कल्पवृक्ष का भेद बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

78 इन्द्र समान है महिमा शाली, पर आज्ञा न किसी पे चाली।
देव कौन से वे कहलाते, सभा में इन्द्र की शोभा पाते॥

79 जल में चलते जल में खाते, यहाँ वहाँ न जीवन पाते।
जीव कौन सा नाम हैं पाते, पञ्चेन्द्रिय के भेद कहाते॥

80 चउगतियों में जीव है जाता, मनुज गति जंक्शन कहलाता।
मनुजों के दो भेद बताओ, सूत्र ग्रन्थ से ढूंढ़ के लाओ॥

81 शक्तिशाली देव कहाते, महिमा उनकी हम तुम गाते।
कितना बल वह इन्द्र है पाता, नाम सौधर्म है सुख को पाता॥

82 छोड़ स्वर्ग को धरा पे जाना, खाली होवे पुण्य खजाना।
देव हैं कैसे यह सब जाने, समदृष्टि पर दुख न माने॥

83 पृथ्वी पर ही जीवन पाया, धरा पे चलती सारी माया।
जीव कौन सा नाम है पाते, पञ्चेन्द्रिय के भेद कहाते॥

84 दुख से जग में नित ही डरता, धर्म पंथ से प्रेम वो करता।
कौन सा गुण है वह कहलाता, समदर्शी है हमें बनाता॥

85 मंत्री जैसा पद है पाया, सके कभी न कोई हटाया।
देव कौन से वो कहलाते, सभा में इन्द्र की शोभा पाते॥

86 मनहर सुन्दर भवन का दाता, कल्पवृक्ष शुभ नाम है पाता।
कल्पवृक्ष का भेद बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

87 मल्लप्पा का राज दुलारा, विद्याधर है सबने पुकारा।
प्रतिमा ब्रह्मचर्य सुखदाई, ग्रही कहाँ पर किससे भाई॥

88 जीवन जिसने जग में पाया, मरकर छोड़ी सारी माया।
मरण कौन सा है कहलाता, वीर प्रभु का जिससे नाता॥

89 दर्शन से शुभ भाव है जागा, कौए का फिर माँस है त्यागा।
भील युगल का नाम बताओ, त्याग की महिमा खूब बढ़ाओ॥

90 ब्रह्मचर्य अणुव्रत की महिमा, देवों से भी जाए कही ना।
द्वितीय नाम है कौन बताए, नाम बताकर व्रत है निभाए॥

91 कठोर कर्कश वचन है सुनते, पर विरोध न कभी वे करते।
परीषह मुनिजन कौन सा सहते, नाम बताओ चुप क्यों रहते॥

92 कोई किसी का सगा न होता, विषयों में क्यों जीवन खोता।
पिता को जिसने जेल में डाला, नाम बताओ कर्म का मारा॥

93 धर्म का जिनने ज्ञान कराया, भूल सिकन्दर को बतलाया।
उन गुरुवर का नाम बताओ, धन्य है मुनिवर शीश नवाओ॥

94 गिल्ली डण्डा बालक खेले, खेल-खेल में शिक्षण ले लें।
गुफा में कौन से मुनि विराजे, विद्याधर को ज्ञान पढ़ावे॥

95 असिमसि आदि कर्म सहारे, कर्म भी देखो मनुज से हारे।
मनुज कौन से वे कहलाते, हम तुम जैसे नजर हैं आते॥

96 रत्न जड़ित भाजन का दाता, आसन आदि सुक्ख प्रदाता।
कल्पवृक्ष का भेद बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

97 सम्यक् ज्ञान प्रमाण कहाता, परोक्ष प्रत्यक्ष भेद है पाता।
ज्ञान परोक्ष है कितने होते, ज्ञानी तो नित कर्म है खोते॥

98 धन मकान की सीमा करना, हृदय में संतोष है धरना।
कौन सा व्रत है वह कहलाता, मोक्षमार्ग में हमे लगाता॥

99 झूठ का जिसने फल है पाया, नरक गति की मिली है माया।
दोनों मित्र का नाम बताओ, नारद को पर भूल न जाओ॥

100 है प्रकाश युत धरा कराता, सूर्य के तेज को दूर हटाता।
कल्पवृक्ष का भेद बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

101 वाहन बनना फल है पाया, देव गति का जीव कहाया।
भेद कौन सा हमें बताना, सही बताकर इनाम पाना॥

102 कंकर पत्थर पग में चुभते, कष्ट दे रहे फिर भी चलते।
परीषह मुनिगण कौन सा सहते, नाम बताओ चुप क्यों रहते॥

103 पूज्य मुनिवर महाव्रतधारी, नमन करे जग जनता सारी।
प्रथम है दीक्षा कहाँ पे दीनी, विद्यागुरु से किसने लीनी॥

104 अक्ष-अक्ष प्रत्यक्ष कहाता, पुण्य योग से जीव है पाता।
भेद कौन से तीन बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

105 सभा के बाहर आसन पाया, देव गति का जीव कहाया।
भेद कौन सा हमें बताना, नाम बताकर इनाम पाना॥

106 वातवलय से घिरी है काया, लोकाकाश की देखो माया।
वातवलय के नाम बताओ, तीनों क्रम से हमे गिनाओ॥

107 अवधि ज्ञान का भेद कहाता, जीव द्रव्य से इसका नाता।
अनुगामी के भेद बताओ, तीनों के है नाम गिनाओ॥

108 जीवन जिसने जग में पाया, मरकर छोड़ी सारी माया।
मरण कौन सा है कहलाता, मिथ्यादृष्टि जिसको पाता॥

109 तीर्थंकर है प्रथम कहाते, ऋषभदेव जयकार लगाते।
मात-पिता का नाम बताओ, सही बताकर इनाम पाओ॥

110 चउघातिया कर्म नशाया, केवलज्ञान प्रभू ने पाया।
तिथी कौन सी तुम बतलाओ, गौतमस्वामी शीश नवाओ॥

1 क्षायिक भाव
2 पृच्छना नामक स्वाध्याय
3 राजा अरण्य
4 उग्रादित्य आचार्य
5 अनुप्रेक्षा स्वाध्याय
6 सत्रहवें कुन्थनाथ जी का बकरा
7 1. आदिनाथ
2. अजितनाथ
3. अभिनन्दननाथ
4. अनन्तनाथ
5. अरनाथ
6. अतिवीर
8 पद्मासन
9 प्रभावना अंग
10 निर्जरा तत्त्व
11 पारिणामिक भाव
12 श्री सिद्धान्तरसायनकल्प
13 प्रत्याख्यान कषाय
14 सम्यक्चारित्र
15 श्री सिद्ध क्षेत्र
16 लोक मूढ़ता
17 वर्ण नाम कर्म
18 कम्पिला (कपिला पुरी)
19 नाथ वंश
20 सुकमाल मुनि
21 1. आलापपद्धति
2. आराधनासार
3. भावसंग्रह
4. नयचक्र
5. तत्त्वार्थसार
6. दर्शनसार
7. धर्मसंग्रह
8. सावयधम्म दोहा
22 श्री नेमिचन्द्र आचार्य सिद्धान्तचक्रवर्ती
23 हुण्डक संस्थान नाम कर्म
24 देव-मूढ़ता
25 वज्रावर्त धनुष
26 अनन्तानुबन्धी कषाय
27 1. संभवनाथ
2. सुमतिनाथ
3. सुपार्श्वनाथ
4. सुविधिनाथ
5. शीतलनाथ
6. श्रेयांसनाथ
7. शान्तिनाथ
8. सन्मति
28 दूसरी शताब्दी 2 अर्थात् 1900 वर्ष पूर्व
29 धर्मध्यान के चार भेद :
1. आज्ञा विचय धर्म ध्यान
2. अपाय विचय धर्म ध्यान
3. विपाक विचय धर्म ध्यान
4. संस्थान विचय धर्म ध्यान
30 मैनासती के
पिता का नाम – पुहुपाल राजा
पति का नाम – कोटिभट्ट श्रीपाल
31 गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं गोम्मटसार जीवकाण्ड
32 संज्वलन कषाय

33 चपलगति नाम का विद्याधर अथवा चपल वेग

34 आचार्य समन्तभद्र स्वामी

35 अवमौदर्य तप

36 पृथ्वी तल से 880 योजन ऊपर चन्द्र विमान

37 कर्मों के 8 भेद, उत्तर भेद – 148 कर्म

38 अनन्तानुबन्धी क्रोध

39 स्वामी समन्तभद्राचार्य जी

40 यतिवृषभ आचार्य द्वारा रचित, 5677 गाथा प्रमाण

41 मंगल चार होते हैं :– 1. अरिहन्त मंगल है 2. सिद्ध मंगल है 3. साधु मंगल है 4. जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्रणीत धर्म मंगल है।

42 वृत्ति परिसंख्यान तप

43 पाँच हजार धनुष

44 अविपाक निर्जरा

45 देवगति

46 कुबेर

47 कुल 52 मंदिर

48 वट्टकेर आचार्य

49 नेमिचन्द्र आचार्य – 1018 गाथा प्रमाण

50 श्री अतिशय क्षेत्र महावीर जी (राजस्थान) में

51 कुल 30 भोगभूमि

52 उत्कर्षण और अपकर्षण

53 जिन्होंने चार घातिया कर्मों का नाश कर दिया, वे अरिहन्त प्रभु कहलाते हैं।

54
1. इष्टोपदेश
2. समाधिशतक
3. सर्वार्थसिद्धि
4. जैनेन्द्र व्याकरण
5. दशभक्ति
6. वैद्यसार

55 श्री गुणभद्र आचार्य

56 96 कुभोग भूमियाँ

57 अहिंसा अणुव्रत का

58 धार्मिक दृष्टिकोण – 1 बूँद में असंख्यात
वैज्ञानिक दृष्टिकोण – 1 बूँद में 36450।

59 अहिंसा अणुव्रत

60 रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद :–
1. खरभाग 2. पंकभाग 3. अब्बहुलभाग

61 श्री कुमारस्वामी

62 दंशमशक परीषह

63 निसर्गज सम्यग्दर्शन

64 सत्याणुव्रत

65 तृषा परीषह जय

66 अनुकम्पा सम्यग्दृष्टि का लक्षण

67 कम से कम तीन हाथ एवं उत्कृष्ट 500 धनुष ऊँची नारकियों की काया होती है।

68 अचौर्य अणुव्रत

69
1. क्षयोपशम लब्धि
2. विशुद्धि लब्धि
3. देशना लब्धि
4. प्रायोग्य लब्धि
5. करण लब्धि

70 परीषह जय

71 पानांग जाति का कल्पवृक्ष
72 निर्वेग गुण
73 अणीक देव (अनीक देव)
74 नभचर जीव
75 ब्रह्मचर्य अणुव्रत
76 उष्ण परीषह
77 भूषणांग जाति का कल्पवृक्ष
78 सामानिक देव
79 जलचर जीव
80 मनुष्य के दो भेद :- 1. आर्य 2. म्लेच्छ
81 सौधर्म इन्द्र में इतनी शक्ति होती है कि वह जम्बूद्वीप को पलट सकता है अथवा उठा कर समुद्र में भी फेंक सकता है।
82 अवधिज्ञान से
83 थलचर जीव
84 संवेग गुण
85 त्रायस्त्रिंश देव
86 आलयांग नाम का कल्पवृक्ष
87 देशभूषण जी महाराज से खानिया (चूलगिरी) में
88 पण्डित-पण्डित मरण
89 पुरुरवा भील एवं कालिका भीलनी
90 स्वदार सन्तोष अणुव्रत
91 आक्रोश परीषह
92 राजा श्रेणिक का पुत्र राजा कुणिक
93 श्री कल्याण मुनिराज
94 श्री महाबल मुनिराज
95 कर्मआर्य (कर्मभूमि के आर्य मनुष्य)
96 भाजनांग नाम का कल्पवृक्ष
97 परोक्ष ज्ञान दो हैं-
1. मतिज्ञान 2. श्रुतज्ञान
98 परिग्रह परिमाण
99 नारद के दोनों मित्र का नाम :-
1. पर्वत-गुरु पुत्र 2. वसु -राजा
100 तेजांग नाम का कल्पवृक्ष
101 आभियोग्य जाति के देव
102 चर्या परीषह
103 आचार्य श्री विद्यासागर जी ने प्रथम मुनि दीक्षा ऐलक श्री समयसागर जी को द्रोणगिरि जी सिद्धक्षेत्र में दी थी।
104 प्रत्यक्ष ज्ञान तीन हैं :-
1. अवधिज्ञान
2. मनःपर्ययज्ञान
3. केवलज्ञान
105 किल्विषिक देव
106 तीन वातवलय के नाम :-
1. घनोदधि वातवलय
2. घनवातवलय
3. तनुवातवलय
107 अनुगामी अवधिज्ञान के तीन भेद :-
1. क्षेत्रानुगामी
2. भवानुगामी
3. क्षेत्रभवानुगामी
108 बाल-बाल मरण
109 ऋषभदेव के -
पिता का नाम - नाभिराय
माता का नाम - मरुदेवी
110 कार्तिक अमावश्या

1 शान्त्यष्टक का पाठ रचाया, अंधकार नयनों का भगाया।
उन आचार्य का नाम बताओ, सब मिल उनको शीश झुकाओ॥

2 चम्पापुर का राज्य है पाया, श्रीपाल राजा कहलाया।
मात-पिता का नाम बताओ, भक्ति की महिमा प्रगटाओ॥

3 देवगति को जिसने पाया, देवी की है सुन्दर काया।
वैमानिक में कम व ज्यादा, उम्र बताओ मेरे दादा॥

4 द्वीप समुद्र की संख्या भारी, गिन न सके हम तुम संसारी।
दो समुद्र के नाम बताओ, ढाईद्वीप में ढूंढ़ के लाओ॥

5 जीवन जिसने जग में पाया, मरकर छोड़ी सारी माया।
मरण कौन सा वह कहलाता, मुनिवर से है जिसका नाता॥

6 प्रजा के जैसा जीवन पाया, देवगति का जीव कहाया।
देव कौन से वे कहलाते, निज कर्मो का फल है पाते॥

7 ऋषभ देव ने दान है दीना, विद्या दे कल्याण है कीना।
अंक लिपी का ज्ञान कराया, किसे बताओ मेरे भाया॥

8 रामचन्द्र बलदेव कहावे, सब जन उनकी महिमा गावे।
कितनी आयु उनने पाया, ध्यान लगाकर कर्म खपाया॥

9 कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, भव्य जनों के एक सहारे।
कितनी वय में दीक्षा धारी, पूज्य बने सबके अनगारी॥

10 पूज्यपाद आचार्य हमारे, भव्य जनों के एक सहारे।
दूजा नाम है कौन बताए, नाम बताकर इनाम पाए॥

11 सोलम तीर्थंकर कहलाते, शान्तिनाथ शुभ नाम है पाते।
मात-पिता का नाम बताओ, विनय से उनको शीश नवाओ॥

12 इक पाठी अकलंक है स्वामी, रचना जिनकी जगमें नामी।
ब्रह्मचर्य व्रत किनसे लीना, नाम बताओ मोक्ष का जीना॥

13 पूज्यपाद आचार्य हमारे, भव्य जनों के बने सहारे।
ज्योति आँख की कैसे आई, सत्य बताओ मेरे भाई॥

14 समयसार नाटक है बनाया, मोक्ष महल का पथ अपनाया।
कवि का पक्का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

15 दण्डक वन में आहार लीना, रामचन्द्र शुभ धर्म है कीना।
युगल मुनि का नाम बताओ, महिमा उनकी खूब है गाओ॥

16 लौकान्तिक धरती पर आये, तीर्थंकर की जय-जय गाये।
कैसे है वैराग्य जगाया, ऋषभ देव का मोह भगाया॥

17 देव का तन है जिसने पाया, देवगति का जीव कहाया।
कहाँ पे कैसा जन्म है होता, कौन बताए समय न खोता॥

18 जंगल में जब आग है छाई, ग्रन्थ मिला ग्वाले को भाई।
उस ग्वाले का नाम बताओ, कुन्दकुन्द मुनि शीश नवाओ॥

19 शान्ति सागराचार्य हमारे, जन-जन को हैं प्राण से प्यारे।
कब औ कहाँ पर जन्म है पाया, दीक्षा लेकर छोड़ी माया॥

20 देखो कितनी सुन्दर काया, दुषमा-सुषमा काल में जाया।
महापुरुष वे कौन कहाते, बीस चार की संख्या पाते॥

21 जिन शासन की शान कहाते, समन्तभद्र शुभ नाम है पाते।
पहले का तुम नाम बताओ, श्री आचार्य को शीश नवाओ॥

22 महावीर अष्टक है बनाया, ख्याति खूब है जिसने पाया।
कवि का पक्का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

23 मुक्ति वधु को जिसने पाया, ध्यान लगा सब कर्म खपाया।
तिथी कौन सी तुम बतलाओ, ऋषभ देव निर्वाण है गाओ॥

24 सीता को जो हर कर लाया, पापी रावण वह कहलाया।
किसने उसका मान गलाया, चक्ररत्न से प्राण गँवाया॥

25 चन्द्र नखा को समझ है आया, नश्वर तन है नश्वर माया।
आर्या व्रत है उसने धारा, किन केवली का मिला सहारा॥

26 सरस्वती पूजा है बनाया, दशलक्षण भी आपने गाया।
कवि का पक्का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

27 कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, भव्य जनों के एक सहारे।
कितना जीवन उनने पाया, उम्र बताओ मेरे भाया॥

28 राजा के घर जन्म है पाया, पर चोरी का काम है भाया।
पहले का तुम नाम बताओ, शीघ्र निरंजन है बन जाओ॥

29 महापुण्य का फल है पाया, तीर्थंकर शुभ नाम कहाया।
कैसे उसका बंध है होता, किन गतियों में समय है खोता॥

30 लोहा भी सोना बन जाता, जिनके चरण का पर्श है पाता।
उन आचार्य का नाम बताओ, सब जन मिलकर शीश नवाओ॥

31 वृषभदत्त के पुत्र कहावे, ब्रह्मचर्य की महिमा गावे।
सपूत का तुम नाम बताओ, सिद्ध क्षेत्र पटना है जाओ॥

32 मोह का कैसा उदय है आया, मृत काया में राग जगाया।
बोधज्ञान अब कौन है देवे, रामचन्द्र जी शिवपथ लेवे॥

33 शान्ति सागराचार्य हमारे, जन-जन को हैं प्राण से प्यारे।
कब और कहाँ पर तन को त्यागा, व्रत समाधि ले धर्म निभाया॥

34 महापुण्य का फल है पावें, तीर्थंकर नेमि कहलावे।
मात-पिता का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

35 संस्कृत का है ग्रन्थ कहाया, जैनेन्द्र व्याकरण नाम है पाया।
रचा किन्होंने कौन बताए, उन आचार्य को शीश नवाए॥

36 पथ नेमि का है अपनाया, शिवपथ राजुल ने भी पाया।
मात-पिता का नाम बताओ, आर्या जी को शीश नवाओ॥

37 व्रत ले जीवन सफल बनाया, माँ सीता ने शिव पथ पाया।
जन्म उन्होंने कहाँ है पाया, कर समाधि जब छूटी काया॥

38 महापुण्य का फल है पावें, तीर्थंकर नेमि कहलावें।
आयु कितनी प्रभु ने पाया, कितनी ऊँची उनकी काया॥

39 नरक है जिसको निश्चित जाना, भव्य जीव क्षुल्लक का बाना।
महापुरुष का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

40 छोड़ के सब कुछ इक दिन जाना, मृत्यु को है गले लगाना।
मरण कौन सा है कहलाता, समदृष्टि से जिसका नाता॥

41 मैनासती ने कुष्ट मिटाया, भक्ति में शक्ति है दिखाया।
मात-पिता का नाम बताओ, जिन भक्ती में मन को लगाओ॥

42 ध्यान में लीन मुनिवर ठाड़े, कर्म आ गये उनके आड़े।
दूर किया उपसर्ग राम ने, कौन से मुनिवर खड़े ध्यान में॥

43 तीर्थंकर ने आहार पाया, हम सबने मिल पर्व मनाया।
पर्व कौन सा मिल के मनाते, ऋषभदेव को शीश नवाते॥

44 आगम का है पाठ पढ़ाया, जिनशासन का मान बढ़ाया।
जन्म कौन से नगर में पाया, श्री अकलंक गुरु ने भाया॥

45 मुनिवर देखो पिच्छी धारे, जीव दया का व्रत है पालें।
पिच्छी के तुम गुण है बताओ, कम से कम है पाँच गिनाओ॥

46 राजगृही का राज है पाया, राजा श्रेणिक वह कहलाया।
मात-पिता का नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ॥

47 भाई था उनको प्राण से प्यारा, पर भाई ने उसकों मारा।
कमठ के भाई का नाम बताओ, पोदनपुर से ढूढ के लाओ॥

48 पार्श्व प्रभु है सबसे न्यारे, तीर्थंकर की पदवी धारे।
कब और कहाँ से मुक्ति पाई, सही बताओ मेरे भाई॥

49 णमोकार शुभ मन्त्र सुनाया, देव गति में कुत्ता जाया।
मात-पिता का नाम बताओ, जीवन्धर जयकार लगाओ॥

50 प्रजा में देखो भय है भारी, सूर्य चन्द्रमा लगे प्रहारी।
भय को किसने दूर भगाया, कुलकर जिसने नाम है पाया॥

51 प्रथम तीर्थंकर उनको होना, ऋषभदेव है नाम सलोना।
किसने महाबल को बतलाया, दस भव पहले ज्ञान कराया॥

52 अन्तिम कुलकर वे कहलाते, नाभिराय शुभ नाम है पाते।
कितना जीवन काल बिताया, इस धरती पर जन्म था पाया॥

53 दशमी विजय का पर्व मनाया, राम के जैसा जीवन पाया।
कारण तीन हमें बतलाओ, जिनशासन की शान बढ़ाओ॥

54 पार्श्व प्रभु ने ध्यान लगाया, शत्रु ने पत्थर बरसाया।
शत्रु का तुम नाम बताओ, समता से सब कर्म नशाओ॥

55 णमोकार का मान बढ़ाया, जीवन्धर शुभ नाम है पाया।
मोक्ष कहाँ से उनने पाया, कामदेव का पद ललचाया॥

56 केवलज्ञान जिन्होंने पाया, भरत क्षेत्र में प्रथम कहाया।
प्रथम प्रभु का नाम बताओ, केवलज्ञानी तुम बन जाओ॥

57 सड़ा-सड़ा कर जिसे बनाया, सकल कंद का फल जो खाया।
खाद्य वस्तु का नाम बताओ, कभी भूलकर इसे न खाओ॥

58 आँतों को है शीघ्र गलाता, सुन्दर जीवन नाश कराता।
ऐसे पेय का नाम बताओ, बचकर जीवन सफल बनाओ॥

59 खट्टा मीठा स्वाद कहाय, साल-साल का मन को भाय।
खाद्य वस्तु का नाम बताओ, इसे त्याग न नरक में जाओ॥

60 जहरीला शृंगार कहाता, दूषित भोजन को भी बनाता।
कभी न उसको भूल लगाना, मिला है इसमें रक्त भी माना॥

61 कीड़ों की वो लार कहाता, धर्म अहिंसा शीघ्र नशाता।
वस्त्र कौन सा वह कहलाता, नाम बताओ मिलें न साता॥

62 सनत कुमार चक्री कहलाये, चन्द्रप्रभु की पूजा रचायें।
मोक्ष उन्होंने कहाँ से पाया, कामदेव का पद ललचाया॥

63 सेनापति में रत्न कहाया, भरत सभा में शोभा पाया।
एक पत्नी व्रत जिसने धारा, नाम बताओ उसका प्यारा॥

64 ऋषभदेव का जीव कहाया, वज्रनाभि चक्री पद पाया।
उनके पिता का नाम बताओ, तीर्थंकर को शीश नवाओ॥

65 पीठ के दर्शन ही कर पाते, तुंगीगिरी पर ध्यान लगाते।
कौन से मुनिवर नाम बताएँ, स्वर्ग पाँचवे में हैं जाएँ॥

66 अनन्तकायिक जीव कहाता, नरक निगोद हमें ले जाता।
वनस्पति का नाम बताओ, त्याग के जीवन सफल बनाओ॥

67 बैल की आँत में जिसे लगाया, पीट-पीट कर उसे बनाया।
उस वस्तु का नाम बताओ, उसे त्याग कर पुण्य कमाओ॥

68 बच्चों को मोटा है बनाती, आँख नशाती दाँत सड़ाती।
खाद्य पदार्थ का नाम बताओ, बच्चों को न कभी खिलाओ॥

69 हड्डी से है जिसे बनाया, दाँतों में फिर उसे लगाया।
उस पदार्थ का नाम बताओ, सुबह-सुबह क्यों पाप कमाओ॥

70 पशु वसा से जिसे बनाया, त्वचा की रक्षा हेतु लगाया।
उस पदार्थ का नाम बताना, धर्म अहिंसा सदा निभाना॥

71 नाभिराय के पुत्र कहाय, तीर्थंकर का पद है पाय।
कब और कहाँ से मोक्ष है पाया, सही-सही बतलाओ भाया॥

72 पीपल का शुभ वृक्ष कहाया, प्रभु ने केवलज्ञान है पाया।
तीर्थंकर का नाम बताओ, चौबीसी से ढूंढ़ के लाओ॥

73 सनत कुमार की सुन्दर काया, छह खण्डों की मिली है माया।
तीर्थंकर के काल में जन्मे, कौन से नाम बताओ क्षण में॥

74 पार्श्व प्रभु ने मोक्ष है पाया, सबने मिलकर दीप जलाया।
तिथी कौन सी हमें बताएँ, सिद्ध क्षेत्र को शीश नवाएँ॥

75 जीवन को है शीघ्र नशाती, मूर्ख मनुज के काम है आती।
लम्बी-लम्बी जिसकी काया, नाम बताओ मेरे भाया॥

76 शक्कर चर्बी से है बनाया, गोंद दवा भी जिसमें मिलाया।
खाद्य वस्तु का नाम बताओ, है बाजार से इसे न लाओ॥

77 पशु झिल्ली से जिसे है पाया, तथा जिलेटिन से है बनाया।
खाद्य वस्तु का नाम बताओ, प्राण जाएँ पर कभी न खाओ॥

78 सदा जीव उत्पन्न है होते, प्राणी की क्यों लाश है ढोते।
कभी न इससे तन को सजाना, व्यर्थ में क्यूं है पाप कमाना॥

79 लार का जब संयोग है पाया, त्रस जीवों का भार समाया।
खाद्य वस्तु का नाम बताओ, इसे त्याग कर पुण्य कमाओ॥

80 देखो पुण्य का उदय है आया, सेवक शुभ संदेश है लाया।
तीन कौन से हमें बताए, भरत चक्री सुन है हर्षाय॥

81 समवसरण की शोभा भारी, हर्षित देखो सब नर-नारी।
गणधर जी का नाम बताओ, प्रथम तीर्थंकर प्रथम है पाओ॥

82 श्रद्धा ना मन में है धारे, जिन वच लगते नमक से खारे।
जीव कौन सा वह कहलाता, गुणस्थान है कौन सा पाता॥

83 चतुर्दशी का पर्व है आया, दशलक्षण भी हमने मनाया।
आज कौन से मोक्ष पधारे, तीर्थंकर जो हमको प्यारे॥

84 देखो सबका मान गलाया, सम्यक् दृष्टि शीश नवाया।
कृति का सुन्दर नाम बताओ, जिनमन्दिर के सामने पाओ॥

85 जिनशासन का गौरव गाता, मन्दिर की पहचान कराता।
दूर से जिसको शीश नमावें, कृति का सुन्दर नाम बतावें॥

86 स्वर्ग कौन से आप पधारे, ऋषभ देव जी हमें सहारे।
नगर अयोध्या जन्म है पाया, देवों ने जयकार लगाया॥

87 पुण्य उदय से मिली है माया, पर सुभौम ने नरक है पाया।
तीर्थंकर के काल में जनमें, कौन से चक्री बताओ क्षण में॥

88 बालयति तीर्थंकर प्यारे, मल्लिनाथ जी हमें सहारे।
केवलज्ञान है उनने पाया, कितने दिन में बताओ भाया॥

89 जिन प्रतिमा पर जल की धारा, नित प्रति करना हमें सहारा।
कार्य कौन सा है कहलाता, श्रावक का कर्त्तव्य कहाता॥

90 दधि गुण जैसे भाव हमारे, मिले जुले परिणाम सहारे।
जीव कौन सा वह कहलाता, गुणस्थान है कौन सा पाता॥

91 सचित्त फलों को कभी न खाता, जीवदया व्रत मन में लाता।
प्रतिमा धारी कौन सा भैया, कहती है जिनवाणी मैया॥

92 वर्तमान के शासन नायक, जिनवाणी के है जो दायक।
सन्मति कहकर सभी पुकारे, कैसे नाम पड़ा है प्यारे॥

93 छह खण्डों का राज्य है पाया, सगर चक्री शुभ नाम कहाया।
तीर्थंकर के काल में जनमें, कौन से नाम बताओ क्षण में॥

94 कुण्डग्राम में जन्म है पाया, देवों ने जयकार लगाया।
कौन स्वर्ग से आप पधारे, वीर प्रभु जो हमें सहारे॥

95 स्वर्ग मोक्ष है हमें दिलाता, मिथ्यादर्शन दूर भगाता।
किसका दर्शन कौन बतावे, पल में सारे पाप नशावे॥

96 तीन पल्य की आयु पाया, मनुज गति का जीव कहाया।
भेद मनुज का हमें बताओ, कहाँ पे जन्मा ज्ञान कराओ॥

97 प्रमाद युत व्रत जिसने धारा, महाव्रतों का मिले सहारा।
जीव कौन से वे कहलाते, गुणस्थान है कौन सा पाते॥

98 श्रेष्ठ है श्रावक वे कहलाते, प्रतिमाधारी नाम है पाते।
भेद कौन से हमें बताना, तीनों को क्रम से समझाना॥

99 नरक का जिससे खुलता द्वारा, बम विस्फोट का वह व्यापारा।
कौन सा वह अतिचार कहाता, अनर्थदण्ड से बचो हे भ्राता॥

100 जीव नाश कर माँस है पाना, तथा मधु को चख के खाना।
अभक्ष्य का है भेद कहाता, कौन सा भइया मिले न साता॥

101 ऋषभदेव ने ज्ञान कराया, वंश कौन सा हमें बताया।
वंश कौन से तीन बताए, किसके हम है अंश कहाए॥

102 बालयति तीर्थंकर प्यारे, नेमिनाथ जी हमें सहारे।
जन्म कहाँ पर उनने पाया, शीघ्र बताओं मेरे भाया॥

103 पक्का केवलज्ञान है पाना, लौट के नीचे कभी न आना।
कौन सी श्रेणी मुनिवर चढ़ते, संयम से जीवन को मढ़ते॥

104 पर नारी व धन की आशा, हार-जीत हो तन की नाशा।
ऐसा चिन्तन नित ही करना, अतिचार है कौन सा धरना॥

105 शराब पीना भाँग है खाना, जीवन अपना व्यर्थ गँवाना।
अभक्ष्य का है भेद कहाता, कौन सा भइया मिले न साता॥

106 पुण्य उदय से नर तन पाया, भोगभूमि का जीव कहाया।
भोजन का तुम क्रम है बताओ, कितना भोजन ज्ञान कराओ॥

107 ज्ञान को जिनने सफल बनाया, चारित का पथ है अपनाया।
कितनी उम्र में दीक्षा धारे, विद्याधर के बने सहारे॥

108 महावीर का जीव कहाया, सिंह की जिसने पाई काया।
सम्यग्दर्शन गुण है धारा, किन गुरुवर का मिला सहारा॥

109 एक देशव्रत जिसने धारा, श्रावक पद का मिले सहारा।
जीव कौन सा वह कहलाता, गुणस्थान है कौन सा पाता॥

110 श्रद्धा और विवेक को धारे, कर्म करे नित जो भव तारे।
तीन भेद है कौन बताए, सच्चा श्रावक वो बन जाए॥

1 श्री पूज्यपाद आचार्य

2 श्रीपाल राजा के –
1. पिता का नाम – राजा अरिदमन
2. माता का नाम – रानी कुन्दप्रभा

3 वैमानिक देवी की आयु जघन्य से एक पल्य एवं उत्कृष्ट से 55 पल्य कही गयी है।

4 1. लवण समुद्र 2. कालोदधि समुद्र

5 पण्डित मरण

6 प्रकीर्णक देव

7 सुन्दरी बेटी को

8 श्रीरामचन्द्र जी की आयु 17 हजार वर्ष

9 ग्यारह वर्ष की उम्र में

10 देवनन्दि अथवा जिनेन्द्र बुद्धि

11 श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर के –
पिता का नाम – राजा विश्वसेन
माता का नाम – रानी ऐरादेवी

12 श्री रविगुप्त आचार्य

13 भगवान शान्तिनाथ की भक्ति करते हुए शान्त्यष्टक की रचना की जिसके प्रभाव से आँखों की खोई हुई रोशनी (ज्योति) पुनः आ गई।

14 पण्डित बनारसी दास

15 गुप्ति और सुगुप्ति नाम के दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराज

16 नृत्य करते हुए नीलांजना की मृत्यु से

17 उपपाद शय्या पर देवों का उपपाद जन्म होता है।

18 मणिरत्न नाम का ग्वाला अथवा कौण्डेश ग्वाला

19 शान्तिसागर जी का जन्म–सन् 1872 में। स्थान–बेलगाँव जिले के भोजग्राम के अन्तर्गत येलगुल ग्राम में

20 कामदेव महापुरुष

21 शान्तिवर्मा

22 श्री भागेन्दु अर्थात् भागचन्द्र कवि

23 माघ कृष्णा चतुर्दशी

24 नारायण श्री लक्ष्मण

25 अनन्तवीर्य केवली के पादमूल में

26 श्री द्यानतराय कविवर

27 95 वर्ष 10 माह 15 दिन

28 ललितांग

29 सोलहकारण भावनाओं के भाने पर तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होता है। नरक एवं देवगति में वे जीव अपना समय व्यतीत करते है।

30 आचार्य पूज्यपाद महाराज

31 सेठ सुदर्शन

32 जटायु पक्षी एवं सेनापति कृतान्त वक्र के जीव जो कि देव की पर्याय में थे, स्वर्ग से आकर श्रीराम को सम्बोधित किया।

33 भादौ सुदी दूज सन् 1955 को महाराष्ट्र के कुंथलगिरी सिद्धक्षेत्र में

34 श्री नेमिनाथ जी के
पिता का नाम – समुद्र विजय राजा
माता का नाम – शिवादेवी रानी

35 आचार्य पूज्यपाद स्वामी

36 राजुल के
पिता का नाम – राजा उग्रसेन
माता का नाम – रानी जयावती

37 सोलहवें स्वर्ग में प्रतीन्द्र देव

38 श्री नेमिनाथ भगवान की आयु–1000 वर्ष

काया की ऊँचाई – 10 धनुष
39 नारद महापुरुष
40 बाल मरण
41 मैनासती के
पिता का नाम – पुहुपाल राजा
माता का नाम – पद्म रानी
42 देशभूषण व कुलभूषण मुनि
43 अक्षय तृतीया
44 दक्षिण प्रान्त के कांजीवरम्
45 पिच्छी के पाँच गुण :-1. लघुता 2. मृदुता 3. हल्कापन 4. धूल पसीना अग्राह्यता 5. सुन्दरता
46 राजा श्रेणिक के
पिता का नाम – उप श्रेणिक राजा
माता का नाम – इन्द्राणी रानी
47 मरुभूति
48 श्रावण शुक्ला सप्तमी (मुकुट सप्तमी) को सम्मेद शिखर जी से
49 जीवंधर के
पिता – राजा सत्यन्धर
माता – रानी विजया
50 प्रतिश्रुति कुलकर ''प्रथम''
51 आदित्यगति मुनिराज
52 एक पूर्व कोटि वर्ष
53 1. भरत चक्री की विजय यात्रा प्रारम्भ
2. लक्ष्मण ने रावण का वध किया
3. कौरव का अज्ञातवाश से लौटना
54 शम्बर नामक ज्योतिषी देव
55 सिद्धवर कूट
56 अनन्त वीर्य
57 साबूदाना
58 कोल्डड्रिंक्स (पेप्सी, कोको कोला आदि)
59 आचार
60 नेलपॉलिस
61 रेशम का वस्त्र
62 सिद्धवर कूट
63 जयकुमार
64 वज्रसेन
65 बलदेव मुनि
66 जमीकंद – आलू, प्याज आदि
67 चाँदी का वर्क
68 चॉकलेट
69 टूथपेस्ट – कोलगेट, सिबाका
70 ग्लिसरीन
71 प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान माघ कृष्ण चौदस को कैलाश पर्वत से
72 अनन्तनाथ चौदहवें तीर्थंकर
73 धर्मनाथ तीर्थंकर
74 श्रावण शुक्ला सप्तमी – श्री सम्मेदशिखर जी से
75 सिगरेट, बीड़ी
76 आइस्क्रीम (डब्बा बंद)
77 कैपसूल
78 चमड़े की बनी बस्तुएँ
79 दाल और दही के संयोग से द्विदल
80 1. पुत्र रत्न की प्राप्ति।
2. आयुधशाला में चक्र रत्न का उत्पन्न होना।
3. आदिनाथ प्रभु को केवलज्ञान प्राप्त होना।
81 वृषभसेन गणधर
82 प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थान

83 श्री वासुपूज्य भगवान
84 मानस्तम्भ
85 मन्दिर जी का शिखर
86 सर्वार्थसिद्धि नामक अनुत्तर विमान से
87 श्री अरनाथ तीर्थंकर के काल में
88 दीक्षा के छह दिन बाद
89 जिन प्रतिमाभिषेक (अभिषेक)
90 तृतीय मिश्र अथवा सम्यक्त्व-गुणस्थान
91 पाँचवी सचित्तत्याग प्रतिमा
92 बालक वर्द्धमान को देखते ही दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराजों की तत्त्व सम्बन्धी शंकाओं का समाधान हो गया था तव मुनियों ने वर्द्धमान का नाम सन्मति रखा।
93 अजितनाथ भगवान के काल में
94 पुष्पोत्तर विमान से
95 देवों के देव जिनेन्द्र देव का दर्शन
96 उत्कृष्ट भोगभूमि का मनुष्य। देव कुरु अथवा उत्तरकुरु में जन्मा
97 प्रमत्त विरत छटवे गुणस्थान वर्ती मुनिराज
98 उत्तम, मध्यम और जघन्य के भेद से प्रतिमाधारी श्रावक तीन भेद वाले हो जाते हैं -

10 वी एवं 11 वी प्रतिमाधारी
- उत्कृष्ट श्रावक
7 वी 8 वी एवं 9वी प्रतिमाधारी
- मध्यम श्रावक
पहली से छटवी प्रतिमा तक
- जघन्य श्रावक

99 हिंसादान नामक अनर्थदण्ड
100 त्रसघात नामक अभक्ष्य
101 ऋषभदेव ने तीन वंश की स्थापना की

1. क्षत्रिय वंश
2. वैश्य वंश
3. शूद्र वंश

ऋषभदेव जी परम्परा के होने से हम क्षत्रिय वंश के ही अपने को मान सकते हैं अथवा व्यवसाय कर्म होने से वैश्य वंश के कह सकते हैं।

102 शौरीपुर बटेश्वर
103 क्षपक श्रेणी
104 अनर्थदण्ड व्रत का अतिचार
105 प्रमादकारक अभक्ष्य
106 उत्तम भोगभूमि में तीन दिन के बाद हर्र के बराबर, मध्यम भोगभूमि में दो दिन के बाद बहेड़ा के बराबर, जघन्य भोगभूमि में एक दिन के अन्तराल से आँवले के बराबर आहार ग्रहण करते हैं।
107 आचार्य ज्ञानसागर जी (भूरामल जी) ने 68 वर्ष की उम्र में मुनि दीक्षा अंगीकार की थी।
108 अमितकीर्ति अथवा अमितप्रभ/ अजितञ्जय एवं अमित देव नामक दो मुनिराज
109 पाँचवा संयमासंयम अथवा देशविरत गुणस्थान
110 श्रावक के तीन भेद होते हैं :-

1. पाक्षिक श्रावक
2. नैष्ठिक अथवा व्रती श्रावक
3. साधक श्रावक

1 गौ नर मूत्र का सेवन करता, अज्ञानी न पाप से डरता।
अभक्ष्य का है भेद कहाता, कौन सा भइया धर्म नशाता॥

2 सम्यग्दर्शन जिसने धारा, पर व्रत का न मिला सहारा।
जीव कौन सा वह कहलाता, गुण स्थान है कौन सा पाता॥

3 पहली मछली जिसने त्यागा, लोभ किया न बन्धा है तागा।
धीवर का तुम नाम बताओ, दृढ़ संकल्प को सदा निभाओ॥

4 देखो कैसा कर्म है छाया, मुनि होकर भी नगरी जलाया।
मुनि का सच्चा नाम बताना, कभी क्रोध न मन में लाना॥

5 न्याय नीति का ग्रन्थ कहाता, जिनआगम से जिसका नाता।
सोमदेव सूरी की रचना, नाम बताओ पाप से बचना॥

6 रत्नकरण्डक का लिया सहारा, जिसमें श्रावक का आचारा।
ज्ञानसागर गुरुवर की रचना, नाम बताओ पाप से बचना॥

7 पाण्डव कृष्ण की जिसमें गाथा, हरिवंशपुराण है वह कहलाता।
रचा है किसने हमें बताना, गुरुवर जी को शीश नवाना॥

8 बाँट चार है तुम्हें बताना, कुल चालीस किलो है माना।
वस्तु कोई न शेष बचाना, तौल-तौल कर सभी बताना॥

9 प्रश्नोत्तर की जिसमें माला, रत्नमालिका नाम हवाला।
रचना किसकी हमें बताना, पढ़कर जीवन सफल बनाना॥

10 मन्दिर जी है हमको जाना, दर्शन करके वापस आना।
क्या बोलना हमें बताना, जिनशासन के नियम निभाना॥

11 दूर गूढ़ प्रासुक भूमि पर, मल मूत्रादिक का क्षेपण कर।
कौन सा व्रत है मुनिवर पाले, मोक्षमार्ग पर हमें सहारे॥

12 शत्रु ने उपसर्ग है कीना, डिगे न मुनिवर ध्यान में लीना।
क्षण में मुक्ति लाभ है पाया, भेद बताओ केवली भाया॥

13 धरा पूर्व में याद जो आया, सम्यग्दर्शन फिर है पाया।
कारण कौन सा हमें बताना, चउगतियों में उसे है पाना॥

14 रहने को है भवन बनाया, झाड़ा पोंछा जीव नशाया।
कौन सी हिंसा वो कहलाती, कर विवेक से काम बताती॥

15 भोजन मीठा मधुर बनाया, चख-चख कर है सबने खाया।
खाना-पीना बात बनाना, कौन सा प्रमाद है हमें बताना॥

16 इन्द्र सहित सब परिजन जाते, हम तो उनके दास कहाते।
देख प्रभु समदर्शी बनते, कौन सा कारण जिनवर कहते॥

17 शत्रु ने उपसर्ग है कीना, डिगे व मुनिवर ध्यान में लीना।
क्षण में केवलज्ञान है पाया, भेद बताओ केवली भाया॥

18 बिन आहार के तन न चलता, प्रासुक भोजन से व्रत पलता।
इधर-उधर से खोज के पाना, कौन सा मूलगुण हमें बताना॥

19 परम पूज्य है देव हमारे, भवसागर से हमको तारे।
कैसे अर्घ है उन्हें चढ़ाना, खाली हाथ न मन्दिर जाना॥

20 ऋषभदेव की जिसमें गाथा, आदि पुराण है ग्रन्थ कहाता।
रचा है किसने हमें बताना, गुरुवर को है शीश नवाना॥

21 धीवर की है कथा बताई, गुरुवर ने है दया जताई।
ज्ञानसागर गुरुवर की रचना, नाम बताओ पाप से बचना॥

22 नाम 'परीक्षामुख' कहलाता, न्याय का ज्ञान हमें है कराता।
किन गुरुवर ने लिखी है रचना, जिनवाणी पढ़ पाप से बचना॥

23 समदर्शन का घात कराती, है कषाय का नाम वो पाती।
चउगतियों में जिसका नाता, नाम बताओ मिले न साता॥

24 खेती करना धन है कमाना, जान बूझ न जीव सताना।
कौन सी हिंसा हमें बताना, दान पुण्य कर पाप नशाना॥

25 सुन्दर रूप है मीठी वाणी, लगती है परियों की रानी।
कथा में नारी के गुण गाना, कौन सा प्रमाद हमें बताना॥

26 जिनवाणी है मार्ग बताती, शिवपथ पर है हमें चलाती।
कैसे अर्घ हैं उन्हें चढ़ाना, खाली हाथ न शीश नवाना॥

27 लम्बी-लम्बी जिसकी काया, सर्प बना जोड़ी थी माया।
प्राण है उसके कितने होते, सही बताओ वक्त क्यों खोते॥

28 पूर्व कर्म का फल है पाया, कितना कष्ट है पाप सताया।
सम्यक् दर्शन फिर है पाया, कारण कौन सा नरक में भाया॥

29 केवलज्ञान है जिनने पाया, पर उपदेश न उनको भाया
विहार करते पर न बोले, केवली कौन से भेद है खोले॥

30 नासा दृष्टि सुन्दर काया, वीतराग मय मूरत पाया।
सम्यक् दर्शन फिर है पाया, कौन सा कारण धरा पे भाया॥

31 जन्म मरण से दुख ही पाता, जरा में मिलती कभी न साता।
द्रव्य कौन सी चरण चढ़ाते, रोग है सारे भव के नशाते॥

32 मुझसा जग में कोइ न ज्ञाता, औरों से क्या इसका नाता।
कौन सा मद अज्ञानी धारे, बालक को फिर कौन है तारे॥

33 परिमार्जन कर ग्रन्थ उठाना, तथा वस्तु को देख रखाना।
कौन सा गुण है मुनिवर धारे, कर्म है सारे उनसे हारे॥

34 पूज्य दिगम्बर गुरु हमारे, भवसागर से हमको तारे।
कैसे अर्घ है उन्हें चढ़ाते, क्षण में सारे पाप नशाते॥

35 निज तन धन की रक्षा करना, भले शत्रु से पड़ेगा लड़ना।
वध कर राम ने सीता लाया, कौन सा हिंसा पाप कहाया॥

36 मैं मारुँगा भाव बनाना, मन में बदला लेना ठाना।
कौन सा भेद है वह कहलाता, हिंसा काफल नरक वो पाता॥

37 है कषाय की जिसमें गाथा, कषाय पाहुड नाम कहाता।
किन गुरुवर ने लिखी है रचना, जिनवाणी पढ़ पाप से बचना॥

38 अष्ट कर्म हैं दुख के दाता, छूटे इनसे मेरा नाता।
पूजा में है द्रव्य चढ़ाते, कौन सी भइया फल तब पाते॥

39 जन्म महोत्सव इन्द्र मनाया, मेरु पर अभिषेक कराया।
जल है उसने कहाँ से लाया, नाम उदधि का बताओ भाया॥

40 नाना मेरे बहु बलशाली, उनका बार न जाय खाली।
गर्व है करना पाप कमाना, कौन सा मद वो हमें बताना॥

41 जिन भक्ति का फल है पाया, जल से तन का रोग भगाया।
पिता के उसका नाम बताओ, पुत्री विशल्या लक्ष्मण ब्याहो॥

42 अंधकार है मोह कहाता, मोही प्राणी सुख न पाता।
द्रव्य कौन सी चरण चढ़ाते, मोह नाशकर ज्ञान है पाते॥

43 परमौदारिक जिनकी काया, केवलज्ञानी नाम है पाया।
कौन सा वे आहार हैं पाते, विहार कर उपदेश सुनाते॥

44 पल-पल क्षण-क्षण मिटती काया, रोके कौन मरण को भाया।
मरण कौन सा कौन बताए, जीवन अपना सफल बनाए॥

45 मिथ्या भाव है बुरा कहाता, भव-भव की वो सैर कराता।
भेद कर्म का वो कहलाता, कौन सा नाम बताओ भ्राता॥

46 सदा-सदा से जीव का नाता, सुख-दुख पाता पाप कमाता।
संज्ञा कौन सी चार कहाती, नाम बताओ बेटा नाती॥

47 प्रभु सम निर्मल पद है पाना, छोड़ के सब संसार है जाना।
द्रव्य कौन सी चरण चढ़ाते, खण्ड खण्ड न जीवन पाते॥

48 करो काम नित हमें बताती, कभी काम से जी न चुराती।
चींटी का तन जिसने पाया, कितने प्राण है बताओ भाया॥

49 है संसार दुखों का सागर, सुख से खाली मेरी गागर।
द्रव्य कौन सी चरण चढ़ाते, मुक्ति का फिर धाम है पाते॥

50 दोष अठारह दूर भगाया, राग-रोष न जिनको भाया।
प्रभु कौन सा गुण है पाते, नर व नाहर शीश झुकाते॥

51 एकेन्द्रिय है जीव कहाता, वनस्पति की काया पाता।
भेद कौन से दो है बताना, नाम बताकर इनाम पाना॥

52 मोक्षमार्ग में साथ निभाता, सुख का दाता दुक्ख नशाता।
पवित्र आतम को है बनाता, कर्म कौन सा शुभ कहलाता॥

53 तप का वह है भेद कहाता, स्वाध्याय शुभ नाम है पाता।
लाभ है इसके कौन बताए, कम से कम है तीन गिनाए॥

54 काम दाह है सदा जलाती, आतम का शुभ ज्ञान नशाती।
द्रव्य कौन सी चरण चढ़ाते, काम भाव को शीघ्र नशाते॥

55 मोक्षमार्ग न जिसने जाना, मिथ्यादृष्टि जीव कहाना।
भेद कौन से दो बतलाना, छहढाला तो ज्ञान खजाना॥

56 चन्द्र सूर्य का ज्ञान कराये, मिथ्यातम को दूर भगाये।
भेद अंग का वह कहलाता, कौन सा दृष्टिवाद कहाता॥

57 दुर्गतियों में है ले जाता, सदा-सदा वह दुःख का दाता।
कर्म कौन सा वह कहलाता, है पदार्थ का भेद कहाता॥

58 ना गुरु है पर गुरु कहाया, गुरु का पद था पहले पाया।
कौन सा वह निक्षेप कहाता, भूत भविष्य की बात बताता॥

59 ना लोहे सम भारी काया, आक तूल सम उड़ न पाया।
कर्म कौन सा जीव सहाई, नाम बताओ मेरे भाई॥

60 जल्ल मल्ल से घिरी है काया, तप करते मुनि कर्म खपाया।
कौन सा मूलगुण मुनिवर धारे,जलकायिक भी जीव सम्हालें॥

61 पर को कभी न रोक है पावे, न तो पर से वे रुक जावे।
जीव कौन से वे कहलाते, तीन लोक में निवास पाते॥

62 महापुरुष है जिनको पाले, पाँच पाप को पूर्ण निकाले।
मुनिवर कौन से व्रती कहाते, पथ पर चलते मुक्ति पाते॥

63 महावीर है नाम रखाया, पर गुण काम न कुछ भी भाया।
कौन सा वह निक्षेप बताना, समीचीन व्यवहार चलाना॥

64 समवसरण में शोभित जिनवर, दिव्यध्वनि को झेले गणधर।
आर्या कम अरु मुनिगण ज्यादा, किन तीर्थंकर से था नाता॥

65 पाप उदय से नरक में पड़ते, कुत्तों सम वे नित ही लड़ते।
कौन भिड़ावे नरक में जाकर, कहाँ बताओं यहाँ पे आकर॥

66 धरा पे न आकाश में चलते, किन्तु धरा पर पग है धरते।
नामकर्म का फल है पाया, कौन सा नाम बताओ भाया॥

67 सोलम तीर्थंकर कहलाते, सुर नरेन्द्र सब शीश झुकाते।
कितनी आयु प्रभु ने पाई, सही बताओ मेरे भाई ॥

68 देखो वीर की प्रतिमा प्यारी, तीन लोक में सबसे न्यारी।
कौन सा वह निक्षेप बताना, वीर प्रभु की याद कराना॥

69 देव नारकी से ना नाता, बिन शक्ति के मोक्ष न पाता।
कर्म कौन सा जीव है पाता, नाम कर्म का भेद कहाता॥

70 अष्टम तीर्थंकर कहलाते, हम सब मिलकर शीश नवाते।
कितनी आयु प्रभु ने पाई, सही बताओं मेरे भाई॥

71 ऊँचनीच का भेद न पाते, न देवी से रखते नाते।
देवों के तुम नाम बताओ, कहाँ वे रहते खोज लाओ॥

72 नारी का तन जिसने पाया, इन्द्र है उसका स्वामी कहाया।
अगले भव से मोक्ष है जाना, उसका सच्चा नाम बताना॥

73 मथुरा जी से मोक्ष पधारे, जम्बूस्वामी हमें सहारे।
कौन से केवली वे कहलाये, सब मिल उनको शीश झुकायें॥

74 सम्यग्दृष्टि वे कहलाते, मुनि को पर न शीश नवाते।
महापुरुष वे कौन कहाए, हमको सच्चा मार्ग बताए॥

75 अशुभ से बचकर शुभ में लगाना,मन वच काय को रोध है पाना।
कौन सा गुण है वह कहलाता, श्री आचार्य की याद कराता॥

76 कुंथलगिरी से मोक्ष पधारे, कुलभूषण मुनि हमें सहारे।
कौन से केवली वे कहलाये, सब मिल उनको शीश झुकाये॥

77 पुण्य उदय से पद है पाया, सोने जैसी चमके काया।
जन्म से कितने ज्ञान के धारी, तीर्थंकर पदवी है न्यारी॥

78 पक्ष में दो अरु माह में चार, पर्व है आते सदाबहार।
नाम पर्व का हमें बताना, संयम धर जीवन सफल बनाना॥

79 ग्रीष्म काल में तपती काया, शैल शिखर पर ध्यान लगाया।
योग कौन सा मुनिवर धारे, कर्म शत्रु भी जिनसे हारे॥

80 समवशरण तज ध्यान लगाया, योग निरोध है तब कर पाया।
मुक्ति वीर प्रभु ने पाया, कितने काल में बताओ भाया॥

81 आयु नित ही बढ़ती जावे, तन बुद्धि वैभव भी बढ़ावे।
काल कौन सा हमें बताना, जिन आगम की शान बढ़ाना॥

82 तीन कोश की ऊँची काया, पास न रखते अपने माया ।
जन्म कहाँ पर मनुज है पाते, मरकर निश्चित स्वर्ग है जाते॥

83 योग निरोध का भाव है जागा, समवशरण प्रभु ने है त्यागा।
कितना काल था हमें बताओ, ऋषभदेव जयकार लगाओ॥

84 साँय-साँय कर हवा है बहती, मुनि मुद्रा पर ध्यान में रहती।
योग कौन सा मुनिवर धारे, शीत काल में हमें सहारे॥

85 धर्म तीर्थ का ज्ञान कराया, गणधर जी ने था समझाया।
कम से कम संख्या बतलाओ, तीर्थंकर की सभा में जाओ॥

86 कर्म काट मुक्ति है पाना, एक समय में मिले ठिकाना।
गति कौन सी सिद्ध हैं जाते, हमें छोड़कर शिवपुर पाते॥

87 चन्द्रबिम्ब की किरण निराली, चम-चम चमके शीतलशाली।
कितनी किरणें कुल है बताना, जिनबिम्बों को शीश नवाना॥

88 वर्षायोग है मुनिवर धारे, जीव दया के बने सहारे।
तिथी कौन सी हमें बताना, आदि अन्त है ज्ञान कराना॥

89 तीर्थंकर का पद है पाना, किन चरणों में पड़ेगा जाना।
सब जीवों का हित है भाते, सत्य तत्थ का ज्ञान कराते॥

90 आयु नित ही घटती जावें, तन बुद्धि वैभव भी घटावें।
काल कौन सा हमें बताना, पाप-पुण्य का फल है पाना॥

91 शिवपथ सुन्दर हमें बताया, तीर्थंकर का पद है पाया।
समवसरण की सभा है भाई, कितने ऊपर इन्द्र लगाई॥

92 योग निरोध का भाव है जागा, समवशरण प्रभु ने है त्यागा।
कितना काल था हमें बताओ, पार्श्वप्रभु जयकार लगाओ॥

93 जलबाणों से कभी न डरते, वर्षा काल में कर्म से लड़ते।
मुनिवर कौन सा योग है धारें, तरुतल देखो अचल से ठांड़े॥

94 धर्मतीर्थ का ज्ञान कराया, गणधर जी ने था समझाया।
सबसे ज्यादा हमें बताना, तीर्थंकर की सभा में जाना॥

95 नौ हजार गज सम बल पाया, भोग भूमि का मनुज कहाया।
कितनी आयु है वह पावें, तथा मरण कर कहाँ है जावे॥

96 चन्द्र सूर्य का गगन ठिकाना, विमान देवों का है कहाना।
कितनी ऊपर धरा से रहते, सही बताओ जिनवर कहते॥

97 इक तन छूटा दूजा पाया, मार्ग में तीन समय है गँवाया।
गति कौन सी नाम बताना, बार-बार मरकर है पाना॥

98 नित्य सदा है वस्तु रहती, हठ करता वह कभी न मिटती।
मिथ्यादृष्टि जीव कहाता, नाम कौन सा आगम गाता॥

99 तन में रहता चेतन प्यारा, तन का बनता कौन सहारा।
आहार के तुम भेद बताओ, अच्छे बच्चे नाम गिनाओ॥

100 मिले जुले परिणाम हमारे, मोह भाव के बने सहारे।
कौन सा गुणस्थान कहाता, मरण जहाँ न जीव है पाता॥

101 राग सहित व राग रहित हो, देव सभी वे पूज्य हमें हो।
नमन करें सब शीश झुकाएँ, मिथ्याभाव को कौन सा पाए॥

102 पुद्गल को जो चेतन माने, इन्द्रिय सुख को सच्चा जाने।
मिथ्यादृष्टि जीव कहाता, नाम कौन सा आगम गाता॥

103 चेतन क्या ? तन क्या ? मैं जानूँ, धर्म कर्म मैं क्या पहचानूँ।
खाता-पीता समय गँवाता, मिथ्यादृष्टि कौन कहाता॥

104 जल रेखा सम उसकी लीला, यथाख्यात की घातक शीला ।
उस कषाय का नाम बताओ, उसे त्याग योगी बन जाओ ।

105 देवों की है सुन्दर काया, पुण्य उदय से मिली है माया।
देव कौन सा आहार करते, संयम से न जीवन मढ़ते॥

106 वनस्पति का तन है पाया, एकेन्द्रिय का जीव कहाया।
पेड़ कौन सा आहार करता, सारा जीवन दुखमय पलता॥

107 चित्र-विचित्र रूप के धारी, कर्मों की देखो बलिहारी।
मनुज कौन से वे कहलाते, कुभोग भूमि में मिल पाते॥

108 ज्ञान ध्यान का ग्रन्थ कहाता, गुरु की गौरव गाथा गाता।
ज्ञानार्णव शुभ नाम है पाया, गुरु का नाम बताओ भाया॥

109 तीर्थंकर ने जन्म है पाया, सारे जग में आनन्द छाया।
देवों ने कैसे है जाना, ज्ञात तुम्हें हो शीघ्र बताना॥

110 पर मन की बातों को जाने, सीधी सरल दशा पहचाने।
मुनिवर ज्ञानी हमें बताना, भेद ज्ञान का सच्चा जाना॥

1 अनुपसेव्य नाम का अभक्ष्य
2 चौथा गुणस्थान अविरत सम्यक्त्व
3 मृगसेन धीवर
4 द्वीपायन मुनि
5 नीति वाक्यामृत
6 मानव धर्म
7 श्री जिनसेन आचार्य
8 चार बाँट, 1, 3, 9, 27 किलो के बनेंगे।
9 राजर्षि अमोघवर्ष
10 मन्दिर जी में प्रवेश करते समय ऊँ जय जय जय, निस्सही निस्सही निस्सही, नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु, बोलना चाहिए एवं लौटते समय अस्सहि अस्सहि अस्सहि बोलना चाहिए।
11 उत्सर्ग समिति
12 अन्तःकृत केवली
13 जातिस्मरण
14 आरम्भी हिंसा
15 भोजन कथा नाम का प्रमाद
16 जिनमहिमा दर्शन
17 उपसर्ग केवली
18 एषणा समिति
19 जिनेन्द्र देव के समक्ष पाँच परमेष्ठी के प्रतीक पाँच अर्घ चढ़ाना चाहिए।
20 श्री जिनसेन आचार्य
21 दयोदय महाकाव्य
22 श्री माणिक्य नन्दी आचार्य
23 अनन्तानुबंधी मान कषाय
24 उद्योगी हिंसा
25 स्त्री कथा
26 जिनवाणी के समक्ष प्रथमानुयोग, करणानुयोग, द्रव्यानुयोग एवं चरणानुयोग के प्रतीक चार अर्घ चढ़ाना चाहिए।
27 सर्प के दस प्राण होते हैं।
28 वेदना कारण
29 मूक केवली
30 जिनबिम्ब दर्शन
31 जल 'द्रव्य'
32 ज्ञान मद
33 आदान निक्षेपण समिति
34 मुनिराज को सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र के प्रतीक तीन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
35 विरोधी हिंसा
36 संकल्पी हिंसा
37 आचार्य गुणधर स्वामी
38 धूप
39 क्षीरसागर से
40 जाति मद
41 विशल्या के पिता का नाम -?
42 दीपक
43 नोकर्माहार
44 अवीचि मरण
45 मोहनीय कर्म का भेद (दर्शनमोहनीय)
46 चार संज्ञाएं :-
1. आहार 2. भय 3. मैथुन 4. परिग्रह
47 अक्षत

48 चींटी के सात प्राण होते हैं :-
तीन इन्द्रिय प्राण, आयु, श्वासोच्छ्वास, वचन बल और कायबल।

49 फल

50 वीतरागता

51 वनस्पति के दो भेद :-
1. साधारण वनस्पति 2. प्रत्येक वनस्पति

52 पुण्य कर्म

53 स्वाध्याय के लाभ :-
1. अज्ञान का नाश एवं आनन्द (सुख) की उत्पत्ति होती है।
2. असंख्यात गुणी कर्मो की निर्जरा होती है।
3. सहनशीलता का विकास होता है।
4. देवों के द्वारा पूजा अतिशय की प्राप्ति होती है।

54 पुष्प

55 मिथ्यात्व के दो भेद :-
1. अगृहीत मिथ्यात्व 2. गृहीत मिथ्यात्व

56 चन्द्रप्रज्ञप्ति एवं सूर्यप्रज्ञप्ति

57 पाप कर्म

58 द्रव्य निक्षेप

59 अगुरुलघु नामकर्म

60 अस्नान

61 सूक्ष्म जीव

62 महाव्रती

63 नाम निक्षेप

64 धर्मनाथ एवं शान्तिनाथ तीर्थंकर के समवसरण में आर्यिकाएँ कम तथा मुनिगण ज्यादा थे।

65 तीसरे नरक में

66 विहायोगति नाम कर्म

67 श्री शान्तिनाथ भगवान की उम्र :-
1 लाख वर्ष

68 स्थापना निक्षेप

69 संहनन नाम कर्म

70 श्री चन्द्रप्रभ भगवान की आयु :-
10 लाख पूर्व

71 अहमिन्द्र एवं लौकान्तिक जिनमें अहमिन्द्र देव नौ ग्रैवेयक, नौ अनुदिश एवं पाँच अनुत्तर विमानों में निवास करते हैं तथा लौकान्तिक देव ब्रह्म स्वर्ग के अन्त में रहते हैं।

72 सौधर्म इन्द्र की इन्द्राणी शची

73 अनुबद्ध केवली

74 तीर्थंकर

75 गुप्ति (मन, वचन और काय)

76 उपसर्ग केवली

77 तीर्थंकर जन्म से तीनज्ञान के धारी होते हैं :-1. मतिज्ञान 2. श्रुतज्ञान 3. अवधिज्ञान

78 अष्टमी और चतुर्दशी पर्व

79 आतापन योग

80 दो दिन

81 उत्सर्पिणी काल

82 भोगभूमि (उत्तम) में

83 आदिनाथ भगवान ने 14 दिन पहले योग निरोध करने के लिए समवसरण छोड़ा।

84 अभ्रावकाश योग

85 पार्श्वनाथ भगवान के दस गणधर

86 अवग्रहगति अर्थात् ऋजुगति

87 चन्द्रबिम्ब की 12 हजार किरणें

88 वर्षायोग स्थापना–अषाढ़ माह की पूर्णिमा वर्षायोग निष्ठापना–कार्तिक माह की अमावश्या

89 केवली अथवा श्रुतकेवली के पादमूल में ही तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होता है।

90 अवसर्पिणी काल

91 पाँच हजार धनुष (बीस हजार हाथ) ऊपर

92 योग निरोध करने के लिए प्रभु ने एक माह पूर्व समवसरण छोड़ दिया था।

93 वृक्ष मूल योग

94 सुमतिनाथ भगवान के 116 गणधर

95 उत्तम भोगभूमि के जीव तीन पल्य की आयु प्राप्त कर, आयु के अन्त में मरण कर दूसरे स्वर्ग तक जाते हैं।

96 पृथ्वीतल से 880 योजन ऊपर – चन्द्र विमान

पृथ्वीतल से 800 योजन ऊपर – सूर्य विमान

97 गोमूत्रिका नामक विग्रहगति

98 एकान्त मिथ्यादृष्टि

99 आहार के छह भेद हैं :–

1. नो कर्माहार–केवली का
2. कर्माहार –नारकियों का
3. कवलाहार– मनुष्यों एवं तिर्यञ्चों का
4. लेपाहार – वनस्पति आदि का
5. ओजाहार–अण्डस्थ पक्षियों का
6. मानसिक आहार–देवों का

100 तृतीय सम्यक्त्व–मिथ्यात्व (मिश्र) गुणस्थान

101 वैनयिक मिथ्यादृष्टि

102 विपरीत मिथ्यादृष्टि

103 अज्ञान मिथ्यादृष्टि

104 संज्ज्वलन कषाय

105 मानसिक आहार अथवा अमृत का आहार

106 पेड़ लेपाहार करते हैं।

107 अन्तर्द्वीपज म्लेच्छ

108 श्री शुभचन्द्र आचार्य

109 इन्द्रों के आसन कम्पायमान होने लगते हैं तथा स्वयमेव नाद होने लगता है।

कल्पवासियों में	–	घंटानाद
ज्योतिषियों में	–	सिंहनाद
व्यन्तरवासियों में	–	भेरीनाद
भवनवासियों में	–	शंखनाद

110 ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानी मुनिराज

1 विद्याधर के हैं लघु भाया, शान्ति अनन्त नाम था पाया ।
मुनि बने सब नाम बताएं, गुरु शिष्य को शीश नवाएं ॥

2 प्राण सहित है जीवन गाथा, प्राण रहित माटी कहलाता ।
दस प्राणों के नाम बताओ, सही कहो तो इनाम पाओ ॥

3 साततत्त्व में इक तत्त्व है आया, जीव नाम है जिसने पाया ।
परिभाषा उसकी बतलाओ, पढ़ो लिखो तुम ज्ञान बढ़ाओ ॥

4 इक लख पूत सवा लख नाती, ता रावण घर दिया ना बाती ।
कैसे नाम पड़ा था उसका, रावण नरक वास है जिसका ॥

5 भक्ति से ही मुक्ति मिलती, भव-भव की आपद है टलती ।
भक्ति कौन सी मुनिवर पढ़ते,जब आचार्य को वंदन करते ॥

6 कैकसी माँ ने खुशी मनाई, रत्नश्रवा घर बजी बधाई ।
दस मुख रावण वह कहलाया, नाम दशानन कैसे पाया ॥

7 मध्यलोक के बीच में पर्वत, नाम सुमेरु देव है अर्चत ।
चार वनों के नाम बताओ, कहाँ कहाँ सबको समझाओ ॥

8 द्रव्य भाव दो भेद हैं जिसके तन चेतन परिणाम हैं इसके ।
षट्लेश्या के नाम बताओ, सहित उदाहरण से समझाओ ॥

9 सब कुछ पाकर सब कुछ त्यागा, तन पर रखा न इक भी धागा ।
तीन युद्ध है कौन से कीने, भरत भाई मुख भये मलीने ॥

10 ज्ञान समान न सुख का कारण, ज्ञान ही करता दुख का वारण ।
अवधिज्ञान परिभाषा गाओ, ज्ञान बढ़ाओ इनाम पाओ ॥

11 पाप करन से दुख ही मिलता, दुखमय जीवन कभी न खिलता ।
हिंसा पाप है क्या कहलाता, कहाँ-कहाँ हमको ले जाता ॥

12 कल-कल करती सरिता बहती, बहती रहती कुछ न कहती ।
नदियाँ चौदह के नाम बताओ,जम्बूद्वीप की महिमा गाओ ॥

13 बारह है उपयोग कहाते, जीव का लक्षण गुरु बताते ।
उन सब के तुम नाम बताओ, केवलज्ञानी बन सुख पाओ ॥

14 सच्च ज्ञान है मित्र कहाता, स्वर्ग मोक्ष का द्वार बताता ।
बात मनःपर्यय की बताओ, मुनि बन तुम भी इसको पाओ ॥

15 भव्य अभव्य हैं जीव कहाते, कौन है जग से मुक्ति पाते ।
परिभाषा इनकी बतलाओ, बोध जगा सिद्धी को पाओ ॥

16 शुभ देवों में शुभ ही शुभ है, नरक गति में सदा अशुभ है ।
लेश्या के तुम नाम गिनाओ, तथा शुभाशुभ भेद बताओ॥

17 जम्बू धातकी द्वीप है सुन्दर, पुष्कर द्वीप में अनेक मन्दर ।
कैसे पड़ा ये इनका नाम, सही बताकर बनो अनाम ॥

18 अन्धकार को दूर भगाया, प्रभु ने केवलज्ञान है पाया ।
परिभाषा तुम खूब बताओ, मोह त्याग ज्ञानी बन जाओ ॥

19 सब कुछ खोया कुछ न पाया, निद्रा में जीवन है गँवाया ।
पाँच नाम निद्रा के बताओ, निद्रा त्याग के कर्म खपाओ ॥

20 धन्य धन्य हैं पूज्य मुनिवर, ऋद्धिधारी वे श्रेष्ठ यतिवर ।
सप्त ऋद्धि के नाम बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ ॥

21 शान्तिसागराचार्य हमारे, उपसर्ग परीषह से ना हारे ।
घटना है कोई एक सुनाओ, गुरुवर की महिमा है गाओ ॥

22 सात तत्त्व में इक तत्त्व है आया, नाम आस्त्रव है कहलाया ।
परिभाषा इसकी बतलाओ, पढ़ो लिखो तुम ज्ञान बढ़ाओ ॥

23 चार प्रकार का दान है होता, निर्मल जल सम पाप को धोता ।
दानों के तुम नाम बताओ, दान देय दाता बन जाओ॥

24 काल अनन्त है जहाँ बिताया, निगोद है प्रभु ने फरमाया।
तुम निगोद के भेद बताओ, समझाकर छुटकारा पाओ॥

25 तन में रहता चेतन प्यारा, पर तन है चेतन से न्यारा ।
स्वभाव दोनों का बतलाओ, भेद ज्ञान कर मुक्ति पाओ ॥

26 सम्यग्दर्शन एक सहारा, जिससे मिलता भव का किनारा ।
आठ अंग उसके बतलाओ, अपना जीवन सफल बनाओ ॥

27 अष्ट कर्म हैं सुख दुःख दाता, इनसे बचकर कोई न जाता ।
ज्ञानावरणी के भेद बताएँ, नाम बताकर इन्हें भगाएँ ॥

28 जीवादिक द्रव्यों को रखता, कोई न इसका करता धरता ।
लोकाकाश के भेद गिनाओ, तुम इसका आकार बताओ॥

29 पुण्य पाप का फल बतलाता, चउगतियों से हमें छुड़ाता ।
पाँच ग्रन्थ के नाम बताओ, प्रथमानुयोग को शीश नवाओ ॥

30 जीव अजीव है द्रव्य बताएँ, जिनवर की वाणी में आएँ ।
मूर्त अमूर्त है किसको कहते, कितने द्रव्य यहाँ पर होते ॥

31 प्रमाद है बहु दुःख का कारण,शिवसुख का जो करता वारण ।
नाम प्रमादों के बतलाओ, पन्द्रह संख्या पूर्ण गिनाओ ॥

32 अच्छे बुरे परिणाम हमारे, योग कषाय के बने सहारे ।
शुक्ल लेश्या के भाव बताओ, जीवन में है तुम अपनाओ ॥

33 आठ मदों को है जो करता, नरक निगोद में जाना पड़ता ।
इन सबके तुम नाम बताओ, दुर्गतियों के कभी न जाओ ॥

34 धर्म शुक्ल मुक्ति का कारण,आर्त रौद्र का करो तुम वारण ।
आर्तध्यान के भेद गिनाओ, भेद गिनाकर इनाम पाओ ॥

35 देव नारकी सब ही पाते, नर पशुओं में विरले नाते ।
अवधिज्ञान छह भेद गिनाओ, भेद गिनाकर इनाम पाओ ॥

36 शराब पीता, माँस भी खाता, नीचगति में कभी न साता ।
नीच गोत्र में कौन जनमता, सत्य बताकर धारो समता ॥

37 सात तत्त्व में इक तत्त्व है आया, संवर नाम है जिसने पाया ।
परिभाषा उसकी बतलाओ, कर्मों पे ना राग जगाओ ॥

38 पर मन की सब बातें जाने, चेतन से ही सब पहचाने ।
ज्ञान मनः पर्यय के स्वामी, भेद बताओ अर्न्तयामी ॥

39 धर्म शुक्ल मुक्ति का कारण,आर्तरौद्र का करो तुम वारण ।
रौद्र ध्यान के भेद बताओ, इनसे बचो सदा सुख पाओ ॥

40 लोकालोक का ज्ञान कराता, युग परिवर्तन हमें बताता ।
पाँच ग्रन्थ के नाम बताओ, करणानुयोग को शीश नवाओ ॥

41 ओर छोर न जिसका पाता, वह आकाश द्रव्य कहलाता ।
आकाश द्रव्य के भेद बताओ, कैसे भेद पड़ा समझाओ ॥

42 सम्यग्दर्शन मूल कहाता, ज्ञान चरित्र का फल लहराता ।
कैसे वह उत्पन्न है होता, सम्यक् सुख का बीज वो बोता ॥

43 पञ्च भेद थावर के कहाते, पृथ्वी आदिक सुख न पाते ।
चार-चार हैं भेद सभी के, नाम अर्थ बतलाए नीके ॥

44 समदर्शन की अद्‌भुत महिमा, सचमुच मुख से जाए कही ना ।
कहाँ-कहाँ वो जन्म न पाता, सम्यग्दृष्टि जो बन जाता ॥

45 पुण्य उदय से तन धन पाया, दान देय कर मन हर्षाया ।
निर्माल्य द्रव्य है क्या कहलाता, खाने वाला क्या फल पाता ॥

46 देवगति का जीव है भाया, ऐरावत का रूप धराया ।
कैसा हाथी कौन बताए, जन्म महोत्सव में है आए ॥

47 दुख रूप ही पाप कहाता, चउगतियों में है भटकाता ।
चोरी पाप है क्या कहलाता, पाप त्याग मुक्ति जो पाता ॥

48 जीवादिक तत्त्वों की गाथा, पढ़े लिखे जो मिलती साता ।
पाँच ग्रन्थ के नाम बताओ, द्रव्यानुयोग पढ़ आतम ध्याओ ॥

49 कल्प वृक्ष इच्छित फलदाता, भोगभूमि में नित सुख-साता ।
कल्प वृक्षों के नाम बताएँ, दस की संख्या पूर्ण गिनाएँ ॥

50 धर्म शुक्ल मुक्ति का कारण, आर्तरौद्र का करो तुम वारण ।
धर्म ध्यान के भेद बताओ, साधर्मी का साथ निभाओ ॥

51 आवश्यक जो निशदिन करता, पद श्रावक का है वह धरता ।
आवश्यकों के नाम बताओ, इन्हें पाल तुम कर्म नशाओ ॥

52 अष्टकर्म है सुख दुख दाता, इनसे बचकर कोई न जाता।
दर्शनावरणीय के भेद बताएँ, नाम बताकर इन्हें भगाएँ॥

53 चेतन का परिणाम रहा है, मोह योग से घटा बढ़ा है।
गुणस्थान चौदह कहलाते, नाम बताएँ शिव सुख पाते॥

54 ज्ञान से मिलता भव का किनारा, ज्ञान बिना न कोई सहारा ।
मतिज्ञान के भेद बताओ, केवलज्ञानी तुम बन जाओ ॥

55 पाप त्याग कर चरित्र धरना, मोक्षमार्ग पर कैसे चलना ।
चरणानुयोग है हमें बताता, पाँच ग्रन्थ के नाम पता क्या ॥

56 धर्म शुक्ल मुक्ति का कारण, आर्त रौद्र का कर लो वारण ।
शुक्लध्यान के भेद बताओ, शुद्ध बुद्ध चिन्मय बन जाओ ॥

57 प्रत्यक्ष और परोक्ष कहाता, है प्रमाण का भेद बताता ।
परिभाषा इनकी बतलाओ, सही कहो इनाम पाओ॥

58 तीन लोक में जीव हैं रहते, पुण्य पाप के फल को सहते ।
जीव द्रव्य के भेद गिनाएँ, चौदह जीवसमास बताएँ ॥

59 तन तो तन है कर्म का मारा, चेतन है सुख का भंडारा ।
पाँच शरीर के नाम बताओ, देह त्याग सिद्धालय जाओ ॥

60 भक्ति से मिलती है मुक्ति, दान करो तुम लगा के युक्ति ।
नवधाभक्ति के नाम बताओ, भक्ति कर तुम पुण्य कमाओ ॥

61 यम संयम ही सुख का कारण, भोग रोग का करे निवारण ।
संयम के तुम भेद बताओ, पालन कर शाश्वत् पद पाओ ॥

62 ढाईद्वीप से मनुज का नाता, इससे बाहर कभी न जाता ।
सब द्वीपों के नाम बताओ, तथा समुद्र की सैर कराओ ॥

63 पुण्य योग से नर भव पाया, छह खण्डों का स्वामि कहाया ।
चक्री का वैभव बतलाओ, लोभ त्याग कर धर्म कमाओ ॥

64 चउगतियों में जाना आना, बार-बार फिर जनम को पाना ।
तीनों जन्म के नाम बताओ, जन्म रहित सिद्धी को पाओ ॥

65 सप्त व्यसन है महा दुखदाई, किया है जिसने दुर्गति पाई ।
नाम कौन है हमें बताता, इनसे बचता वो सुख पाता ॥

66 ग्यारह प्रतिमा को जो धरते, श्रावक व्रती बन पाप को हरते ।
कुल प्रतिमा के नाम बताओ, उत्तम श्रावक तुम बन जाओ ॥

67 तीर्थंकर भगवन्त कहाते, कल्याणक वे पाँच हैं पाते ।
गर्भ महोत्सव कैसे मनाते, देव सभी मिल महिमा गाते ॥

68 देवों की है सुन्दर काया, वैक्रियक जिसने नाम है पाया ।
काया की है कैसी माया, कौन बताए सबको भाया ॥

69 सच्चे को सच्चा ना माने, झूठे को सच्चा पहचाने ।
मिथ्याभाव है वह कहलाता, पाँच भेद हैं कौन बताता ॥

70 जिनशासन का ग्रन्थ निराला, षट्खण्डागम अमृत प्याला।
छह खण्डों के नाम बताओ, मुनि बन पढ़ ज्ञाता बन जाओ ॥

71 सब कुछ खोया कुछ न पाया, निद्रा में जीवन है गँवाया ।
निद्रास्त्यान गृद्धि ना पाओ, परिभाषा इनकी समझाओ ॥

72 धन्य धन्य है प्रभु की माया, नाश घातिया ज्ञान है पाया ।
समवसरण की महिमा गाओ, पाँच विशेषता है बतलाओ ॥

73 झूठ बोलता क्रोध जो करता, नरक भूमि में पग वो धरता ।
प्रचलित नाम है हमें बताओ, भूल कभी तुम वहाँ न जाओ ॥

74 सद्भावों से शिवसुख पाता, वरना खुलता नरक में खाता ।
असाधारण भाव बताओ, जीव द्रव्य के हमें गिनाओ ॥

75 विकल देश का नय है ज्ञाता, नय का ज्ञाता सुख ही पाता ।
सात नयों के नाम बताओ, जिनशासन की विजय कराओ ॥

76 पञ्चमकाल महादुखदाई, हुण्डा अवसर्पिणी काल है भाई ।
अनहोनी घटना बतलाओ, कम से कम है पाँच गिनाओ ॥

77 सिद्ध भूमि है पूज्य कहाती, सिद्धों की महिमा है गाती ।
सिद्ध क्षेत्र के नाम बताओ, मध्यप्रदेश की शान बढ़ाओ ॥

78 जीवादिक है तत्त्व कहाते, सम्यक्दृष्टि जान है पाते ।
तत्त्व निर्जरा क्या कहलाता, मुक्ति का साधन है कहाता ॥

79 जिनपूजा अरु दान जो करता, गुरुचरणों में सिर को धरता ।
पुण्य कमाता स्वर्ग में जाता, सोलह संख्या गिनाओ भ्राता ॥

80 नित परिवर्तन जग में करता, जीव जगत में दुख ही सहता ।
परिवर्तन के नाम बताओ, पाँचों से छुटकारा पाओ ॥

81 उत्तम संहनन जिसने पाया, ध्यान लगाकर मुक्ति पाया ।
कितने संहनन कौन बताए, नाम बताकर इनाम पाए ॥

82 अनेकान्तमय धर्म हमारा, जिनशासन का एक सहारा ।
अनेकान्त का मर्म बताओ, आपस के संघर्ष मिटाओ ॥

83 नगर अयोध्या के थे राजा, प्रजा के हित में करते काजा ।
दशरथजी की पत्नी कितनी, नाम बताओ ज्ञात हो जितनी ॥

84 अष्ट कर्म है सुख दुख दाता, इनसे बचकर कोई न जाता ।
कर्म मोहनीय भेद बताओ, नाम बताकर इनाम पाओ ॥

85 सब संसार दुःखों से भरा, इसमें कहीं नहीं सुख खरा ।
बारह भावना को नित भाओ, उनके नाम बताकर जाओ ॥

86 कष्ट भोगते पशु कहाते, संज्ञी असंज्ञी जीव बताते ।
संज्ञी का तुम अर्थ बताओ, सही बताकर इनाम पाओ ॥

87 पृथ्वी आदिक पाँच है थावर, जान सके जिनवाणी पाकर ।
इनका तुम आकार बताओ, जीव दया कर प्रभु बन जाओ ॥

88 अच्छा बुरा आकार बनाता, नाम कर्म संस्थान कहाता ।
संस्थानों के नाम बताओ, प्रभु सम सुन्दर तुम बन जाओ ॥

89 शुभ अशुभ योग से कर्म हैं आते, पुण्य पाप हैं वे कहलाते ।
योग किसे कहते हैं ध्यानी, भेद सहित बतलाओ ज्ञानी ॥

90 दुख से उठाकर सुख में धरता, धरम वही सच्चा हित करता ।
दश धर्मों के नाम बताओ, धर्मात्मा तुम भी बन जाओ ॥

91 मायाचारी है जो करता, कुत्ता बिल्ली है वो बनता ।
तिर्यञ्चगति के दुख बतलाओ, भूले भटके कभी न जाओ ॥

92 मोटा पतला मूरख ज्ञानी, कर्म बनाता जिन की वाणी ।
आठ कर्म दृष्टान्त बताओ, ज्ञान बढ़ाओ इनाम पाओ ॥

93 देवऋषि हैं वे कहलाते, पञ्चम स्वर्ग में निवास पाते ।
लौकान्तिक देवों की गरिमा, कौन बतायें उनकी महिमा ॥

94 मुनिवर वे हैं पूज्य कहाते, रत्नत्रय ले ध्यान लगाते ।
पाँच नाम मुनिवर के बताए, शान्तिसागर जी से दीक्षा पाए ॥

95 भव-भव में है कर्म घुमाता, कर्म का मारा दुख ही पाता ।
नाम कर्म के भेद बताएं, नाम बताकर इन्हें भगाएं ॥

96 हिंसा कर जो पाप कमाता, चोरी करता नरक में जाता ।
भूख प्यास है कितनी लगती, नरक गति में कैसे मिटती ॥

97 देवऋषि हैं वे कहलाते, तप कल्याणक में हैं आते ।
अष्ट भेद हैं तुम बतलाओ, लौकान्तिक की पदवी पाओ ॥

98 व्रत जो धरता व्रती कहाता, पाप त्याग कर पुण्य कमाता ।
बारह व्रतों के नाम बताओ, श्रावक का पद तुम पा जाओ ॥

99 क्या खोया क्या हमने पाया, कैसी अद्भुत जग की माया ।
अनित्यभावना को नित भाओ, है स्वरूप इसका बतलाओ ॥

100 धर्म की महिमा जिसने गाई, स्वर्ग सम्पदा उसने पाई ।
क्षमा धर्म है क्या कहलाता, इससे जोड़ो अपना नाता ॥

101 पुण्य कमाते स्वर्ग को जाते, आठ ऋद्धि को हैं वे पाते ।
आठ ऋद्धि के नाम बताओ, देव बनो तो तुम पा जाओ ॥

102 जोड़-जोड़ कर धन को रखता, गुड़ चिपकी मक्खी सम मरता ।
परिग्रह बड़ा है पाप कहाता, कौन भेद इनके बतलाता ॥

103 तप करते मुनि कर्म खिपावैं, तप से ही मुनि मुक्ति पावैं ।
बारह तपों के नाम बताओ, तप कर जीवन सफल बनाओ ॥

104 झूठ बोलता क्रोध जो करता, नरक भूमि में पग वो धरता ।
कितने बिल हैं वहाँ बताओ, पृथक्-पृथक् सबको गिनवाओ ॥

105 अंगोपांग है कर्म कहाता, नाम कर्म का भेद है पाता ।
कितने भेद हैं कौन बताएँ, नाम सहित हमको समझाए ॥

106 सब मंत्रों में मंत्रराज है, णमोकार अद्भुत जहाज है ।
श्वासोच्छ्वास में कैसे पढ़ना, मोक्षमार्ग में यदि है बढ़ना ॥

107 ना आदि ना अन्त रहा है, जिनशासन सर्वज्ञ कहा है ।
प्रमुख रहे सिद्धान्त कौन से, जैनधर्म प्रतिपादित जिनसे ॥

108 औदारिक मनुजों की काया, पुण्य उदय से हमने पाया ।
विशेषता क्या इसमें होती, सत्य बताओ जय-जय होती ॥

109 क्या खोया क्या हमने पाया, कैसी अद्भुत जग की माया ।
अशरणभावना को नित भाओ, है स्वरूप इसका बतलाओ ॥

110 धर्म की महिमा जिसने गाई, स्वर्ग सम्पदा उसने पाई ।
मार्दव धर्म है क्या कहलाता, इससे जोड़ो अपना नाता ॥

1 विद्याधर – आचार्य श्री विद्यासागर जी
शान्तिनाथ – मुनि श्री समयसागर जी
अनन्तनाथ – मुनि श्री योगसागर जी

2 5 इन्द्रिय प्राण–स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण
3 बल प्राण–मन, वचन, काय
1 आयु प्राण
1 श्वासोच्छ्वास प्राण
10 प्राण कुल

3 जिसमें चेतना पाई जावे, जो सुख–दुःख रूप भावों का संवेदन करता हो, उसे जीव कहते हैं या जिसमें जानने देखने की शक्ति पाई जावे उसे जीव कहते हैं

अथवा

जो इन्द्रिय आदि प्राणों से जीता था, जीता है व जीवेगा उसे जीव कहते हैं।

4 आकाश में विमान रुक जाने पर मान के कारण दशानन ने कैलास पर्वत को अपनी दोनों भुजाओं से ऊपर उठा लिया। उसी वक्त जिनालय एवं जीव रक्षा के सत् उद्देश्य से बालि मुनिराज ने अपने पैर का अंगूठा दबा दिया जिससे पर्वत दबने लगा एवं दशानन जोर–जोर से रोने लगा, उसके रोने से उसका नाम 'रावण' पड़ गया। दयालु मुनिराज ने उसका अहंकार दूर होते ही अंगूठा ढीला कर दिया एवं दशानन को अभयदान दिया।

5 आचार्य श्री की वन्दना में तीन भक्ति करते
1. श्री सिद्ध भक्ति
2. श्री श्रुत भक्ति
3. श्री आचार्य भक्ति

6 बालकपने में दशानन जिस हार को पहने था उसमें नौ मुख और दिखाई पड़ते थे। जिससे वह दशमुख रावण कहलाया। तथा उसका नाम दशानन रखा गया।

7 सुमेरु पर्वत के चार वन –
1. सौमनस वन
2. भद्रशालवन
3. नन्दनवन
4. पाण्डुक वन

8 छह मनुष्य यात्रा को निकले, खाने को पास में कुछ नहीं था। सामने एक वृक्ष दिखा उनके परिणाम कैसे–कैसे हुए। लेश्या को दृष्टान्त सहित समझिये –
1. कृष्ण लेश्या वाला कहता है कि जड़ से वृक्ष को काटो।
2. नील लेश्या वाला कहता है कि स्कन्ध (तना) से काटो।
3. कापोत लेश्या वाला कहता है कि शाखा काटो।
4. पीत लेश्या वाला कहता है कि उपशाखा काटो।
5. पद्म लेश्या वाला कहता है कि फलों को तोड़कर खाओ।
6. शुक्ल लेश्या वाला कहता है कि जो फल अपने आप जमीन पर गिर रहे है, उन्हें खाकर अपनी क्षुधा को शान्त करुगा।

अथवा क्रमशः पेड़ को जड़ से काटने का प्रयास, स्कन्ध काटने का प्रयास, शाखा काटने का प्रयास, कच्चे–पक्के फलों से युक्त गुच्छा

तोड़ने का प्रयास, पक्के फलों को तोड़ता है तथा नीचे पड़े फलों को बीन-बीनकर खाता है।

9 भरत-बाहुबली के मध्य तीन युद्ध-
1. जल युद्ध
2. दृष्टि युद्ध
3. मल्ल युद्ध

10 द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की मर्यादा लिए इन्द्रिय व मन की सहायता के बिना, रूपी पदार्थ को अपना विषय बनाने वाला अर्थात् जानने वाला ज्ञान अवधिज्ञान कहलाता है।

11 प्रमाद पूर्वक त्रस-स्थावर जीवों का घात करना, मारना, पीटना, कष्ट पहुँचाना हिंसा पाप कहलाता है। हिंसा करने वाला नरक गति एवं तिर्यञ्च गति में जाता है।

12 चौदह नदियों के नाम -गंगा, सिन्धु, रोहित, रोहितास्या, हरित्, हरिकान्ता, सीता, सीतोदा, नारी, नरकान्ता, सुवर्णकूला, रूप्यकूला, रक्ता, रक्तोदा है।

13 **8 ज्ञानोपयोग -**
1. कुमति ज्ञानोपयोग
2. कुश्रुत ज्ञानोपयोग
3. कुअवधि ज्ञानोपयोग/विभंग
4. मति ज्ञानोपयोग
5. श्रुत ज्ञानोपयोग
6. अवधि ज्ञानोपयोग
7. मनःपर्यय ज्ञानोपयोग
8. केवल ज्ञानोपयोग

4 दर्शनोपयोग-
1. चक्षु दर्शनोपयोग
2. अचक्षु दर्शनोपयोग
3. अवधि दर्शनोपयोग
4. केवल दर्शनोपयोग

14 द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादा को लिए दूसरे के मन में स्थित रूपी पदार्थों/विचारों को प्रत्यक्ष जानने वाला ज्ञान मनःपर्यय ज्ञान कहलाता है।

15 जो जीव सम्यग्दर्शन अथवा केवलज्ञान/मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता रखता हो भव्य जीव कहलाता है एवं जिसमें मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता न हो उसे अभव्य जीव कहते हैं।

16 **शुभ लेश्या**-पीत, पद्म एवं शुक्ल लेश्या।
अशुभ लेश्या - कृष्ण, नील एवं कापोत लेश्या

17 जम्बूद्वीप के उत्तरकुरु में स्थित एक अनादि निधन जम्बू का वृक्ष है। जिससे इस द्वीप का नाम जम्बूद्वीप पड़ा। इसी प्रकार धातकी खण्ड के उत्तरकुरु में धातकी वृक्ष होने के कारण उस द्वीप का नाम धातकी खण्ड एवं पुष्कर द्वीप के उत्तर कुरु में पुष्कर वृक्ष होने के कारण उस द्वीप का नाम पुष्कर द्वीप पड़ा।

18 जो अलोकाकाश सहित लोकाकाश में स्थित सभी चराचर पदार्थों की त्रिकाल-वर्ती पर्यायों को हाथ में रख आंवले के समान युगपत् एवं प्रत्यक्ष जानता है वह ज्ञान केवलज्ञान कहलाता है।

19 पाँच निद्रा के नाम :-
1. निद्रा
2. निद्रा-निद्रा

3. प्रचला
4. प्रचला-प्रचला
5. स्त्यानगृद्धि

20 सप्त ऋद्धि के नाम -
1. बुद्धि ऋद्धि
2. विक्रिया ऋद्धि
3. तप ऋद्धि
4. बल ऋद्धि
5. औषध ऋद्धि
6. रस ऋद्धि
7. क्षेत्र (अक्षीण) ऋद्धि

21 एक रात्रि महाराज जिन मन्दिर में ध्यानस्थ थे। दीपक से गिरने वाले घी के निमित्त से चीटियों ने आना प्रारम्भ कर दिया एवं आचार्य श्री के सारे शरीर में भी वे चीटियाँ चढ़ गई। रात भर उनके तन को काँटती रही। तब भी वे साधु अपने ध्यान से जरा भी विचलित नहीं हुए एवं रात भर प्रभु का स्मरण करते रहे। ऐसी अनेक घटनाएं आचार्य श्री शान्तिसागर जी के जीवन की हैं। जिसे जानने के लिए सुमेरु चन्द जी दिवाकर द्वारा रचित 'चारित्र चक्रवर्ती' अथवा पं. निहालचन्द जैन द्वारा रचित लोकोत्तर साधक ग्रन्थ का स्वाध्याय करना चाहिए।

22 मन, वचन, और काय इन तीनों योगों के निमित्त से ज्ञानावरण आदि आठ कर्मों का आना सो आस्रव कहलाता है।

23 चार प्रकार के दान -
1. आहार दान
2. औषध दान
3. अभय दान
4. उपकरण दान

24 निगोद के दो भेद हैं -
1. नित्य निगोद -जिन्होंने आज तक निगोद पर्याय को नहीं छोड़ी है।
2. इतर निगोद -जिन्होंने त्रस पर्याय को प्राप्त कर, उसे छोड़ पुनः निगोद पर्याय को प्राप्त किया हो।

25 चेतन का स्वभाव -जानना-देखना, ज्ञान-दर्शन
तन का स्वभाव - स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण वाला

26 सम्यग्दर्शन के आठ अंग-
1. निःशंकित अंग
2. निःकांक्षित अंग
3. निर्विचिकत्सा अंग
4. अमूढ़ दृष्टि अंग
5. स्थितिकरण अंग
6. उपगूहन अंग
7. वात्सल्य अंग
8. प्रभावना अंग

27 ज्ञानावरणी के पाँच भेद :-
1. मतिज्ञानावरण
2. श्रुतज्ञानावरण
3. अवधिज्ञानावरण
4. मनःपर्यय ज्ञानावरण
5. केवलज्ञानावरण

28 लोकाकाश के तीन भेद :-
1. अधोलोक
2. मध्यलोक
3. उर्ध्वलोक

29 प्रथमानुयोग के पाँच ग्रन्थ :-
1. पद्मपुराण
2. आदिपुराण
3. हरिवंश पुराण
4. श्रेणिक चरित्र
5. वरांगचरित्र
6. महापुराण
7. प्रद्युम्नपुराण

30 स्पर्श, रस, गंध,वर्ण से सहित द्रव्य मूर्त एवं स्पर्शादि से रहित द्रव्य अमूर्त कहलाता है। एक मात्र पुद्गल द्रव्य मूर्तिक है शेष पाँच द्रव्य अमूर्तिक कहलाते हैं।

31 पंद्रह प्रमाद-
चार विकथा :-
1. स्त्री कथा 2. राज कथा 3. चोर कथा 4. भोजन कथा
चार कषाय :- 5. क्रोध 6. मान 7. माया 8. लोभ
पाँच इन्द्रिय लम्पटता :- 9. स्पर्शन 10. रसना 11. घ्राण 12. चक्षु 13. कर्ण 14. स्नेह तथा 15. निद्रा

32 शुक्ल लेश्या के भाव :-
1. विवेकवान्, दया और दान में रत एवं मृदुभाषी।
2. पाप कार्यों से उदासीन, पक्षपात से रहित।
3. क्षमावान, दूसरों के दोषों को न कहने वाला।

33 आठ मद :- 1. ज्ञान मद 2. पूजा मद 3. कुल मद 4. जाति मद 5. बल मद 6. ऋद्धि मद 7. तप मद 8. शरीर मद (रूप मद)

34 आर्त्तध्यान के चार भेद हैं-
1. इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान
2. अनिष्ट संयोगज आर्त्तध्यान
3. पीड़ा चिन्तन आर्त्तध्यान
4. निदान आर्त्तध्यान

35 अवधिज्ञान के छह भेद :-
1. अनुगामी 2. अननुगामी 3. वर्द्धमान 4. हीयमान 5. अवस्थित 6. अनवस्थित

36 नीच गोत्र में जन्म के कारण :-
1. परनिन्दा एवं आत्म प्रशंसा।
2. दूसरों के विद्यमान गुणों का आच्छादन (ढकना)।
3. अपने अविद्यमान गुणों का उद्भावन (प्रकट) करना।
4. अरिहन्त आदि में भक्ति का न होना।

37 कर्मों के आगमन को रोकना संवर है। जैसे- मोरी में डाट लग जाने पर पानी का आना रुक जाता है।

38 मनःपर्ययज्ञान के स्वामी-भावलिंगी मुनिराज (छटवें तथा उससे ऊपर के गुणस्थानों में रहने वाले)
मनःपर्यय ज्ञान के दो भेद है :-
1. ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान
2. विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान

39 रौद्र ध्यान के चार भेद हैं :-
1. हिंसानन्द
2. मृषानन्द
3. चौर्यानन्द
4. परिग्रह संरक्षणानन्द

40 करणानुयोग के ग्रन्थ :-

1. तिलोयपण्णत्ति
2. त्रिलोकसार्
3. गणितसार संग्रह
4. लोक विभाग
5. जम्बूद्वीपपण्णत्ति आदि।

41 आकाश द्रव्य के दो भेद हैं :-
1. लोकाकाश
2. अलोकाकाश

जितने स्थान में जीवादिक छह द्रव्य पाये जाते हैं वह लोकाकाश एवं जहाँ मात्र एक आकाश द्रव्य पाया जाता है (लोकाकाश के बाहर एक मात्र आकाश द्रव्य) अलोकाकाश है।

42 सम्यग्दर्शन निसर्गज अर्थात् स्वभाव से परोपदेश के बिना तथा अधिगमज अर्थात् परोपदेश पूर्वक होता है। अथवा अन्तरंग कारण- दर्शन मोहनीय के उपशम, क्षय क्षयोपशम होने पर।

बाह्य कारण - जातिस्मरण, वेदना, जिनबिम्ब दर्शन, देवऋद्धि दर्शन, धर्म श्रवण, जिनमहिमा दर्शन आदि।

43 पृथ्वी आदि के चार भेद निम्न हैं :-
1. पृथ्वी सामान्य-जिसे जीव ने अपना शरीर आज नहीं बनाया किन्तु आगे बना सकता है।
2. पृथ्वी जीव-पृथ्वी को धारण करने हेतु जाने वाला विग्रह गति में स्थित जीव।
3. पृथ्वीकाय - जीव जिसे छोड़कर चला गया ऐसी काय।
4. पृथ्वीकायिक-पृथ्वी जीव सहित पृथ्वी पिण्ड।

इसी प्रकार अन्य चारों भेदों में लगाना चाहिए।

44 सम्यग्दृष्टि निम्नस्थानों में जन्म नहीं लेता-
1. एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय के जीवों में।
2. प्रथम नरक बिना शेष नरकों में।
3. स्त्री वेद, नपुंसक वेद।
4. भवनत्रिक देवों में।
5. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों में।

45 जिनालय, सिद्ध क्षेत्र, साधु-सेवा आदि के लिए दिया हुआ धन आदि द्रव्य का दान करने पर वह दाता के लिए एवं अन्य साधर्मियों की अपेक्षा निर्माल्य कही जाती हैं। निर्माल्य द्रव्य को खाने वाला उसको हरण करने वाला दीन-हीन मनुष्य एवं नरक पर्याय को प्राप्त करता है।

46 आभियोग्य जाति का देव इन्द्र की आज्ञा से ऐरावत हाथी का रूप धारण करता है। यह हाथी 1 लाख योजन विस्तार वाला एवं पच्चीस हजार ऊँचाई वाला होता है। उस हाथी की 32 सूंड रहती है अर्थात् बत्तीस मुख होते हैं। प्रत्येक मुख में आठ-आठ दांत, प्रत्येक दांत पर एक-एक सरोवर, प्रत्येक सरोवर में एक-एक कमलिनी, प्रत्येक में बत्तीस-बत्तीस कमल जिसके प्रत्येक पत्ते पर बत्तीस-बत्तीस देवांगनाएं मधुर नृत्य करती हैं।

47 दूसरों की रखी हुई, गिरी हुई, भूली हुई अथवा नहीं दी हुई वस्तु को लेना या लेकर दूसरो को देना चोरी कहलाता है।

48 द्रव्यानुयोग के पाँच ग्रन्थ :-
1. समयसार
2. अध्यात्म अमृत कलश
3. षट्खण्डागम
4. पञ्चास्तिकाय
5. ज्ञानार्णव
6. परीक्षा मुख
7. जीवकाण्ड-कर्मकाण्ड
8. अष्टसहस्त्री

49 दस प्रकार के कल्पवृक्ष :-
1.पानांग 2. तूर्यांग 3. भूषणांग 4. वस्त्रांग 5. भोजनांग 6. आलयांग 7. दीपांग 8. भाजनांग 9. मालांग 10. तेजांग

50 धर्मध्यान के 4 भेद -
1. आज्ञाविचय 2. अपायविचय 3. विपाकविचय 4. संस्थान विचय

51 षट्आवश्यक :-1.देवपूजा 2. गुरु उपासना 3. स्वाध्याय 4. संयम 5. तप 6. दान

52 दर्शनावरणीय कर्म के नौ भेद है :-
1. चक्षु दर्शनावरण 2. अचक्षुदर्शन 3. अवधिदर्शन 4. केवलदर्शन 5. निद्रा 6. निद्रा-निद्रा 7. प्रचला 8. प्रचला-प्रचला 9. स्त्यानगृद्धि

53 चौदह गुणस्थान :-
1. मिथ्यात्व 2. सासादन 3. सम्यक्त्व मिथ्यात्व 4.अविरत सम्यक्त्व 5. संयमासंयम 6. प्रमत्त विरत 7. अप्रमत्त विरत 8. अपूर्व करण 9. अनिवृत्तिकरण 10. सूक्ष्म साम्पराय 11. उपशान्त मोह 12. क्षीण मोह 13. सयोग केवली 14. अयोग केवली

54 मतिज्ञान के तीन सौ छत्तीस भेद है :-
अवग्रह-ईहा-आवाय-धारणा (4) × पाँच इन्द्रिय+मन(6)×बहु, बहुविध, एक,एकविध, क्षिप्र-अक्षिप्र, उक्त, अनुक्त,ध्रुव,अध्रुव,निःसृत, अनिःसृत(12) = 288, व्यञ्जावग्रह के 12×4 = 48
मतिज्ञान के कुल भेद =288+48=336

55 चरणानुयोग के पाँच ग्रन्थ :-
1. रत्नकरण्डक श्रावकाचार
2. मूलाचार
3. अनगार-सागार धर्मामृत
4. मूलाचार प्रदीप
5. भगवतीआराधना
6. पुरुषार्थसिद्धिउपाय
7. आचार-सार इत्यादि

56 शुक्लध्यान के चार भेद :-
1. पृथक्त्व वितर्क
2. एकत्ववितर्क
3. सूक्ष्म क्रियाप्रतिपाती
4. व्युपरत क्रिया निवृर्तीनि

57 इन्द्रिय एवं मन की सहायता के बिना सीधे आत्मा से पदार्थों का जानने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण कहलाता है। अवधिज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान और केवलज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण है एवं इन्द्रिय और मन से पदार्थों को जानने वाला ज्ञान परोक्ष प्रमाण कहलाता है। मतिज्ञान एवं श्रुतज्ञान परोक्ष प्रमाण है।

58 चौदह जीवसमास :-
1. सूक्ष्म 2. बादर 3. द्वीइन्द्रिय 4. त्रीइन्द्रिय 5. चौइन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय जीव के दो भेद

6. संज्ञी 7. असंज्ञी
इन सबके दो-दो भेद पर्याप्त और अपर्याप्त करने पर कुल चौदह जीवसमास हो जाते हैं।

59 पाँच शरीरः-
1. औदारिक शरीर
2. वैक्रियिक शरीर
3. आहारक शरीर
4. तैजस शरीर
5. कार्मण शरीर

60 नवधाभक्ति :-
1. प्रतिग्रहण (पड़गाहन) करना
2. उच्चासन देना
3. पाद प्रक्षालन
4. पूजन
5. नमोस्तु
6. मन शुद्धि
7. वचन शुद्धि
8. काय शुद्धि
9. आहार जल शुद्धि

61 संयम के पाँच भेद हैं :-
1. सामायिक
2. छेदोपस्थापना
3. परिहार विशुद्धि
4. सूक्ष्मसाम्परायिक
5. यथाख्यात

62 ढाईद्वीप और दो समुद्र :-
1. जम्बू द्वीप 2. धातकी खण्ड एवं आधा पुष्करार्ध मिलने पर ढाई द्वीप तथा लवण समुद्र एवं कालोदधि ये दो समुद्र हैं।

63 चक्रवर्ती का वैभव :- नौ निधि, चौदह रत्न, 96 हजार रानियाँ, 32हजार आज्ञाकारी मुकुट बद्ध राजा, 365 रसोइयाँ, 18 करोड़-घोड़े, 84 लाख हाथी।

64 तीन जन्म :-
1. सम्मूर्छन जन्म
2. गर्भ जन्म
3. उपपाद जन्म

65 सप्त व्यसन :-
1. जुआ खेलना
2. वेश्या गमन
3. शराब पीना
4. माँस खाना
5. परस्त्री सेवन
6. चोरी करना
7. शिकार खेलना

66 ग्यारह प्रतिमा :-
1. दर्शन प्रतिमा
2. व्रत प्रतिमा
3. सामायिक प्रतिमा
4. प्रोषधोपवास
5. सचित्त त्याग
6. रात्रि भुक्ति अथवा दिवा मैथुन त्याग
7. ब्रह्मचर्य
8. आरम्भ त्याग
9. परिग्रह त्याग
10. अनुमति त्याग
11. उद्दिष्ट त्याग

67 1. इन्द्र की आज्ञा से कुबेर तीर्थंकर की जन्म नगरी में दिन में चार बार रत्नों की वर्षा करता है। यह क्रम 6 माह पूर्व से जन्म तक यानि 15 माह चलता

रहता है।

2. बालक के गर्भ में आते समय माता रात्रि के अन्तिम प्रहर में अत्यन्त सुहावने, आह्लादकारी 16 स्वप्न देखती है। ये स्वप्न गर्भावतरण के सूचक होते हैं।
3. गर्भावस्था में श्री आदि देवकुमारियाँ तीर्थंकर माता का गर्भ शोधन करती है एवं सेवा करती है।

68 वैक्रियिक शरीर (देवों) की विशेषता :-

1. अनेक छोटे-बड़े, हलके-भारी आदि रूप बनाने की क्षमता वाला होता है।
2. पलक झपकतें ही कोशों की दूरी तय कर लेते हैं।
3. नख केश से रहित होता है।
4. मल-मूत्रादि, सप्त धातुओं से रहित होता है।
5. शरीर परछाई नहीं पड़ती एवं पलक नहीं झपकती।
6. शरीर अकाल में नष्ट नहीं होता, वृद्धता को प्राप्त नहीं होता।
7. शरीर में रोग नहीं होता।
8. दीवाल पर्वत आदि को भी पार कर सकता है।

69 मिथ्यात्व के पाँच भेद :- 1. एकान्त 2. संशय 3. अज्ञान 4. वैनयिक 5. विपरीत

70 षट्खण्डागम के छह खण्डों के नाम :- 1. जीव स्थान 2. क्षुद्रकबन्ध 3. बन्ध स्वामित्व 4. वेदना खण्ड 5. वर्गणा खण्ड 6. महाबन्ध

71 जिसके निमित्त से जीव सोते समय भयंकर कार्य कर ले, शक्ति प्रकट हो जाये और जागने पर कुछ स्मरण न रहे, वह स्त्यानगृद्धि निद्रा कर्म कहलाता है।

72 समवशरण की पाँच विशेषताएँ :-

1. समवशरण भूतल से 5000 धनुष ऊपर आकाश में इन्द्रनील मणि की शिला से निर्मित होता है।
2. चारों दिशाओं में बीस-बीस हजार सीढ़ियाँ होती हैं। इन सीढ़ियों के चढ़ने में विशेष परिश्रम नहीं होता।
3. समवशरण में आठ भूमियाँ होती हैं। अन्तिम श्रीमण्डप भूमि में स्फटिक मणिमय ''सोलह दीवारों'' से विभाजित 12 कोठे होते हैं। जिनमें बारह सभाएँ होती हैं।
4. समवशरण में तीर्थंकर के माहात्म्य से आतंक, रोग-मरण, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि की वेदना नहीं होती।
5. जन्मजात बैर रखने वाले जीव भी मैत्री भाव को प्राप्त होते हैं।
6. योजनों विस्तार वाले समवशरण में प्रवेश करने व निकलने में मात्र अन्तर्मुहूर्त का ही समय लगता है।

73 सात नरक भूमियों के प्रचलित नाम :- 1. धम्मा 2. वंशा 3. मेघा 4. अञ्जना 5. अरिष्टा 6. मघवा 7.माघवी

74 जीव द्रव्य के पाँच असाधारण भाव :- 1. औपशमिक2. क्षायिक 3. क्षायोपशमिक (मिश्र) 4. औदयिक 5. पारिणामिक भाव

75 सात नयों के नाम :- 1. नैगमनय 2. संग्रह नय 3. व्यवहारनय 4. ऋजुसूत्रनय 5. शब्द

नय 6. समभिरूढ़नय 7. एवंभूत नय

76 हुण्डावसर्पिणीकाल की विशेषताएँ :-

1. प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का तृतीय काल में जन्म एवं निर्वाण होना।
2. चक्रवर्ती की पराजय होना।
3. भरत चक्री द्वारा द्विज (ब्राह्मण) वंश की उत्पत्ति।
4. नौवे से सोलहवें तीर्थंकर पर्यन्त जिनधर्म का विच्छेद रहा।
5. ग्यारह रुद्र एवं नौ कलह प्रिय नारदों का उत्पन्न होना।
6. तीन तीर्थंकरों पर उपसर्ग होना।
7. तीर्थंकर की पुत्री होना।
8. तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या के अलावा अन्य स्थानों से एवं निर्वाण सम्मेदशिखर जी के अलावा अन्य स्थानों से होना।

77 मध्यप्रदेश के सिद्ध क्षेत्र :- 1. मुक्तागिर जी 2. सिद्धवर कूट 3. बड़वानी जी 4. कुण्डलपुर जी 5. द्रोणगिर जी 6. नैनागिर जी 7. सोनागिर जी

78 आत्मा में बँधे हुए कर्मों का एक देश झड़ना, निर्जरा तत्त्व कहलाता है।

79 सोलह स्वर्गों के नाम :- 1. सौधर्म स्वर्ग 2. ऐशान 3. सानत 4. माहेन्द्र 5. ब्रह्म 6. ब्रह्मोत्तर 7. लान्तव 8. कापिष्ठ 9. शुक्र 10. महाशुक्र 11.शतार 12. सहस्रार 13. आनत 14. प्राणत 15. आरण 16. अच्युत

80 पाँच परिवर्तन के नाम :- 1. द्रव्य 2. क्षेत्र 3. काल 4. भाव 5. भव

81 छह संहननों के नाम :-1. वज्र वृषभ नाराच संहनन 2. वज्र नाराच संहनन 3. नाराच संहनन 4. अर्धनाराच संहनन 5. कीलक संहनन 6. असंप्राप्ता सृपटिका संहनन

82 अनेक का अर्थ एक से अधिक या नाना, अन्त का अर्थ है धर्म। वस्तु अनेक गुण धर्मों वाली है सत् भी है असत् भी है, एक भी है अनेक भी है। इत्यादि धर्म युक्त वस्तु होती है, ऐसा जानना ही अनेकान्त है। जैसे-राम पिता भी है और पुत्र भी हैं।

83 राज दशरथ की चार रानियाँ थीं-
1. अपराजिता (कौशल्या) 2. कैकेयी 3. सुमित्रा 4. सुप्रभा

84 मोहनीय कर्म के दो भेद हैं :- 1. चारित्र मोहनीय कर्म के - 25 भेद 2. दर्शन मोहनीय कर्म के- 3 भेद

अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान एवं संज्वलन इन चारों के क्रोध, मान, माया, लोभ इन चारों का गुण होने पर सोलह कषाय एवं हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्री वेद, पुरुष वेद एवं नपुंसक वेद ये नौ कषाय कुल=25 कषाय

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व एवं सम्यक् प्रकृति ये तीन दर्शनमोहनीय की = कुल 28

85 बारह भावनाओं के नाम :-
1. अनित्य भावना 2.अशरण भावना 3. संसार भावना 4.एकत्व भावना 5.अन्यत्व भावना 6.अशुचि भावना 7.आस्रव भावना 8. संवर भावना 9. निर्जरा भावना 10.

लोक भावना 11. बोधिदुर्लभ भावना 12. धर्म भावना

86 जो जीव शिक्षा, उपदेश और आलाप को ग्रहण कर सकते हैं, ऐसे जीव संज्ञी कहलाते हैं अथवा मन से सहित, मन वाले जीव संज्ञी कहलाते हैं।

87 **पृथ्वीकायिक का आकार -**
मसूर के समान
जलकायिक का आकार -
मोती के समान
अग्निकायिक का आकार-
सुई की नोंक के समान
वायुकायिक का आकार-
पताका (ध्वाजा) के समान
वनस्पतिकायिक का आकार -
अनेक प्रकार का

88 छह संस्थानों के नाम :-1. समचतुरस्र संस्थान 2. न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान 3. स्वाति संस्थान 4. वामन संस्थान 5. कुब्जक संस्थान 6. हुण्डक संस्थान

89 मन वचन काय के निमित्त से आत्म प्रदेशों में होने वाले परिस्पंदन को योग कहते है। योग 15 होते हैं -
1. सत्य मनोयोग 2. असत्य मनोयोग 3. उभय मनोयोग 4. अनुभय मनोयोग 5. सत्य वचनयोग 6. असत्य वचनोयोग 7. उभय वचनोयोग 8. अनुभय वचनोयोग 9. औदारिक काययोग 10. औदारिक मिश्र काय योग 11. वैक्रियिक काय योग 12. वैक्रियिक मिश्र काय योग 13. आहारक काय योग 14. आहारक मिश्र काय योग 15. कार्मणकाय योग

90 दश धर्मों के नाम :-
1. उत्तमक्षमा
2. उत्तममार्दव
3. उत्तमआर्जव
4. उत्तमशौच
5. उत्तमसत्य
6. उत्तमसंयम
7. उत्तमतप
8. उत्तमत्याग
9. उत्तमआकिंचन्य
10. उत्तमब्रह्मचर्य

91 तिर्यञ्चगति में बहुत दुःख हैं- जिनमें से कुछ निम्न हैं :-
1. कमजोर होने पर बलवान प्राणी द्वारा खाया जाना।
2. छेदा जाना, भेदा जाना, बोझा ढोना, बंध-बंधन।
3. भूख-प्यास, ठंड़ी-गरर्मी सहना इत्यादि।

92 आठ कर्म और उनके दृष्टान्त :-
1. ज्ञानावरण- मूर्ति पर डले पर्दे के समान।
2. दर्शनावरण- गेट पर खड़े द्वारपाल के समान।
3. वेदनीय - शहद लपटी तलवार के समान।
4. मोहनीय - मदिरा के समान।
5. आयु- पैरो में पड़ी बेड़ी के समान।
6. नाम - चित्रकार के समान।
7. गोत्र - कुम्भकार के समान।

8. अन्तराय-कोषागार, खजांची के समान।

93 लौकान्तिक देवों की महिमा :-
1. सभी देव बाल ब्रह्मचारी होते हैं, शुक्ल लेश्या वाले एक भवातारी होते हैं।
2. ब्रह्म लोक स्वर्ग के अन्त में रहते हैं।
3. मात्र तीर्थंकरों के तपकल्याणक में उनके वैराग्य की प्रशंसा करने आते हैं।

94 शान्तिसागर जी के शिष्यः-1. श्री वीरसागर जी 2. श्री पायसागर जी 3. श्री नेमिसागर जी 4. श्री चन्द्रसागर जी 5. श्री कुन्थुसागर जी 6. श्री नमिसागर जी

95 नाम कर्म के 42 भेद है :-
1. गति 2. जाति 3. शरीर 4. अंगोपांग 5. निर्माण 6. बन्धन 7. संघात 8. संस्थान 9. संहनन 10. स्पर्श 11. रस 12. गंध 13. वर्ण 14. आनुपूर्वी 15. अगुरुलघु 16. उपघात 17. परघात 18. आतप 19. उद्योत 20. उच्छ्वास 21. विहायोगति 22. प्रत्येक शरीर 23. साधारण शरीर 24.त्रस 25. स्थावर 26. सुभग 27. दुर्गभ 28. सुस्वर 29. दुस्वर 30. शुभ 31. आदेय 32. अनादेय 34. सूक्ष्म 35. बादर 36. पर्याप्त 37. अपर्याप्त 38. स्थिर 39. अस्थिर 40. यशःकीर्ति 41. अयशःकीर्ति 42. तीर्थंकर।

96 नारकी तीन लोक का अनाज खालें तो भी भूख शान्त न हो, तथा समस्त समुद्रों का पानी पी ले तो भी प्यास न बुझे, इतनी वेदना होती है।

97 लौकान्तिक देव के आठ भेद हैं :-
1. सारस्वत 2. आदित्य 3. वह्नि 4. अरुण 5. गर्दतोय 6. तुषित 7. अव्याबाध 8. अरिष्ट।

98 पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत- 1. अहिंसाणुव्रत 2. सत्याणुव्रत 3. अर्चोर्याणुव्रत 4. ब्रह्मचर्याणुव्रत 5. परिग्रह परिमाणुव्रत 6. दिग्व्रत 7. देशव्रत 8. अनर्थदण्ड विरतव्रत 9. सामायिक 10. प्रोषधोपवास 11. उपभोग-परिभोग परिणाम व्रत 12. अतिथि संविभाग

99 इस संसार में दृश्यमान सभी पदार्थ नश्वर, नाशवान अर्थात् नष्ट होने वाले हैं। राजा, मंत्री आदि सभी एक दिन मृत्यु की गोद में समा जाते हैं। बड़े-बड़े महल, सुदृढ़ किला भी खण्डर बन जाते हैं। ऐसा विचार करना अनित्य भावना है। अतः संसार में वस्तु के वियोग में विषाद एवं संयोग में हर्ष न करते हुए समता धारण करना चाहिए।

100 क्रोध उत्पत्ति के कारण मिलने पर, प्रतिकार करने की शक्ति होने पर भी समता पूर्वक सब सहन करना, क्रोध नहीं करना क्षमा धर्म कहलाता है।

101 देवों की आठ ऋद्धियाँ :- 1. अणिमा 2. महिमा 3. लघिमा 4. गरिमा 5. ईशत्व 6. वशित्व 7. प्राप्ति 8. प्राकाम्य अथवा अन्य भी 9. कामरुपित्व 10. अप्रतिघात 11. अन्तर्धान

102 परिग्रह के दो भेद हैं - 1. अंतरंग और बहिरंग

अंतरंग परिग्रह के चौदह भेद :-1. क्रोध 2. मान 3. माया 4. लोभ 5. हास्य 6. रति 7. अरति 8. शोक 9. भय 10. जुगुप्सा 11. स्त्रीवेद 12. नपुंसक वेद 13. पुरुषवेद 14. मिथ्यात्व।

बहिरंग परिग्रह के दस भेद :- 1. क्षेत्र (खेत) 2. वास्तु (मकान) 3. हिरण्य (चाँदी) 4. सुवर्ण (सोना) 5. धन (गाय आदि) 6. धान्य (गेहूँ आदि) 7. दासी 8. दास 9. कुप्य (किराना, वस्त्र) 10. भाण्ड (बर्तन)

103 छह बहिरंग तपः-1. अनशन 2. अवमौदर्य 3. वृत्ति परिसंख्यान 4. रस परित्याग 5. विविक्त शय्यासन 6. कायक्लेश

छह अंतरंग तप :- 7. प्रायश्चित्त 8. विनय 10. वैयावृत्त्य 10. स्वाध्याय 11. व्युत्सर्ग 12. ध्यान।

104 सात नरकों में कुल 84 लाख बिल हैं क्रमशः नीचे-नीचे :-1. तीस लाख 2. पच्चीस लाख 3. पंद्रह लाख 4. दस लाख 5. तीन लाख 6. पाँच कम एक लाख 7. मात्र पाँच

105 अंगोपांग नाम कर्म के तीन भेद हैं :-

1. औदारिक शरीर अंगोपांग
2. वैक्रियिक शरीर अंगोपांग
3. आहारक शरीर अंगोपांग

106 तीन श्वासोच्छ्वास में पढ़ना :- श्वांस ग्रहण करते समय -णमो अरिहंताणं, श्वांस छोड़ते समय-णमो सिद्धाणं, पुनः श्वांस ग्रहण करते समय-णमो आइरियाणं, श्वांस छोड़ते समय-णमो उवज्झायाणं, श्वांस ग्रहण करते समय-णमो लोए, श्वांस छोड़ते समय-सव्व साहूणं

107 जैनधर्म के प्रमुख सिद्धान्त निम्न हैं :-

1. प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकता है।
2. प्रत्येक जीव अपने किये कर्मों के फलों का ही भोक्ता है।
3. अहिंसा-जीवदया ही परम धर्म है।
4. एक वस्तु में अनेक धर्म होते हैं, इसे ही अनेकान्त कहते हैं।
5. वस्तु प्रतिपक्ष सहित होती है, अर्थात् नित्य है तो अनित्य भी। स्याद्वाद के द्वारा इसे समझ सकते हैं।

108 औदारिक शरीर की विशेषताएँ :-

1. उदार अर्थात् स्वर्ग, मोक्ष का साधन है।
2. स्थूल है देखने में आता है।
3. सड़न-गलन स्वभाव वाला है।

109 दुःख से पीड़ित एवं मृत्यु के ग्रास बने हुए इस संसारी प्राणी को देवी-देवता, राजा आदि कोई भी शरण नहीं है। ऐसा चिन्तन करना अशरण भावना है। ऐसा चिन्तन कर सच्चे देव-गुरु-शास्त्र अथवा निज आत्मा की ही शरण लेना चाहिए यही हितकारी है।

110 धन, शरीर सौंदर्य, कुल, जाति, ज्ञान आदि को निमित्त बनाकर अभिनाम, घमण्ड नहीं करना उत्तम मार्दव धर्म है। मृदुता, नम्रता का भाव मार्दव धर्म है।

1 वर्तमान के शासन नायक, जिनवाणी के है जो दायक।
वर्द्धमान वे क्यों कहलाये, कारण सबको कौन बताय॥

2 सिद्धारथ के राज दुलारे, त्रिशला नन्दन प्राण से प्यारे।
अतिवीर वे क्यों कहलाये, कारण हमको कौन बताये॥

3 हम सबके गुरु विद्यासागर, भरते सबकी ज्ञान से गागर।
राज्य में कितने विहार कीना, वीर प्रभु का नाम है लीना॥

4 सच्चा हमको मार्ग बताती, जिनवाणी है माँ कहलाती।
कैसे हमको है समझाती, अनुयोगों की बात बताती ॥

5 अष्ट अंग युत जिसने धारा, समदर्शन से मिला किनारा।
सहित उदाहरण से समझाओ, आठ अंग तो तन में पाओ॥

6 पुद्‌गल का है भेद कहाता, है स्कन्ध नाम वो पाता।
इसके छह तुम भेद बताओ, भेद बताकर इनाम पाओ॥

7 आँख से देखे पर न सुनता, मच्छर देखो गुन-गुन करता।
कितने प्राण है इसके होते, सही बताओ समय क्यों खोते॥

8 माँ ने मंगल स्वप्न है देखा, कौन सा भैया भाग्य की रेखा।
गर्भ में देखो सुत है आया, विद्याधर शुभ नाम कहाया॥

9 पूजा का है अंग कहाया, अभिषेक कर पुण्य कमाया।
कितने भेद है कौन बताएँ, सही बताकर इनाम पाएँ॥

10 नरकगति में दुख ही मिलता, कभी न सुख का फूल है खिलता।
कितने भेद का दुख हैं पाते, जीव नरक में कर्म सताते॥

11 जल है देखो जल न पीता, एकेन्द्रिय का जीवन जीता।
प्राण है कितने कौन बताए, व्यर्थ ही जल को यूं न बहाए॥

12 पूजा देखो पूज्य बनाती, भव-भव की बाधा है नशाती।
पूजा के है भेद बताना, कम से कम है चार गिनाना॥

13 जिनवर पूजा पूज्य बनाती, भव-भव की बाधा है नशाती।
पूजा के दो भेद बताना, जिनपूजा कर शिवसुख पाना॥

14 एक ही तन में अनेक रहते, बहुत काल तक दुख ही सहते।
जीव निगोद कहाँ न रहते, सही बताए जिनवर कहते॥

15 मंगल शब्द है पूज्य कहाता, अरिहन्तों की याद दिलाता।
मंगल शब्द है क्या कहलाता, अर्थ बताओ मेरे भ्राता॥

16 संयम से जीवन न सजाया, पापरूप परिणाम कहाया।
बारह भेद है कौन बताए, अविरति को है दूर भगाए॥

17 कर्मों को है शीघ्र नशाता, तप से मानव मुक्ति पाता।
अवमौदर्य है क्या कहलाता, साधु जीवन सुखी बनाता॥

18 ज्ञान जगत में सुख का कारण, करता है भव दुख का वारण।
अंग ज्ञान के सही बताना, आठों का है ज्ञान कराना॥

19 कर्मों को है शीघ्र नशाता, तप से मानव मुक्ति पाता।
अनशन तप है क्या कहलाता, सुखमय जीवन आप बनाता॥

20 ओमकार मय जिनवर वाणी, द्वादशांग के रूप बखानी।
अंगों के तुम नाम बताओ, कम से कम है पाँच गिनाओ॥

21 पात्र रहे वे श्रेष्ठ हमारे, भवसागर से हमको तारे।
नाम है 'अतिथी' जिसने पाया, अर्थ बताओ कैसे भाया॥

22 तप से कटते कर्म हमारे, शिव साधन के बने सहारे।
बाह्य तपों के नाम बताना, तप कर जीवन सफल बनाना॥

23 मंगल-मंगल काम है करना, पूज्य पुरुष को शीश पे धरना।
कितने कारण कौन बताए, मंगलाचरण तो नित ही गाए॥

24 दोषों को है दूर भगाता, निर्मल निज आतम को बनाता।
प्रतिक्रमण के भेद बताओ, सातों के है नाम गिनाओ॥

25 कर्मों को है शीघ्र नशाता, तप से मानव मुक्ति पाता।
तप के दो है भेद बताना, अन्तर भी उसमें समझाना॥

26 संयम हेतु तन को रखाना, भोजन से संतुष्ट कराना।
वृत्ति कौन सी मुनिवर धारे, पाँच बताएँ हमें सहारे॥

27 दोषों को है दूर भगाता, निर्मल निज आतम को बनाता।
आवश्यक वह क्या कहलाता, मोक्षमार्ग से जोड़े नाता॥

28 समीचीन व्यवहार चलाना, सत्य बात का ज्ञान कराना।
है निक्षेप के भेद बताना, सूत्र ग्रन्थ को शीश नवाना॥

29 क्षेत्र विदेह में जन्म है पाया, तीर्थंकर शुभ पद है कहाया।
कल्याणक के नाम बताए, तीन कौन से तद्भव पाए॥

30 उच्च नीच कुल में ले जाता, है कुम्हार सम जिसका खाता।
गोत्र कर्म के भेद बताओ, छह की संख्या पूर्ण कराओ॥

31 आस्रव के है भेद कहाते, सत्तावन की संख्या पाते।
नाम है इनके हमें बताना, इनसे बचकर शिवपुर जाना॥

32 अगले भव से मोक्ष है जाना, सिद्धशिला पर रहे ठिकाना।
देवों की महिमा बतलाओ, सर्वार्थसिद्धी में उन्हें है पाओ॥

33 जिनमन्दिर है हमकों जाना, अपने सारे पाप नशाना।
शिष्टाचार की बात बताना, कम से कम है पाँच गिनाना॥

34 कभी मरण से ना घबराना, मरकर नूतन तन है पाना।
मरण कभी न अकाल पाते, जीव कौन से प्रभु बताते॥

35 गुरु हमारे पूज्य कहाते, मोक्षमार्ग पर हमें चलाते।
शिष्टाचार है हमें बताना, गुरु सन्मुख हो शीश नवाना॥

36 चउ प्रकार का आहार त्यागें, मुनिवर निशदिन निज में जागे।
नाम सहित है हमें बताना, आहार का है ज्ञान कराना॥

37 जिनवाणी पर श्रद्धा रखना, सदा-सदा आगम है पढ़ना।
शिष्टाचार है हमें बताना, स्वाध्याय से कर्म नशाना॥

38 संवर के वे भेद कहाते, सत्तावन की संख्या पाते।
नाम है इनके हमें बताना, इन्हें धारकर शिवसुख पाना॥

39 अवश का है कर्त्तव्य कहाता, पाप बन्ध से सदा बचाता।
षट् आवश्यक मुनिवर पाले, कौन से भैया भव से तारे॥

40 श्रावक रसी का व्रत है पाले, व्रत संयम ही सुख के सहारे।
सात रसी का नाम बताना, दिन अनुसार है हमें गिनाना॥

41 दिशा-दिशा से पक्षी आते, पेड़ पे आकर रात बिताते।
दिशा है कितनी कौन बताए, सभी दिशा के नाम गिनाए॥

42 तीर्थंकर चौबीस कहाते, केवली जिनवर क्या गिन पाते।
पाँच है अन्तर हमें बताना, अरिहन्तो का ज्ञान कराना॥

43 एक वर्ष में बारह आते, अलग-अलग वे गीत हैं गाते।
बारह माह के नाम बताओ, हिन्दी के तुम भूल न जाओ॥

44 शिवपथ सुन्दर हमें बताया, तीर्थंकर का पद है पाया।
समवसरण में कहाँ विराजे, देव दुन्दुभि बजते बाजे॥

45 ज्ञान गुरु के शिष्य कहायें, नर तिर्यञ्च भी शीश नवायें।
शिक्षा-दीक्षा देकर तारें, कौन वे गुरुवर हमें सहारे॥

46 सागर नगर में मुनिव्रत धारा, विद्या गुरु का मिला सहारा।
मल्लप्पा के पुत्र कहाते, नाम बताओ शिवपुर पाते॥

47 नगर सदलगा जन्म है पाया, मुनि बन जीवन सफल बनाया।
विद्याष्टक है जिनकी रचना, नाम बताओ पाप से बचना॥

48 ग्राम ईसरी सबमें प्यारा, श्री सम्मेदशिखर भव हारा।
मुनिवर कौन वे दीक्षा धारे, विद्यासागर भव के किनारे॥

49 विद्या गुरु की शरण है पाया, आर्या मेंकर नाम कहाया।
प्रेम का सबको पाठ पढ़ाती, नाम बताओ कौन कहाती॥

50 प्रथम शिष्य है आप कहावे, सहज सरलता नित प्रकटावे।
नाम समयसागर है पाया, दीक्षा नगरी बताओ भाया॥

51 सागर नगर में जन्मी काया, क्षमासागर मुनि नाम है पाया।
प्रतिभा जिनकी न्यारी प्यारी, कौन क्षेत्र पर दीक्षा धारी॥

52 बाबा जंगल वाले कहाते, जिनशासन की बात बताते।
चिन्मयसागर नाम कहाया, दीक्षा कहाँ पर उनने पाया॥

53 हँसते-हँसते सब कुछ सहते, गुरु गुण गाते तप नित करते।
उत्तमसागर मुनि कहावे, जन्मनगरी है कौन बतावे॥

54 परमेष्ठी आचार्य कहाते, शिवपथ सच्चा हमें बताते।
नगर सनावद जन्म है पाया, नाम गुरु का बताओ भाया॥

55 सच्चा ज्ञान है गुरुवर धारे, पढ़े पढ़ावे कर्म नशावें।
उपाध्याय मुनि नाम बतावें, कम से कम हैं पाँच गिनावें॥

56 ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़ है पाला, सूली सिंहासन कर डाला।
सेठ का सच्चा नाम बताना, श्रावक जीवन सफल बनाना॥

57 णमोकार न कंठ समाया, मुक्तिरमा फिर भी परिणाया।
उन मुनिवर का नाम बताओ, उज्ज्वल अपने भाव बनाओ॥

58 णमोकार सम मंत्र न दूजा, सदा करो तुम इसकी पूजा।
दृढ़ श्रद्धा धर विद्या पाई, गगन गमन है कौन वो भाई॥

59 न्हवन का जल है रोग भगावे, कन्या को है लक्ष्मण भावे।
संयम का फल जिसने पाया, नाम बताओ उसका भाया॥

60 जिनशासन की शान बढ़ाया, भले ही अपने प्राण गंवाया।
बालक का तुम नाम बताओ, धर्म ध्वजा को शीश नवाओ॥

61 जीवन उन्नत अपना बनाया, विद्या गुरु से संयम पाया।
युगल भाई के नाम बताओ, दर्शन कर उनके सुख पाओ॥

62 धन्य मात अरु पिता व भाई, विद्या गुरु से दीक्षा पाई।
भाई-बहिन का नाम बताना, दर्शन कर उनके सुख पाना॥

63 सास ने जिसको घर से निकाला, पाप कर्म का दिया हवाला।
पति वियोग भी उसने पाया, नाम बताओ सती का भाया॥

64 सती अञ्जना कर्म की मारी, मिला पति से कष्ट तो भारी।
बरस बाईस तक फल है पाया, किस कारण से बताओ भाया॥

65 टूट गये थे ताले सारे, सभी लगाते जय-जय नारे।
मुनिवर का तुम नाम बताना, उनकी रचना ज्ञात कराना॥

66 भक्तामर की महिमा न्यारी, मानतुङ्ग मुनिवर ने उचारी।
चौथा काव्य[1] है हमें सुनाओ, शुद्ध सुनाकर इनाम पाओ॥

67 चरण धूल जब शिला पे मारी, सोने की वह बन गई सारी।
उन मुनिवर का नाम बताओ, मोक्षमार्ग सच्चा अपनाओ॥

68 ज्ञानार्णव शुभ ग्रन्थ बनाया, ज्ञान ध्यान का पाठ पढ़ाया।
मुनिवर शुभचन्द्र जी किसको, नाम बताओ ज्ञात हो जिसको॥

69 अन्न व जल का त्याग है कीना, जिनभक्ति में हो गई लीना।
सती का सच्चा नाम बताओ, नगर के सारे द्वार खुलाओ॥

70 मुनि बनाया पथ पे लगाया, पति का स्थिर मन है कराया।
नारी का तुम नाम बताओ, सदा सदा आदर्श निभाओ॥

1. इस स्थान पर अन्य नम्बर दो, तीन आदि लगाकर भी पूछ सकते हैं।

71 श्रावक का कर्तव्य कहाता, दान धर्म ही पाप नशाता।
समदृष्टि जो श्रावक भाई, दान देय किस गति में जाई॥

72 गुरु आदेश जो सुन ना पाये, विवाद में मंत्री को हराये।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, रक्षाबन्धन पर्व मनाओ॥

73 नगर हस्तिनापुर वे आये, विक्रिया से है रूप धराये।
मुनि उपसर्ग दूर है कीना, नाम मुनि का कहो नगीना॥

74 दीक्षा लेकर तप है कीना, पर पत्नी का मोह ना छीना।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, वारिषेण मुनि शीश नवाओ॥

75 रविवार का व्रत है कीना, बिना नमक का भोजन लीना।
सेठ-सेठानी नाम बताओ, व्रत से स्वर्ग मुक्ति है पाओ॥

76 देवों ने आहारा कराया, पर मुनि को न पता बताया।
मुनिवर कौन महाव्रत धारी, शीश झुकाएँ जनता सारी॥

77 राजपुत्री का कुष्ट मिटाया, ब्रह्मचर्य महिमा प्रकटाया।
पति-पत्नि का नाम बताओ, व्रत धर जीवन सफल बनाओ॥

78 व्यापारी ने घाटा खाया, कागज फाड़ के धैर्य दिलाया।
जौहरी का तुम नाम बताओ, कभी किसी का दिल न दुखाओ॥

79 दान धर्म का भाव है जागा, पात्र दान कर लोभ है त्यागा।
कौन गति में जीव वो जाता, मिथ्या दर्श से जिसका नाता॥

80 देख बहिन को राग है जागा, पता चला तब मोह है भागा।
युगल भाई का नाम बताना, दीक्षा लेकर कर्म नशाना॥

81 पाप का कैसा उदय है आया, पोटली में भी छेद है पाया।
उस बालक का नाम बताओ, पात्रदान कर पुण्य बढ़ाओ॥

82 धर्म तीर्थ है जिन्हें चलाना, राग भाव को दूर भगाना।
ऋषभदेव वैराग्य को पावे, किस कारण से हमें बतावे॥

83 खून की बावड़ी तुम्हें बनाना, पर मेरा जीवन है बचाना।
कौन वो राजा पाप कमाता, पाप कमाकर नरक है जाता॥

84 पति का जिसने कुष्ट मिटाया, भक्ति की महिमा प्रकटाया।
सती का सच्चा नाम बताना, बड़ी बहिन को भूल न जाना॥

85 दीक्षा ले झट ज्ञान है पावे, केवलज्ञानी वे कहलावें।
चक्री का तुम नाम बताओ, वैरागी को शीश नवाओ॥

86 पाप कर्म का उदय है आया, जेल में पुत्र ने बंद करवाया।
श्रेणिक पुत्र का नाम बताओ, झूठे जग का मोह नशाओ॥

87 रात का भोजन जिसने त्यागा, प्राणों का भी प्यार न जागा।
मरकर किसने क्या पद पाया, सही बताओ मेरे भाया॥

88 महावीर जी क्षेत्र हे प्यारा, वीर प्रभु का जहाँ सहारा।
जिला कौन-सा कौन बताएँ, सही बताकर इनाम पाएँ॥

89 श्री सम्मेदशिखर जी प्यारा, सिद्धक्षेत्र है सबमें न्यारा।
जिला कौन सा कौन बताए, नाम बताकर इनाम पाए॥

90 प्रतिमा उपाध्याय की न्यारी, नदी बेतवा तट है किनारी।
अनगिन प्रतिमा कौन गिनाए, तीर्थक्षेत्र का नाम बताए॥

91 समतासागर नाम कहाया, पढ़ना लिखना सदा सुहाया।
मुनि दीक्षा है कहाँ वे धारे, विद्यासागर गुरु सहारे॥

92 सेवा में नित गुरु की रहते, पढ़ते लिखते तप भी करते।
प्रसादसागर मुनि कहावे, क्षुल्लक दीक्षा कहाँ वो पावे॥

93 सिरीभूवलय ग्रन्थ कहाया, सब ग्रन्थों का सार समाया।
रचा किन्होंने हमें बताना, खोज सको तो खोज के लाना॥

94 तन मन से गुरु सेवा करते, बच्चों का चित क्षण में हरते।
क्षुल्लक दीक्षा कहाँ पे धारे, चन्द्रसागर जी मुनि हमारे॥

95 सिंह गर्जना करते भारी, सत्पथ चलते सुन नर नारी।
सुधासागर मुनि आप कहावे, क्षुल्लक दीक्षा कहाँ वे पावे॥

96 हमें छोड़कर स्वर्ग सिधारे, मुनिवर थे हमें प्राणों से प्यारे।
प्रवचनसागर नाम कहाया, ऐलक दीक्षा कहाँ पे पाया॥

97 सहज व्याकरण ज्ञान कराता, जैनाचार्य का ग्रन्थ कहाता।
उसी ग्रन्थ का नाम बताओ, संस्कृत भाषा पढ़ो पढ़ाओ॥

98 तीन लोक का ज्ञान कराता, करणानुयोग का ग्रन्थ कहाता।
ग्रन्थ का सच्चा नाम बताओ, यतिवृषभ जी शीश नवाओ॥

99 सिद्धक्षेत्र सोनागिर प्यारा, चन्द्रप्रभु जी का जहाँ सहारा।
कितने मुनिवर दीक्षा धारे, विद्यागुरु ही एक सहारे॥

100 सिद्धक्षेत्र नेमावर प्यारा, विद्या गुरु का मिला सहारा।
दस मुनियों के नाम बताएँ, एक साथ जो दीक्षा पाएँ॥

101 सिद्धक्षेत्र मुक्तागिर प्यारा, सुन्दर अद्‌भुत दिखे नजारा।
कितने मुनिवर दीक्षा धारे, विद्या गुरुवर एक सहारे॥

102 गुरु कृपा से सब कुछ पाते, सरल सरस सुरचना बनाते।
सुव्रतसागर नाम है पाया, दीक्षा नगरी बताओ भाया॥

103 केवलज्ञान प्रभु ने पाया, पर प्रवचन न कभी सुनाया।
तिथी कौन सी जिनवर बोले, वीर प्रभु सबके मल धोले॥

104 बिना पढ़े सब ज्ञान बताते, द्वादशाङ्ग का पाठ पढ़ाते।
मुनिवर कौन सी ऋद्धिधारे, भव्य जनों के बने सहारे॥

105 चमचम चमके काया ऐसे, सूर्य किरण हो धरा पे जैसे।
बहुत-बहुत उपवास हैं करते, कौन सी ऋद्धि मुनिवर धरते॥

106 रावण का था मान गलाया, निज अंगुष्ठ को जरा दबाया।
ऋद्धि कौन सी मुनिवरधारी, बालि मुनि को नमन हमारी॥

107 रूखा सूखा अन्न जो खावें, पड़े हाथ अमृत हो जावें।
ऋद्धि कौन सी मुनिवर धारे, भवसमुद्र के आप किनारे॥

108 अनगिन मनुज भी जहाँ समाते, मुनिवर के सब दर्शन पाते।
छोटी सी कुटिया वो हमारी, मुनिवर कौन सी ऋद्धिधारी॥

109 प्रभु के गणधर आप कहाते, वीर प्रभु को शीश नवाते।
मोक्ष कहा से उनने पाया, गौतम गणधर नाम कहाया॥

110 सीताराम के पुत्र कहावे, पाप नशावे मोक्ष है जावे।
सिद्धक्षेत्र का नाम बताओ, लवकुश मुनि को शीश नवाओ॥

1 प्रियकारिणी माता के गर्भ में बालक के आते ही घर, नगर और राज्य में धन-धान्य की समृद्धि प्रारम्भ हो गई थी अतएव राजा सिद्धार्थ ने बालक वर्द्धमान नाम रखा।

2 एक हाथी मदोन्मत्त हो किसी के वश में नहीं हो रहा था, उत्पात मचा रहा था। महावीर को सामने आता देख हाथी शान्त हो गया एवं नतमस्तक हो सूंड उठाकर नमस्कार करने लगा। तब जन समूह ने कुमार की प्रशंसा की और उसका नाम अतिवीर रख दिया।

3 1. मध्यप्रदेश 2. राजस्थान 3. उत्तरप्रदेश 4. महाराष्ट्र 5. गुजरात 6. बिहार 7. छत्तीसगढ़ 8. उड़ीसा 9. पश्चिम बंगाल अर्थात् 9 राज्यों में आवागमन किया है।

4 चलते-चलते गिर पड़ा बालक जब रोने लगता है तब माँ उसे चार प्रकार से समझाने का प्रयास करती है उसी प्रकार जिनवाणी माँ भी चार अनुयोगों के माध्यम से संसार समुद्र में डूबते हुए प्राणियों को समझाती है।

1. अरे! तेरी बहिन भी तो गिरी थी वह तो नहीं रोई थी तू क्यों रोता है। उठ खड़ा हो जा। प्रथमानुयोग में इसी तरह महापुरुषों के दृष्टान्त द्वारा समझाया जाता है।
2. अरे! कल जब तेरी बहिन गिरी थी तो तू कैसा हँस रहा था, अब तू गिरा तो रो रहा है, देख कर्मों का फल तो मिलेगा ही रोता क्यों है ? करणानुयोग कर्म सिद्धान्त का ज्ञान कराता है।
3. अरे! रास्ता साफ है फिर भी देखकर नहीं चलेगा, असावधानी करेगा तो गिरेगा, ठोकर लगेगी ही अतः देख कर चलना। चरणानुयोग हमें कैसे चलना, आचरण करना यह बात सिखलाता है।
4. अरे! घोड़ा कूदा, तुझे चोट नहीं लगी, उठ खड़ा हो जा। उसी प्रकार द्रव्यानुयोग कहता है, आत्मा मरती नहीं, आत्मा को कष्ट नहीं होता यह सब पुद्गल आश्रित है आत्मा की सोच।

5 सम्यग्दर्शन के आठ अंग
शरीर के अंग
1. निःशंकित अंग - बाँया पैर
2. निःकांक्षित अंग- दाँया पैर
3. निर्विचिकित्सा अंग-बाँया हाथ
4. अमूढ़ दृष्टि अंग - पीठ
5. उपगूहन अंग - गुप्तांग
6. स्थितिकरण अंग - दाया हाथ
7. वात्सल्य अंग- हृदय
8. प्रभावना अंग - मुँह

6 स्कन्ध के छह भेद :- 1. बादर-बादर 2. बादर 3. बादर-सूक्ष्म 4. सूक्ष्म-बादर 5. सूक्ष्म 6. सूक्ष्म-सूक्ष्म

7 चार इन्द्रिय प्राण, आयु, श्वासोच्छ्वास,

कायबल और वचनबल कुल – 8 प्राण मच्छर के होते हैं।

8 चारण ऋद्धि मुनिराज को पड़गाहन करके आहारदान दिया।

9 अभिषेक चार प्रकार का होता है–
1. जन्माभिषेक
2. राज्याभिषेक
3. दीक्षाभिषेक
4. प्रतिमाभिषेक

10 नारकियों को चार प्रकार के दुःख होते हैंः–
1. क्षेत्र कृत दुःख
2. असुर देव कृत दुःख
3. शारीरिक दुःख
4. मानसिक दुःख

11 जल के चार प्राण होते हैं :– स्पर्शन इन्द्रिय प्राण, आयुप्राण, श्वासोच्छ्वास, कायबलप्राण

12 पूजा के चार भेद :–
1. नित्य पूजा
2. नैमित्तिक पूजा
3. कल्पद्रुम पूजा 'महामह'
4. इन्द्रध्वज पूजा

13 पूजा के दो भेद :–
1. द्रव्य पूजा
2. भाव पूजा
अष्टद्रव्य सहित गुणानुवाद द्रव्यपूजा एवं द्रव्य सहित मात्र भाव सहित स्तुति भाव पूजा है।

14 1. केवली भगवान के शरीर
2. देवों के शरीर
3. नारकियों के शरीर
4. पृथ्वीकायिक
5. जलकायिक
6. वायुकायिक
7. अग्निकायिक
8. आहारक शरीर
इन आठ स्थानों में निगोदिया जीव नहीं रहते हैं।

15 जो पुण्य को लाता है तथा पाप को गलाता है वह मंगल कहलाता है।

16 बारह अविरति के नाम :– षट्काय(पाँच स्थावर एवं एक त्रस) के जीवों की रक्षा न करना, पाँच इन्द्रिय और मन को वश में न करना।

17 भूख से कम खाना अवमौदर्य तप कहलाता है।

18 ज्ञान के आठ अंग (ज्ञानाचार)–
1. अर्थाचार
2. व्यञ्जनाचार
3. उभयाचार (अर्थव्यञ्जन)
4. कालाचार
7. अनिह्नवाचार
6. उपधानाचार
7. बहुमानाचार
8. विनयाचार

19 चारों प्रकार के आहार का त्याग करना अनशन तप कहलाता है।

20 द्वादशांग के कोई पाँच अंगों के नाम –
1. आचारांग 2. समवायांग 3.सूत्रकृतांग 4. प्रश्नव्याकरणांग 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति 6. उपासकाध्यानांग 7. ज्ञातृधर्मकथांग 8. अन्तकृत दशांग 9. अनुत्तरोपपादिक दशांग 10. स्थानांग 11. विपाकसूत्र 12. दृष्टिवाद अंग

21 जिसके आने की निश्चित तिथि न हो उसे 'अतिथि' कहते हैं।

22 बाह्य तपों के नाम –
1. अनशन
2. अवमौदर्य
3. वृत्तिपरिसंख्यान
4. रस परित्याग
5. विविक्त शय्यासन
6. कायक्लेश

23 मंगलाचरण किन कारणों से करें :–
1. शिष्टाचार का पालन
2. निर्विघ्न ग्रन्थ की समाप्ति
3. नास्तिकता का परिहार

24 प्रतिक्रमण के सात भेद :–
1. दैवसिक
2. रात्रिक
3. पाक्षिक
4. चातुर्मासिक
5. वार्षिक
6. ईर्यापथिक
7. औत्मार्थिक (युग प्रतिक्रमण)

25 तप के दो भेद है :–
बाह्य तप और अन्तरंग तप।
बाह्य तप को अन्य मति भी धारण करते है एवं वह देखने आता है किन्तु अन्तरंग तप देखने में नहीं आता, सम्यग्दृष्टि ही इसका पालन करते है।

26 आहार हेतु पाँच वृत्तियाँ :–
1. गर्तपूरण विधी
2. अक्षमृक्षण
3. अग्निप्रशमन वृत्ति
4. भ्रामरी वृत्ति
5. गोचरी वृत्ति

27 प्रतिक्रमण

28 निक्षेप के चार भेद है :–
1. नाम निक्षेप 2. स्थापना निक्षेप 3. द्रव्य निक्षेप 4. भाव निक्षेप

29 विदेह क्षेत्र में तीन कल्याणक वाले तीर्थंकर भी हो सकते है। वे कल्याणक है :–
1. दीक्षा कल्याणक 2. ज्ञान कल्याणक
3. निर्वाण/मोक्ष कल्याणक

30 गोत्र कर्म के छह भेद :–
1. उच्च-उच्च गोत्र 2. उच्च गोत्र 3. उच्च-नीच गोत्र 4. नीच-उच्च गोत्र 5. नीच गोत्र 6. नीच-नीच गोत्र

31 सत्तावन आस्त्रव के भेद :– पाँच मिथ्यात्व, बारह अविरती, पन्द्रह योग, पच्चीस कषाय।

32 सर्वार्थसिद्धि के देव की विशेषताएँ :–
1. एक भवातारी होते हैं।

2. एक हाथ प्रमाण ऊँची काया होती है।
3. तैंतीस हजार वर्ष के बाद एक बार अमृत का आहार करते हैं।
4. तैंतीस पक्ष के बाद श्वास लेते हैं।
5. तैंतीस सागर की आयु वाले होते हैं अर्थात् इनमें जघन्य अथवा उत्कृष्ट का भेद नहीं रहता।

33 जिनमन्दिर में करने योग्य शिष्टाचार :
1. हाथ पैर धोकर, मुखादिक को साफ कर शुद्धता के साथ मन्दिर जी में प्रवेश करें।
2. भगवान के ठीक सामने खड़े न होकर बाजू में खड़े होना।
3. आरम्भ परिग्रह बढ़ाने वाली, घर गृहस्थी सम्बन्धी वार्ता नहीं करना।
4. जिनालय के अन्दर दीवाल से टिककर नहीं बैठना।
5. पूजन, स्तोत्र पाठ करते समय एकाग्रता रखना।

34 अकाल मरण नहीं होता :-
1. देवों का
2. नारकियों का
3. चरमोत्तम देह वालों का
4. असंख्यात वर्ष आयु वालों का

35 गुरु के समक्ष शिष्टाचार-
1. गुरुओं को निकट आते देख विनय पूर्वक खड़े होना।
2. मुनियों की वसतिका में बैठ व्यर्थ की चर्चा नहीं करना।
3. मुनिराज के समक्ष बहुत जोर से अथवा भद्दे वचन नहीं बोलना।
4. बिना हाथ-पैर धोये, मुख शुद्धि किये मुनिराज को छूना नहीं।
5. मुनिराज की तरफ पीठ करके अथवा पैर फैलाकर नहीं बैठना।

36 चार प्रकार का आहार :-
1. खाद्य- रोटी आदि खाने वाले पदार्थ
2. स्वाद- लोंग इलायची आदि
3. लेय- रबड़ी, मलाई आदि चाटने वाले पदार्थ।
4. पेय- जल, रस आदि पीने वाले पदार्थ

37 स्वाध्याय सम्बन्धी शिष्टाचार :-
1. हाथ-पैर को धोकर, मुख शुद्धि कर विनय पूर्वक बैठकर स्वाध्याय करना।
2. स्वाध्याय करते समय हाथ से नाभि के नीचे वाले अंगों का स्पर्श नहीं करना।
3. ग्रन्थों के पन्नों को सावधानी से पलटना।
4. मंगलाचरण प्रारम्भ होने के पूर्व सभा में बैठना और जिनवाणी स्तुति पूर्ण होने के बाद कायोत्सर्ग करके ही स्थान छोड़ना।
5. स्वाध्याय के समय दीवाल, खंबे आदि से टिककर नहीं बैठना, ऊँघना नहीं, जम्भाई नहीं लेना।

38 संवर के सत्तावन भेद :-

5 महाव्रत, 5समिति, 3 गुप्ति, 10 धर्म, 22 परीषह और 12 भावना।

39 मुनिराज के षट्आवश्यक :-
1. समता 2. स्तुति 3. वन्दना 4. प्रत्याख्यान 5. प्रतिक्रमण 6. कायोत्सर्ग

40

1. सोमवार	- हरी का त्याग
2. मंगलवार	- मीठा का त्याग
3. बुधवार	- घी का त्याग
4. गुरुवार	- दूध का त्याग
5. शुक्रवार	- दही का त्याग
6. शनिवार	- तेल का त्याग
7. रविवार	- नमक का त्याग

41 1. पूर्व दिशा 2. दक्षिण 3.पश्चिम 4. उत्तर 5.पूर्व उत्तर-ईशान दिशा 6. उत्तर पश्चिम-वायव्य 7.पूर्व दक्षिण-आग्नेय 8. दक्षिण पश्चिम-नैऋत्य 9.ऊपर-ऊर्ध्व दिशा 10. नीचे-अधो दिशा।

42 तीर्थंकर केवली सामान्य केवली
1. पञ्चकल्याणक होते हैं।
- कल्याणक नहीं होते हैं।
2. चिह्न होते हैं।
- चिह्न नहीं होते हैं।
3. गणधर होते हैं।
- नहीं होते हैं।
4. समवसरण लगता है।
- गंधकुटी होती है।
5. जन्म से अवधिज्ञानी होते हैं।
- कोई नियम नहीं है।
6. दिव्यध्वनि नियम से खिरती है।
- कोई नियम नहीं है।
7. दीक्षा लेते ही मनःपर्ययज्ञान होता है
- नियम नहीं है।
8. माता-पिता की अकेली सन्तान होते हैं।
- अनेक भाई-बहिन हो सकते हैं।

43 हिन्दी के बारह महिनें :-
1. चैत्र 2. वैशाख 3.ज्येष्ठ 4. अषाढ़ 5. श्रावण 6. भाद्र 7. अश्विन(कुँआर) 8. कार्तिक 9. मार्गशीर्ष (अगहन) 10. पौष 11. माघ 12. फाल्गुन

44 श्रीमण्डप नामक अष्टम भूमि के आगे स्फटिक मणिमय वेदी होती है जिसमें एक के ऊपर एक क्रमशः तीन पीठ होते हैं। तृतीय पीठ पर गंधकुटी के मध्य में पादपीठ सहित सिंहासन होता है। तीर्थंकर प्रभु सिंहासन से चार अंगुल ऊपर आकाश में विराजमान रहते हैं।

45 श्री विद्यासागर जी महाराज

46 मुनि श्री योगसागर जी महाराज

47 मुनि श्री नियमसागर जी महाराज

48 मुनि श्री सुधासागर जी महाराज, मुनि श्री समतासागर जी महाराज, मुनि श्री स्वभावसागर जी महाराज, मुनि श्री सरलसागर जी महाराज, मुनि श्री समाधिसागर जी महाराज

49 मढ़ियाजी की संचालिका ब्र. मणिबाई जी

50 श्री सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिला-छतरपुर

(म.प्र.)

51 नैनागिर जी सिद्धक्षेत्र

52 सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी

53 अब्दुललाट (महा.)

54 आचार्य वर्धमानसागर जी महाराज

55 श्री उपाध्याय गुप्तिसागर जी महाराज, श्री निजानंदसागर जी महाराज,श्री कामकुमार नंदिजी, नयनसागरजी, निर्भयसागर जी, श्रुतसागर जी

56 सेठ सुदर्शन

57 मुनि शिवभूति

58 अञ्जन चोर

59 विशल्या

60 निकलंक

61 मुनि श्री समयसागर जी महाराज, मुनि श्री योगसागर जी महाराज, मुनि श्री अनन्तसागर जी महाराज, मुनि श्री भावसागर जी, मुनि श्री उपशमसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रशमसागर जी महाराज, मुनि श्री अगम्यसागर जी महाराज, मुनि श्री अनुभवसागर जी महाराज।

62 1. श्री समतासागर जी महाराज
-श्री संयममती जी,श्री वैराग्यमती जी
2. श्री निर्वेगसागर जी महाराज
-श्री संतुष्टमती जी
3. श्री अचलसागर जी महाराज
- श्री श्रुतमती जी
4. श्री गुरुमती जी
- ऐलक दयासागर जी
5. श्री विलक्षणामती जी
- ऐलक सम्पूर्णसागर जी

63 अञ्जनासती

64 सौत ईर्ष्या के कारण 22 मिनट तक जिनप्रतिमा को वेदी से बाहर कर अनछने पानी में रखा था।

65 मुनि श्री मानतुङ्ग आचार्य, रचना- भक्तामर स्तोत्र

66 वस्तुं गुणान्------- भुजाम्याम्

67 आचार्य शुभचन्द्र जी

68 भर्तृहरि भाई

69 सती नीली

70 सुन्दरी नागला अथवा नागला

71 देवगति में

72 मुनि श्री श्रुतसागर जी महाराज

73 मुनि श्री विष्णुकुमार जी

74 मुनि श्री पुष्पडाल जी

75 मतिसागर सेठ और गुणसुंदरी सेठानी

76 मुनि श्री चन्द्रगुप्त

77 जिनदत्त सेठ व जिनदत्ता सेठानी

78 जौहरी रायचन्द्र जी (शतावधानी)

79 भोगभूमि मनुष्यगति में

80 कुलभूषण व देशभूषण मुनि

81 अकृतपुण्य

82 नीलांजना का नृत्य देखते समय उसकी मृत्यु हो जाने से

83 राजा अरविन्द्र

84 मैनासुन्दरी, बड़ी बहिन सुरसुन्दरी

85 भरत चक्रवर्ती

86 राजा कुणिक

87 सियार मरकर प्रीतिंकर सेठ (तद्‌भव मोक्षगामी) हुआ।

88 जिला सवाई माधोपुर

89 जिला गिरडीह (झारखण्ड)

90 देवगढ़ तीर्थक्षेत्र जिला-ललितपुर

91 ईसरी श्री सम्मेदशिखर

92 नेमावर सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र

93 कुमुदेन्दु आचार्य

94 सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी

95 सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी

96 सिद्धक्षेत्र गिरनार जी

97 कातन्त्ररूपमाला

98 तिलोयपण्णत्ति

99 8 मुनिराज- मुनि श्री प्रमाणसागर जी, मुनि श्री आर्जवसागर जी, मुनि श्री मार्दव सागर जी, मुनि श्री पवित्रसागर जी, मुनि श्री पवित्रसागर जी, मुनि श्री उत्तमसागर जी, मुनि श्री चिन्मयसागर जी, मुनि श्री पावनसागर जी, मुनि श्री सुखसागर जी

100 मुनि श्री अपूर्वसागर जी, मुनि श्री प्रशान्तसागर जी, मुनि श्री निर्वेगसागर जी, मुनि श्री विनीतसागर जी, मुनि श्री निर्णयसागर जी, मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी, मुनि श्री प्रवचनसागर जी, मुनि श्री पुण्य सागर जी, मुनि श्री पायसागर जी, मुनि श्री प्रसादसागर जी।

101 9 मुनिराज- मुनि श्री अभयसागर जी, मुनि श्री अक्षयसागर जी, मुनि श्री प्रशस्तसागर जी, मुनि श्री पुराणसागर जी, मुनि श्री प्रयोगसागर जी, मुनि श्री प्रबोधसागर जी, मुनि श्री प्रणम्यसागर जी, मुनि श्री प्रभातसागर जी, मुनि श्री चन्द्रसागर जी

102 सिद्धक्षेत्र नेमावर सिद्धोदय

103 श्रावण कृष्ण प्रतिपदा(वीरशासन जयन्ती)

104 प्रज्ञाश्रमण ऋद्धिधारी

105 दीप्ततप्त ऋद्धि

106 कायबल ऋद्धि

107 अमृतस्त्रावी

108 अक्षीण महालय ऋद्धिधारी

109 श्री गुणावा जी सिद्धक्षेत्र

110 श्री सिद्धक्षेत्र पावागढ़ जी

1 अप्रतिघाती ज्ञान कहाता, मुनिवर से है जिसका नाता।
केवलज्ञान का बने सहाई, नाम ज्ञान का बताओ भाई॥

2 भूख प्यास तो कभी न मिटती, नरक में साता कभी न मिलती।
कैसा तन है नारकी पाते, पाप करो तो नरक ही जाते॥

3 नर-नारी संग जन्में भाई, कल्पवृक्ष है एक सहाई।
संज्ञा उनकी कौन बताए, भोग भूमि के जीव कहाए॥

4 भोगभूमि में जन्म है पाया, सुखमय जीवन पूर्ण बिताया।
मरण को कैसे गले लगाते, स्वर्ग सम्पदा है फिर पाते॥

5 महापुरुष हैं वे कहलाते, तीर्थंकर की पदवी पाते।
परिभाषा उनकी बतलाना, भव्य जनों को राह बताना॥

6 आखा तीज का पर्व है आया, काम है सारे सुगम बनाया।
कारण खोज हमें बतलाना, जिनआगम का ज्ञान कराना॥

7 आगम को हम शीश झुकाते, नित पढ़ते अरु कर्म नशाते।
आगम किसको कहते गुरुवर, कुन्दकुन्द गुरु ज्ञान के तरुवर॥

8 पुण्यवान वे पुरुष कहाते, स्वर्ग-नरक व मोक्ष है पातें।
शत सत्तर कम एक बताना, महापुरुष का ज्ञान कराना॥

9 पाप कमाते पुण्य नशाते, पापी मरें नरक में जाते।
जन्म नरक में कैसे पाया, कितना उसने कष्ट उठाया॥

10 हँसी खुशी से पर्व मनाया, दीपावली का दिन है आया।
क्यों व कैसे पर्व मनाना, आगम के अनुसार बताना॥

11 इन्द्रों में अहमिन्द्र कहाते, अन्तिम स्वर्ग में समय बिताते।
कितनी ऊँची उनकी काया, अगले भव में मिटती माया॥

12 जिनआगम है मोक्ष प्रदाता, शाश्वत सुख से जुड़ता नाता।
कर्त्ता कौन है हमें बताना, तीनों को है शीश नवाना॥

13 अन्त भोग भूमि का आया, पुण्य पाप का फल है पाया।
दण्ड व्यवस्था हमें बताना, काल में कुलकर के समझाना॥

14 स्वर्ग लोक से देव है आते, जन्म महोत्सव खूब मनाते।
कलशों का परिणाम बताना, तीर्थंकर का न्हवन कराना॥

15 जन्म महोत्सव देव मनाते, तीर्थंकर का न्हवन कराते।
जल है कहाँ से उनने लाया, सही-सही बतलाओ भाया॥

16 पुण्य योग से नर तन पाया, शनि से फिर क्यों डरते भाया।
कितने ऊपर विमान रहता, पुण्य-पाप का फल जग सहता॥

17 जन्म धरा पर प्रभु ने पाया, तीर्थंकर शुभ नाम कहाया।
देव सभी वे कैसे जाने, भवन विमानों में है माने॥

18 युगल पुत्र है गर्भ में आये, मात-पिता मन में हर्षाये।
स्वप्न कौन से सीता देखे, लव-कुश बेटे चन्द्र सरीखे॥

19 मोह शत्रु से राम थे हारे, कौन बने थे नेक सहारे।
सम्बोधन दे उन्हें सम्हाला, मोक्षमार्ग है अमृत प्याला॥

20 कुण्डलपुर जी तीर्थ है न्यारा, विद्यागुरु का जहाँ सहारा।
उच्चासन पर कब है विराजे, बड़ेबाबा जी बजे थे बाजे॥

21 तीर्थ दयोदय सबमें न्यारा, रेवानद का जहाँ किनारा।
पच्चीस मुनिवर दीक्षा धारे, तिथी कौन सी बताओ प्यारे॥

22 सिद्धोदय है तीर्थ सहारा, नेमावर रेवा का किनारा।
मुनिवर दस है दीक्षा धारे, तिथी कौन सी सबको तारे॥

23 सिद्ध क्षेत्र सिद्धोदय प्यारा, पार्श्वनाथ का जहाँ सहारा।
तेईस मुनिवर दीक्षा धारे, तिथी कौन सी सबको तारे॥

24 नित जप तप में लीन जो रहते, तथा परीषह हँसकर सहते।
योगसागर मुनि माथ नवायें, दीक्षा स्थल नाम बतायें॥

25 राज्य बिहार में जन्मे मुनिवर, विद्यासागर जिनके गुरुवर।
उनका सच्चा नाम बताना, नाम बताकर इनाम पाना॥

26 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, सागर नगर की शान बढ़ाओ॥

27 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, नगर जबलपुर शान बढ़ाओ॥

28 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, बुढ़ार ग्राम की शान बढ़ाओ॥

29 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, नगर ललितपुर शान बढ़ाओ॥

30 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, ग्राम सदलगा शान बढ़ाओ॥

31 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, सिरसागंज की शान बढ़ाओ॥

32 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, नगर सनावद शान बढ़ाओ॥

33 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनियों के तुम नाम बताओ, नन्ही देवरी शान बढ़ाओ॥

34 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, ईशुरवारा शान बढ़ाओ॥

35 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, गोटेगाँव की शान बढ़ाओ॥

36 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, छिन्दवाड़ा की शान बढ़ाओ॥

37 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, नगर सिहोरा शान बढ़ाओ॥

38 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, बासौदा की शान बढ़ाओ॥

39 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, बामौरा की शान बढ़ाओ॥

40 संयम से जीवन शृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, जिला नागपुर शान बढ़ाओ॥

41 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, बण्डा नगर की शान बढ़ाओ।

42 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, महुआ ग्राम की शान बढ़ाओ॥

43 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, ग्राम गढ़ा कोटा गुण गाओ॥

44 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, नगर पनागर शान बढाओ॥

45 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, रहली ग्राम की शान बढ़ाओ॥

46 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, बड़बाह ग्राम की शान बढ़ाओ॥

47 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, हाटपीपल्या शान बढ़ाओ॥

48 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, अजनास ग्राम की शान बढ़ाओ॥

49 संयम से जीवन श्रृंगारा, विद्यागुरु का मिला सहारा।
मुनिवर का तुम नाम बताओ, नगर सिरोंज की शान बढ़ाओ॥

50 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, ग्राम चरगवाँ शान बढ़ाओ॥

51 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, सागर जिला की शान बढ़ाओ॥

52 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, बण्डा ग्राम की शान बढ़ाओ॥

53 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, खुरई नगर की शान बढ़ाओ॥

54 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, गोटेगाँव की शान बढ़ाओ॥

55 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, छिन्दवाड़ा की शान बढ़ाओ॥

56 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, नगर ललितपुर शान बढाओ॥

57 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, नगर जबलपुर शान बढ़ाओ॥

58 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, ग्राम शहपुरा शान बढ़ाओ॥

59 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, ग्राम शाहपुर शान बढ़ाओ॥

60 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, दिल्ली नगर की शान बढ़ाओ॥

61 नाम चिरोंजा बाई माता, धर्म से जिसका जुड़ा था नाता।
क्षुल्लक जी का नाम बताओ, सम्यग्ज्ञान की जोत जलाओ॥

62 गणेश वर्णी नाम कहाया, क्षुल्लक का पद जिनने पाया।
जन्म स्थान है हमें बताना, श्रद्धा से सब शीश नवाना॥

63 निर्णयसागर नाम कहाया, ऐलक से मुनि का पद पाया।
ऐलक दीक्षा कहाँ है धारे, बच्चों के जो बने सहारे॥

64 प्रशान्तसागर नाम कहाया, विद्यागुरु की मिली जो छाया।
ऐलक दीक्षा कहाँ पे धारे, जग के बंधन छोड़ के सारे॥

65 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, ग्राम शाहगढ़ शान बढ़ाओ॥

66 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, पिण्डरई ग्राम की शान बढ़ाओ॥

67 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, सतना नगर की शान बढ़ाओ॥

68 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ,जिला गुना की शान बढ़ाओ॥

69 धन्य हो गया जीवन सारा, विद्यागुरु से संयम धारा।
आर्या जी का नाम बताओ, जिला दमोह की शान बढ़ाओ॥

70 राजपाट को ना स्वीकारा, सदा-सदा होती जयकारा ।
बालयती तीर्थंकर ध्याओ, नाम सभी के हमें बताओ ॥

71 महावीर ने पथ बतलाया,अंगुलि पकड़ चलना सिखलाया।
जैनी के लक्षण बतलाओ, सच्चे जैनी तुम बन जाओ ॥

72 नश्वर है जीवन की माया, कभी किसी ने सुख ना पाया ।
विद्याधर ने दीक्षा पाई, कहाँ और किससे कब भाई ॥

73 सच्चा ज्ञान रहा सुख कारण,करता हैभव दुख का वारण ।
पाँच ज्ञान के नाम बताओ, पूरे ज्ञानी बन सुख पाओ ॥

74 कहाँ - कहाँ से मोक्ष पधारे, तीर्थंकर जो हमको प्यारे ।
सिद्ध क्षेत्र का नाम बताओ, कर्म काट सिद्धी पा जाओ ॥

75 णमोकार मंत्रों का राजा, इसके जप से बनते काजा ।
नौ बार क्यों जपते त्राता, ज्ञात तुम्हें हो बताओ भ्राता॥

76 पुण्य प्रकृति तीर्थंकर नामा, मोक्ष उन्हें है निश्चित जाना ।
चिह्न सहित सब नाम बताओ, प्रभु की भक्ति में रम जाओ ॥

77 सब पुरुषों में पुण्यवान हैं, पूज्य पुरुष हैं वे महान् हैं।
पुरुष शलाका जो कहलावें, कितने कौन हैं, हमें बतावें॥

78 कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, सब गुरुओं में सबसे न्यारे।
उनके पाँचों नाम बताएँ, नाम बताकर इनाम पाएँ॥

79 णमोकार को नित ही जपना, पाप पंक में कभी न फँसना ।
और नाम भी हमें बताएं, जपते - जपते मुक्ती पाएं ॥

80 पूज्य यही आराध्य सही हैं, सब श्रावक के साध्य वही हैं ।
नव देवों के नाम बताओ, पूजा कर उनकी सुख पाओ ॥

81 नरक गति में दुःख ही पाता, पेप्सी पीता ब्रेड जो खाता ।
सात नरक के नाम बताओ, इन्हें त्याग फिर नरक न जाओ ॥

82 एकेन्द्रिय का तन है धारा, दुखमय जीवन रहता सारा ।
स्थावर हैं वे कहलाते, पाँच भेद हैं कौन बताते ॥

83 णमोकार को जो नित जपता,पाप पंक में कभी न फँसता ।
अक्षर, मात्रा, पद बतलाओ, कर्म नाश कर मुक्ती पाओ ॥

84 श्रमण संघ के हैं जो नेता, विजितमना हैं इन्द्रिय जेता ।
आचार्यों के नाम बताओ, कम से कम हैं दस गिनवाओ ॥

85 था पहले है सदा रहेगा, कभी किसी से वो न मिटेगा ।
इन द्रव्यों के नाम बताओ, छह की संख्या पूर्ण कराओ ॥

86 अरिहन्तों से सिद्ध बड़े हैं, फिर भी पीछे नमन करें हैं ।
कारण खोज बताओ हमको, सब लोगों के हर लो भ्रम को ॥

87 श्रमण संघ के हैं जो नेता, विजित मना है इन्द्रिय जेता ।
पूर्वाचार्यों के गुण-गाओ, पाँच नाम उनके गिनवाओ ॥

88 वर्तमान के शासन नायक, जिनवाणी के हैं जो दायक ।
उनके पाँचों नाम बताए, महावीर बन मुक्ती पाएँ ॥

89 देह रहित वा देह सहित हैं, सिद्ध और अरिहन्त कथित हैं ।
जिन प्रतिमा में भेद बताओ, सही-सही पहचान कराओ ॥

90 ऋषभदेव ने पथ बतलाया, मेहनत कर जीना सिखलाया ।
षट्कर्मों के नाम बताओ, मुनि बन कर छुटकारा पाओ ॥

91 श्रमण पूज्य है परम दिगम्बर, रखते जो न कुछ आडम्बर ।
और नाम इनके बतलाएँ, शीश झुकाकर कर्म नशाएँ ॥

92 चक्ररत्न के हैं वे धारी, नमन करे हैं धरती सारी।
महापुरुष हैं वे कहलाये, कौन हैं कितने कुल बतलाये॥

93 चउगतियों का भ्रमण मिटाया, परम औदारिक जिनकी काया ।
जय अरिहन्त प्रभु को ध्याओ, मूलगुणों के नाम बताओ ॥

94 वर्तमान के शासन नायक, जिनवाणी के हैं जो दायक।
जन्म महोत्सव कब है मनाते, ज्ञात तुम्हें हो बनाओ बातें ॥

95 श्रमण पूज्य हैं परम दिगम्बर, रखते जो न कुछ आडम्बर ।
पाँच नाम उनके बतलाए, कर समाधि के स्वर्ग हैं पाए ॥

96 चार घातियाँ कर्म नशाया, केवलज्ञानी नाम है पाया ।
सप्त केवली के नाम बताए जयकारा मिल जोर लगाए ॥

97 श्रमण पूज्य हैं परम दिगम्बर, रखते जो न कुछ आडम्बर ।
चरणों में है शीश झुकाए, मुनियों के दस नाम गिनाए ॥

98 मूकमाटी रचना है निराली, पढ़ता सुनता बहु पुण्यशाली।
चार खण्ड के नाम सुनाओ, विद्या गुरु को शीश नवाओ॥

99 श्रमण संघ के हैं जो नेता, विजितमना हैं इन्द्रिय जेता।
परमेष्ठी आचार्य कहाते, मूलगुण कितने कौन बताते॥

100 धर्म तीर्थ के हैं जो करता, मुक्ति वधु के बने हैं भरता।
तीर्थंकरों के वर्ण बताओ, वर्ण रहित पद तुम पा जाओ॥

101 श्रमण पूज्य हैं परम दिगम्बर, रखते जो न कुछ आडम्बर ।
मूलगुण कितने कौन बताएँ,पृथक्-पृथक् सब नाम गिनाएँ ॥

102 तीर्थंकर हैं पूज्य हमारे, महिमा सब इनकी उच्चारे ।
शत इन्द्रों के नाम बताओ, शीश झुकाकर पुण्य बढ़ाओ ॥

103 जिनवाणी का मान बढ़ाया, कई शिष्यों को ज्ञान पढ़ाया ।
रचित ग्रन्थ के नाम बताओ, ज्ञानगुरु की महिमा गाओ ॥

104 मतिश्रुत आदि ज्ञान हमारे, केवलज्ञान में बने सहारे ।
परिभाषा मतिज्ञान की गाओ, ज्ञान बढ़ाओ इनाम पाओ ॥

105 दिवस रात का भेद जो करते, सूर्य चन्द्र आकाश विचरते ।
ढाईद्वीप में कितने कहाँ पर, कौन बताए यहाँ पे आकर ॥

106 अच्छे बुरे परिणाम हमारे, योग कषाय के बने सहारे ।
षट् लेश्या के नाम बताएं, नाम बताकर इनाम पाएं॥

107 ज्ञान से मिलता भव का किनारा, ज्ञान बिना सूना जग सारा ।
परिभाषा श्रुतज्ञान की गाओ, ज्ञानी बन कर कर्म खपाओ ॥

108 धर्म अधर्म हैं द्रव्य कहावे, जहाँ हैं जावे वहीं पे पावे ।
इनकी तुम परिभाषा गाओ, सहित उदाहरण से समझाओ ॥

109 सुख घटता दुख बढ़ता जाता, काल अवसर्विणी वह कहलाता ।
छह कालों के नाम को जाने, सही बताओ तो हम माने ॥

110 सकल देश का है जो ज्ञाता, वो प्रमाण है वाक्य कहाता ।
है प्रमाण के भेद बताओ, फिर प्रमाण पद तुम पा जाओ ॥

1 विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान

2 नारकियों का शरीर टेढ़ा-मेढ़ा, खून-पीव, मल-मूत्र से युक्त, धूम्र के रंग वाला, अत्यन्त डरावना एवं अशुभ होता है।

3 भोगभूमि के जीव-आर्य और आर्या कहलाते हैं।

4 पुरुष को छींक एवं स्त्री को जंभाई आती है और मरण हो जाता है।

5 तीर्थ अर्थात् धर्म को करने वाले महापुरुष तीर्थंकर कहलाते हैं।

6 तीर्थंकर ऋषभदेव के मुनि बनने के बाद लगभग एक वर्ष पश्चात् राजा श्रेयांस ने प्रथम आहार देकर पारणा कराई थी। अतः इस दिन से आखा तीज अर्थात् अक्षय तृतीया का पर्व मनाया जाता है।

7 अर्हत्भगवान के मुख से उद्भूत पूर्वापर दोष रहित शुद्ध वचनों को आगम कहते हैं।

8 169 महापुरुष- 63 शलाका पुरुष, 24 तीर्थंकर के माता-पिता 48, 24 कामदेव, 9 नारद, 11 रुद्र, 14 कुलकर।

9 नारकियों का उपपाद जन्म होता है। वे ऊपर से नीचे की ओर गिरते हैं पश्चात् ऊपर उछलते हैं। पुनः नीचे गिरते हैं। इस प्रकार बहुत कष्ट के साथ जन्म लेते हैं।

10 इस दिन भगवान महावीर स्वामी ने मोक्ष प्राप्त किया अतः प्रातःकाल निर्वाण लाडू चढ़ाकर एवं सायंकाल में गौतम स्वामी को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था। अतः ज्ञान का प्रतीक दीप जलाकर दीपावली पर्व मनाते हैं।

11 एक हाथ ऊँची काया (सर्वार्थसिद्धि के देवों की)

12 जिनआगम के कर्ता तीर्थंकर प्रभु, गणधर देव, प्रतिगणधर देव

13 भोगभूमि में हा,मा, धिक् रूप वचन कहना ही दण्ड व्यवस्था थी।

14 जन्माभिषेक के कलशों का प्रमाण-8 योजन गहराई, 4 योजन चौड़ाई और 1 योजन मुख वाले हैं।

15 पाँचवें क्षीरसागर से

16 पृथ्वी तल से 900 योजन ऊपर शनि का विमान है।

17 इन्द्रों के सिंहासन हिलने से एवं स्वमेव घंटानाद आदि होने से।

18 दो अष्टापद मुख प्रवेश करते हुए।

19 सेनापति कृतान्तवक्र एवं जटायु पक्षी के जीव जो देव बने थे।

20 17 जनवरी 2006

21 श्रावण शुक्ला षष्ठी (नेमिनाथ जयन्ती)

22 कुंआर वदी पंद्रश (शरद पूर्णिमा)

23 वैशाख शुक्ला सप्तमी

24 मोराजी सागर

25 मुनि श्री प्रमाणसागर जी

26 मुनि श्री क्षमासागर जी, मुनि श्री पद्मसागर जी, मुनि श्री सुव्रतसागर जी, मुनि श्री अचलसागर जी, मुनि श्री शैलसागर जी।

27 मुनि श्री पवित्रसागर जी, मुनि श्री चन्द्र सागर जी, मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी, मुनि श्री प्रभातसागर जी।

28 मुनि श्री पुष्पदन्तसागर जी, मुनि श्री महा सागर जी, मुनि श्री अनुभवसागर जी,मुनि

श्री अगम्यसागर जी, मुनि श्री विनम्रसागर जी।

29 मुनि श्री श्रेयांससागर जी, मुनि श्री पूज्यसागर जी, मुनि श्री विमलसागर जी, मुनि श्री अनन्तसागर जी, मुनि श्री धर्मसागर जी, मुनि श्री शान्तिसागर जी, मुनि श्री भावसागर जी

30 मुनि आचार्य श्री विद्यासागर जी, मुनि श्री समयसागर जी, मुनि श्री योगसागर जी, मुनि श्री नियमसागर जी।

31 मुनि श्री प्रणम्यसागर जी एवं मुनि श्री अभिनन्दनसागर जी।

32 मुनि श्रीप्रशस्तसागर जी, मुनिश्री प्रबोध सागर जी, मुनि श्री प्रयोगसागर जी।

33 मुनि श्री समतासागर जी एवं मुनि श्री स्वभावसागर।

34 मुनि श्री सुधासागर जी

35 मुनि श्री प्रशान्तसागर जी

36 मुनि श्री निर्वेगसागर जी

37 मुनि श्री प्रसादसागर जी

38 मुनि श्री क्षीरसागर जी

39 मुनि श्री अतुलसागर जी

40 मुनि श्री वीरसागर जी

41 मुनि श्री आनन्दसागर जी

42 मुनि श्री उपशमसागर एवं प्रशमसागर जी

43 मुनि श्री गुप्तिसागर एवं अजितसागर जी

44 मुनि श्री संभवसागर जी

45 मुनि श्री कुंथुसागर जी

46 मुनि श्री मल्लिसागर जी

47 मुनि श्री विशालसागर जी

48 मुनि श्री दुर्लभसागर जी

49 मुनि श्री निर्णयसागर जी

50 आर्यिका श्री सुशीलमती जी, श्री निर्वाण मती जी, श्री मार्दवमतीजी, श्री मंगलमती जी।

51 श्री दृढ़मती जी, श्री ऋजुमती जी, श्री विलक्षणामती जी, श्री उपशान्तमती जी, श्री सदयमती जी, श्री स्वास्थ्यमती जी, श्री श्रुतमती जी।

52 श्री गुरुमती जी, श्री आदर्शमती जी, श्री सूत्रमती जी, श्री शीतलमती जी, श्री अमूल्यमती जी, श्री ध्येयमती जी, श्री कर्त्तव्यमती जी।

53 श्री भावनामती जी, प्रभावनामती जी, श्री पुनीतमती जी, श्री विनीतमती जी, श्री मेरुमती जी।

54 श्री संवेगमती जी, श्री अखण्डमती जी, श्री अभेदमती जी।

55 श्री संतुष्टमती जी

56 श्री नम्रमती जी, श्री विनम्रमती जी, श्री अतुलमती जी, श्री लक्ष्यमती जी।

57 श्री निर्वेगमती जी, श्री अन्तरमती जी, श्री निकटमती जी, श्री अक्षयमति जी, श्री शुभ्रमती जी, श्री कैवल्यमती जी, श्री भक्तिमती जी, श्री सौम्यमती जी, श्री साकारमती जी, श्री आगममति जी, श्री अदूरमति जी, श्री अकलंकमति जी, श्री गन्तव्यमति जी, श्री मननमति जी।

58 श्री सुसिद्धमति जी

59 श्री आलोकमति जी, श्री सविनयमति जी, श्री वात्सल्यमति जी, श्री पृथ्वीमति जी।

60 श्री अकम्पमति जी, श्री आत्ममति जी।

61 श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी
62 हसेराग्राम, तह. महरौनी ललितपुर (उ.प्र.)
63 श्री महुआ जी अतिशय क्षेत्र
64 सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि जी
65 श्री गुणमती जी, श्री धारणामती जी
66 श्री कुशलमती जी, श्री शुक्लमती जी, श्री चिन्तनमती जी, श्री वैराग्यमती जी, श्री उदारमती जी
67 श्री अनन्तमती जी, श्री विजितमती जी, श्री चैत्यमती जी
68 श्री प्रशममती जी, श्री प्रसन्नमती जी, श्री मधुरमती जी, श्री सरलमती जी, श्री तथ्यमती जी, श्री पथ्यमती जी, श्री संस्कारमती जी, श्री शीलमती जी
69 श्री आज्ञामती जी, श्री अवगममती जी, श्री अचिन्त्यमती जी
70 बालयति तीर्थंकर पाँच हैं :-
1. वासुपूज्य भगवान
2. मल्लिनाथ भगवान
3. नेमिनाथ भगवान
4. पार्श्वनाथ भगवान
5. महावीर भगवान

71 जैनी के तीन लक्षण होते है :-
1. प्रतिदिन देवदर्शन करना
2. रात्रि में भोजन नहीं करना
3. पानी छानकर पीना

72 घर का नाम – विद्याधर
दीक्षा का नाम – मुनि श्री विद्यासागर
कब – अषाढ़ शुक्ला पंचमी 30जून 1968 वि.स. 2025
कहाँ – अजमेर 'राजस्थान'
किससे – मुनिश्रीज्ञानसागर जी

73 सम्यग्ज्ञान पाँच हैं-
1. मतिज्ञान
2. श्रुतज्ञान
3. अवधिज्ञान
4. मन: पर्ययज्ञान
5. केवलज्ञान।

74 श्री ऋषभदेव – कैलासपर्वत (अष्टापद)
श्री वासुपूज्य- चम्पापुर
श्री नेमीनाथ- गिरनार (ऊर्जयन्त गिरी)
श्री महावीर- पावापुर
शेष बीस तीर्थंकर-श्री सम्मेदशिखर जी से मोक्ष पधारे।

75 चूंकि 9 का अंक शाश्वत माना गया है अत: शाश्वत मोक्ष पद की प्राप्ति हेतु नौ बार मंत्र का जाप करते हैं। शाश्वत कहने का कारण नौ में किसी भी संख्या का गुणा किया जाए, बाद में उस संख्या का योगफल नौ ही बचता है जैसे-
$3\times9 = 27,\ 2+7 = 9$
$9\times5 = 45,\ 4+5 = 9$
$9\times9 = 81,\ 8+1 = 9$

76 दोहा छन्द में चौबीस तीर्थंकर के चिह्न सहित नाम –
ऋषभदेव के बैल का,
और अजित 'गज' जान।
घोड़ा संभवनाथ का,
कपि चौथे भगवान॥
सुमतिनाथ 'चकवा' कहा,

'कमल' पद्मप्रभ जान।
सुपार्श्व जिन शुभ 'साँथिया',
'चन्द्र' चन्द्र शिव धाम॥
पुष्पदन्त प्रभु का 'मगर',
'कल्पतरु' शीतल शान।
'गेंडा' श्री श्रेयांस का,
'भैंसा' पूज्य प्रमाण॥
विमलनाथ का 'सूकरा',
अरु अनन्त 'सेही'।
'वज्रदण्ड' श्री धर्म का,
शान्ति 'हिरण' स्नेही॥
'बकरा' कुन्थुनाथ का,
'मीन' अरहप्रभु आप।
मल्लिनाथ 'कलशा' अहा,
'कछुवा' सुव्रत छाप॥
'नील कमल' नमिनाथ का,
'शंख' नेमि शुभजान।
'सर्प' रहा प्रभु पार्श्व का,
'सिंह' वीर भगवान॥

शब्दार्थ-गज-हाथी, कपि-बन्दर, सांथिया-स्वस्तिक, कल्पतरु-कल्पवृक्ष, प्रमाण-भगवान,

नोट-बैल अथवा वृषभ, मीन अथवा मत्स्य

77 शलाकापुरुष 63 होते हैं- 24 तीर्थंकर 12 चक्रवर्ती 9 बलभद्र 9 नारायण 9 प्रतिनारायण।

78 आचार्य कुन्दकुन्द के पाँच नाम -
1. आचार्य पद्मनन्दि
2. वक्रग्रीवाचार्य
3. गृद्धपिच्छाचार्य
4. एलाचार्य
5. कुन्दकुन्दाचार्य

79
1. अनादिनिधन मंत्र
2. अपराजित मन्त्र
3. मृत्युञ्जयी मंत्र
4. सर्व सिद्धिदायक मन्त्र
5. पञ्च नमस्कार मंत्र
6. तारण तरण मन्त्र
7. महामंत्र
8. मूलमंत्र
9. आदिमंत्र
10. मंगल मंत्र

80 नव देवों के नाम :-
1. अरिहन्त जी
2. सिद्ध जी
3. आचार्य जी
4. उपाध्याय जी
5. सर्वसाधु जी
6. जिनधर्म
7. जिनागम
8. जिनचैत्य (प्रतिमा)
9. जिन चैत्यालय (मन्दिर)

81 सात नरक भूमियों के नाम :-
1. रत्नप्रभा
2. शर्कराप्रभा
3. बालुकाप्रभा
4. पंक प्रभा
5. धूमप्रभा
6. तमःप्रभा
7. महातम प्रभा

82 पाँच स्थावरों के नाम :-

1. पृथ्वीकायिक
2. जल या अप् कायिक
3. अग्नि या तेज कायिक
4. वायुकायिक
5. वनस्पति कायिक

83 इस मंत्र में पद-5,अक्षर- 35, मात्रा- 58

84 दस आचार्यों के नाम :-
1. आचार्य श्री शान्तिसागर जी
2. आचार्य श्री वीरसागर जी
3. आचार्य श्री देशभूषण जी
4. आचार्य श्री धर्मसागर जी
5. आचार्य श्री विद्यासागर जी
6. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी
7. आचार्य श्री पायसागर जी
8. आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी
9. आचार्य श्री अजितसागर जी
10. आचार्य श्री सुमतिसागर जी
11. आचार्य श्री विमलसागर जी
12. आचार्य श्री श्रेयांससागर जी

85 छह द्रव्यों के नाम-
1. जीव द्रव्य
2. अजीव द्रव्य (पुद्गल द्रव्य)
3. धर्म द्रव्य
4. अधर्म द्रव्य
5. आकाश द्रव्य
6. काल द्रव्य

86 सिद्ध प्रभु ने आठों कर्मों का क्षय कर दिया है, अतः वे अरिहन्त प्रभु से बड़े हैं किन्तु अरिहन्त भगवान् धर्म का उपदेश देते हैं, सिद्धों का ज्ञान कराते हैं, अतः हमारे उपकारक होने से उन्हें सिद्धों से पहले नमन किया।

87 पूर्वाचार्यों के नामः-
1. श्री अकलंक स्वामी
2. श्री समन्तभद्र स्वामी
3. श्री कुन्दकुन्द स्वामी
4. श्री उमास्वामी
5. श्री यतिवृषभाचार्य
6. श्री पूज्यपाद आचार्य

88 भगवान महावीर के पाँच नाम :-
1. वीर
2. अतिवीर
3. वर्धमान
4. सन्मति
5. महावीर

89 अरिहन्त प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य एवं चिह्न सहित सांगोपांग वाली होती है एवं सिद्ध प्रतिमा प्रतिहार्य एवं चिह्न रहित सांगोपांग वाली होती है।

90 ऋषभदेव ने बताए-षट् कर्म-
1. असि
2. मसि
3. कृषि
4. शिल्प
5. कला (सेवा)
6. वाणिज्य

91 श्रमण के पर्यायवाची नाम -संयत, ऋषि, मुनि, महर्षि, साधु, अनगार, वीतराग

92 चक्रवर्ती कुल 12 होते हैं। नारायण कुल 9 होते हैं। प्रतिनारायण कुल 9 होते हैं।

93 अरिहन्त भगवान के 46 मूलगुण होते हैं जिनके नाम निम्न हैं -

जन्म के दस अतिशय
केवलज्ञान के दस अतिशय
देवकृत चौदह अतिशय
प्रातिहार्य आठ एवं अनन्त चतुष्टय चार
= कुल छयालीस मूलगुण

94 चैत्र शुक्ला त्रयोदशी (उत्तम आकिंचन्य पर्व) महावीर जयन्ती का पर्व

95 समाधिस्थ पाँच मुनिवरों के नाम –
1. आचार्य शान्तिसागर जी
2. आचार्य ज्ञानसागर जी
3. मुनि मल्लिसागर जी
4. आचार्य कल्प श्रुतसागर जी
5. मुनि श्री प्रवचनसागर जी इत्यादि

96 सप्त केवली के नाम –
1. तीर्थंकर केवली
2. सामान्य केवली
3. अन्तकृत केवली
4. उपसर्ग केवली
5. मूक केवली
6. अनुबद्ध केवली
7. समुद्घात केवली

97 मुनियों के नाम – दस
1. श्री समयसागर जी
2. श्री योगसागर जी
3. श्री नियमसागर जी
4. श्री समाधिसागर जी
5. श्री स्वभावसागर जी
6. श्री क्षमासागर जी
7. श्री सुधासागर जी
8. श्री उत्तमसागर जी
9. श्री सरलसागर जी
10. श्री आर्जवसागर जी इत्यादि

98 मूकमाटी के चार खण्ड :–
1. संकर नहीं–वर्ण लाभ
2. शब्द सो बोध नहीं–बोध सो शोध नहीं
3. पुण्य का पालनः पाप का प्रक्षालन
4. अग्नि की परीक्षाः चाँदी सी राख

99 आचार्य परमेष्ठी के 36 मूलगुण होते हैं –5पंचाचार,12तप, 10 धर्म, 6 आवश्यक, 3 गुप्ति

100 तीर्थंकरों के वर्ण –
चन्द्रप्रभ एवं पुष्पदन्त– सफेद वर्ण (स्वेत)
मुनिसुव्रत एवं नेमिनाथ– श्याम वर्ण (कृष्ण)
पद्मप्रभ एवं वासुपूज्य– लाल वर्ण (रक्त)
सुपार्श्व एवं पार्श्वनाथ– हरित वर्ण
शेष सोलह तीर्थंकर – पीत वर्ण (स्वर्ण)

101 श्रमण के 28 मूलगुण हैं– पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रिय विजय, छह आवश्यक, सात विशेष गुण

102 सौ इन्द्रों के नाम –

भवनवासियों के इन्द्र	40
व्यन्तरों के इन्द्र	32
कल्पवासियों के इन्द्र	24
ज्योतिषों (चन्द्र–सूर्य)	2
मनुष्यों में चक्रवर्ती	1
पशुओं में शेर	1

103 ज्ञानसागरजी द्वारा रचित ग्रन्थ –
1. जयोदय महाकाव्य
2. दयोदय काव्य
3. वीरोदय काव्य
4. सुदर्शनोदय

5. भद्रोदय
6. सम्यक्त्वसार शतक
7. मुनि मनोरंजना शीति
8. ऋषभावतार
9. भाग्योदय
10. विवेकोदय
11. मानवधर्म
12. सचित्तविवेचन
13. कर्त्तव्य पथ प्रदर्शन एवं अन्य

104 पाँच इन्द्रिय और मन की सहायता से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं।

105 सूर्य और चन्द्रमा की गणना –

जम्बूद्वीप में	–	2,	2
लवण समुद्र में	–	4,	4
धातकी खण्ड में	–	12,	12
कालोदधि में	–	42,	42
पुष्करार्ध में	–	72,	72
कुल		132	132

106 षट् लेश्याओं के नाम –
1. कृष्ण लेश्या
2. नील लेश्या
3. कपोत लेश्या
4. पीत लेश्या
5. पद्म लेश्या
6. शुक्ल लेश्या

107 मतिज्ञान से जाने हुए पदार्थों को विशेष रूप से जानने वाला ज्ञान श्रुतज्ञान कहलाता है। जैसे–पेन लिखने के काम आता है।

108 1. गमन करते हुए जीव–पुद्गलों को जो चलने में सहायता करे/सहकारी कारण धर्म द्रव्य है। जैसे–जल मछली के गमन में सहकारी कारण है।
2. ठहरते हुए जीव–पुद्गलों को ठहरने में सहकारी कारण अधर्म द्रव्य है। जैसे–पथिक के लिए पेड़ की छाया।

109 अवसर्पिणी के छह भेद –
1. सुषमा–सुषमा काल
2. सुषमा काल
3. सुषमा–दुषमा काल
4. दुषमा–सुषमा काल
5. दुषमा काल
6. दुषमा–दुषमा काल

नोट :– दुषमा के स्थान पर दुखमा। सुषमा के स्थान पर सुखमा भी ठीक है।

110 प्रमाण के दो भेद–
1. प्रत्यक्ष प्रमाण
2. परोक्ष प्रमाण

1 धन्य धन्य है प्रभु की माया, नाश घातिया ज्ञान है पाया ।
आठ भूमि के नाम बताओ, समवसरण में है तुम जाओ ॥

2 सब जीवों में सदा है रहती, तैजस काया विषय न लेती ।
भेद दो इनके कौन बताए, परिभाषा इनकी समझाए ॥

3 सिद्धभूमि है पूज्य कहाती, सिद्धों की है महिमा गाती ।
सिद्ध क्षेत्र के नाम बताओ, महाराष्ट्र की शान बढ़ाओ ॥

4 गुणस्थान चौदह हैं होते, सिद्ध बने बिन इसे न खोते ।
परिभाषा है कौन बताए, गुण मिथ्यात्व कभी न पाए ॥

5 तीर्थंकर भगवन्त कहाते, कल्याणक वे पाँच हैं पाते ।
जन्म महोत्सव कैसे मनाते, देव सभी मिल महिमा गाते ॥

6 देव-देवियाँ जहाँ है आते, धर्म देशना प्रभु की पाते ।
समवसरण में बारह सभाएं, कौन कहाँ आसन है जमाए ॥

7 क्या खोया क्या हमने पाया, कैसी अद्‌भुत जग की माया ।
संसारभावना को नित भाओ, है स्वरूप इसका समझाओ ॥

8 धर्म ही जग में सुख का दाता, पाप कर्म से हमें बचाता ।
आर्जव धर्म है क्या कहलाता, इससे जोड़ो अपना नाता ॥

9 जिनवाणी भव तारक नैय्या, हम बालक हैं तुम हो मैय्या ।
ग्रन्थों के तुम नाम बताओ, प अक्षर से शुरु कराओ ॥

10 सिद्ध भूमि है पूज्य कहाती, सिद्धों की महिमा है गाती ।
सिद्धक्षेत्र का नाम बताओ, गुजरात प्रान्त की शान बढ़ाओ ॥

11 स्वर्ग सम्पदा उसने पाई, धर्म की जिसको मिली सहाई ।
शौच धर्म है क्या कहलाता, नरक पतन से हमें बचाता ॥

12 मध्यलोक के मध्य द्वीप, जम्बूद्वीप सबमें प्रसिद्ध है ।
इसका तुम विस्तार बताओ, कितने पर्वत क्षेत्र गिनाओ ॥

13 कर्म जगत् में सुख-दुख दाता, इनसे टूटे अपना नाता ।
आयु, गोत्र के भेद बताओ, इन्हें नष्ट कर मोक्ष है पाओ ॥

14 क्या खोया क्या हमने पाया, कैसी अद्‌भुत जग की माया ।
एकत्व भावना को नितभाओ, है स्वरूप इसका बतलाओ ॥

15 लोभ पाप का बाप कहाता, लोभी कभी ना सुख है पाता ।
पाप परिग्रह क्या कहलाता, कैसे छूटे इससे नाता ॥

16 सिद्ध भूमि है पूज्य कहाती, सिद्धों की महिमा है गाती ।
सिद्ध क्षेत्र के नाम बताओ, झारखण्ड, बिहार में जाओ ॥

17 मतिश्रुत अवधि ज्ञान हमारा, मनःपर्यय केवलज्ञान सहारा ।
अवधिज्ञान है क्या कहलाता, परिभाषा है कौन बताता ॥

18 कर्मों की देखो बलिहारी, वश में हो गये सब नर-नारी ।
अन्तराय के भेद बताएँ, धर समता सुख खूब हैं पाए ॥

19 सोलहकारण भाव जो भाए, तीर्थंकर पदवी वो पाए ।
पृथक्-पृथक् है नाम गिनाओ, तीर्थंकर तुम भी बन जाओ ॥

20 दोष रहित जो जीवन जीता, समदर्शन का अमृत पीता ।
दोष पच्चीस के नाम बताओ, सम्यक्‌दृष्टि तुम बन जाओ ॥

21 गुणस्थान चौदह हैं होते, सिद्ध बने बिन इसे न खोते ।
परिभाषा है कौन बताए, अविरत सम्यक्त्व को पा जाए ॥

22 तीर्थंकर भगवन्त कहाते, कल्याण वे पाँच हैं पाते ।
दीक्षा महोत्सव कैसे मनाते, देव सभी मिल महिमा गाते ॥

23 नश्वर है संसार की माया, रहा भटकता सुख न पाया ।
अन्यत्व भावना क्या कहलाती, अपना कौन है हमें बताती ॥

24 षट्आवश्यक नित ही करता, गृहस्थ सदा न पाप से बचता ।
छह आवश्यक कौन बताए, पाप त्याग में मन को लगाए ॥

25 जीवन को उन्नत है बनाता, नरक पतन से हमें बचाता ।
अष्टमूलगुण कौन से धारे, कहे जिनागम हमें सहारे ॥

26 धर्म की महिमा जिसने गाई, स्वर्ग सम्पदा उसने पाई ।
सत्य धर्म है क्या कहलाता, इससे जोड़ो अपना नाता ॥

27 धन्य धन्य है प्रभु की माता, इन्द्र भी जिनको शीश नवाता ।
सोलह स्वप्न कौन से भाई, देखे हैं तीर्थंकर माई ॥

28 देव मनुज तिर्यञ्च नारकी, सम्यक् दृष्टि मात्र पारखी ।
गुणस्थान हैं किसमें कितने, जिनवाणी को धारो चित में ॥

29 परिवर्तित है सृष्टि सारी, काल द्रव्य की है उपकारी ।
पाँच विशेषता आप बताएँ, सुषमा-सुषमा की गिनवाएँ ॥

30 गुणस्थान चौदह हैं होते, सिद्ध बने बिन इन्हें न खोते ।
परिभाषा है कौन बताएँ, देशविरत गुण को पा जाएँ ॥

31 गुणस्थान चौदह हैं होते, सिद्ध बने बिन इसे न खोते ।
परिभाषा है कौन बताए, प्रमत्तविरत मुनि शीश झुकाएँ ॥

32 औदारिक आदि है काया, पाँच देह की अद्‌भुत माया ।
किसमें कितने कौन बताए, हैं प्रदेश हमको गिनवाए ॥

33 तीर्थंकर भगवन्त कहाते, कल्याणक हम पाँच मनाते ।
केवलज्ञान महोत्सव कैसा, देव मनाते बताओ जैसा ॥

34 क्या खोया क्या हमने पाया, कैसी अद्‌भुत जग की माया ।
दुर्लभ बोधि भावना भाएँ, है स्वरूप इसका बतलाएँ ॥

35 सोलह स्वप्न है माता देखे, फल जानत ही हर्ष विशेषे ।
इनका फल है आप बताएँ, तीर्थंकर पदवी पा जाएँ ॥

36 जिसने जितना पाप कमाया, उसने उतना दुख ही पाया ।
पटलों की संख्या बतलाओ,अलग-अलग सब में गिनवाओ ॥

37 ग्यारह प्रतिमा के व्रत धारे, श्रावक श्रेष्ठ हैं सभी पुकारे ।
स्वरूप इनका है बतलाओ, दर्शन प्रतिमा पहले पाओ ॥

38 देखो निज परिणाम हैं कैसे, बचो अशुभ से जैसे - तैसे ।
लक्षण इनका है बतलाओ, कृष्ण लेश्या कभी न पाओ ॥

39 गुणस्थान चौदह हैं होते, सिद्ध बने बिन इन्हें न खोते ।
परिभाषा है कौन बताए, मिश्र गुणस्थान कभी न पाएं ॥

40 धर्म की महिमा जिसने गाई, स्वर्ग सम्पदा उसने पाई ।
उत्तम तप है क्या कहलाता, इससे जोड़ो अपना नाता ॥

41 अरिहन्तों में कभी न होते, हम तुम जैसे सदा ही ढोते ।
दोष अठारह कौन गिनाए, नाम बताकर इनाम पाए ॥

42 गुणस्थान है चौदह होते, सिद्ध बने बिन इसे न खोते ।
परिभाषा है कौन बताए, अप्रमत मुनि को शीश झुकाए ॥

43 गुणस्थान है चौदह होते, सिद्ध बने बिन इसे न खोते ।
परिभाषा है कौन बताए, सयोगकेवली की जय गाए ॥

44 मुनिगण नित ही परीषह सहते, सब कुछ सहते कुछ ना कहते ।
परीषह बाईस के नाम बताओ, सब यतियों को शीश नवाओ ॥

45 गुणस्थान है भाव हमारे, पुद्गल कर्म के बने सहारे ।
परिभाषा है कौन बताए, अयोगकेवली मुक्ति पाए ॥

46 परिवर्तित है सृष्टि सारी, काल द्रव्य की है उपकारी ।
पाँच विशेषता आप बताएं, सुषमा-दुषमा की गिनवाए ॥

47 छह खण्डों का राज्य है पाया, चक्रवर्ती शुभ नाम कहाया ।
नव निधियों के नाम बताओ, कार्य है उनका क्या समझाओ ॥

48 अतिशय करते देव जहाँ पर, पुण्य भूमि विख्यात धरा पर ।
अतिशय क्षेत्र के नाम बताओ, मध्यप्रदेश की शान बढ़ाओ ॥

49 तीर्थंकर भगवन्त कहाते, कल्याणक वे पाँच है पाते ।
मोक्ष महोत्सव कैसे मनाते, देव सभी मिल महिमा गाते ॥

50 धर्म की महिमा जिसने गाई, मोक्ष सम्पदा उसने पाई ।
त्याग धर्म है क्या कहलाता, इससे जोड़ो अपना नाता ॥

51 ग्यारह प्रतिमा के व्रत धारे, श्रावक श्रेष्ठ है सभी पुकारे ।
स्वरूप इसका है समझाओ, व्रत प्रतिमा की कीरत गाओ ॥

52 परिवर्तन था जब है आया, कुलकर ने सबको समझाया ।
कितने कुलकर कौन बताए, उन सबके हैं नाम गिनाए ॥

53 गृहस्थों में सद्गृहस्थ कहाता, षट् आवश्यक जो कर पाता ।
देवपूजा के अंग बताएँ, आवश्यक की महिमा गाएँ ॥

54 गुणस्थान हैं चौदह होते, सिद्ध बने बिन इसे खोते ।
परिभाषा है कौन बताए, उपशान्त मोह श्रेणी चढ़ जाए ॥

55 ऋषभदेव ने पथ बतलाया, मेहनत कर खाना सिखलाया ।
षट्कर्मों के नाम बताए, परिभाषा इनकी समझाए ॥

56 जिनवाणी को नित पढ़ना, मोक्षमार्ग में यदि है बढ़ना ।
स्वाध्याय के भेद बताएँ, परिभाषा उनकी समझाएँ ॥

57 पाप करन से दुख ही मिलता, दुखमय जीवन कभी न खिलता ।
झूठ पाप है क्या कहलाता, कहाँ-कहाँ हमको ले जाता ॥

58 श्रावक के स्थान कहावे, प्रतिमाधारी स्वर्ग हैं पावे ।
सामायिक प्रतिमा सुखकारी, क्या स्वरूप है भव दुख हारी ॥

59 देखो निज परिणाम हैं कैसे, बचो अशुभ से जैसे-तैसे ।
लक्षण है इनका बतलाओ, नील लेश्या कभी ना पाओ ॥

60 धर्म की महिमा जिसने गाई, स्वर्ग सम्पदा उसने पाई ।
आकिंचन्य है क्या कहलाता, धर्म मोक्ष है हमें दिलाता ॥

61 परिवर्तित है सृष्टि सारी, काल द्रव्य की है उपकारी ।
पाँच विशेषता आप बताएँ, दुषमा-दुषमा की हमें गिनवाएँ ॥

62 सुख दुख जीवन और है मरना, खेल करम के चेतन शरणा ।
करण कौन से दस बतलाएँ, कर्मबन्ध से मुक्ति पाएँ ॥

63 भाव वाची है शब्द कहाता, तत्त्व है नाम जिनागम गाता ।
परिभाषा है कौन बताएँ, मोक्ष तत्त्व को शीघ्र है पाएँ ॥

64 पाप कर्म से नित ही बचना, पुण्य कर्म में रचना पचना ।
चारित्र तेरह के नाम बताएँ, मुनि बन जीवन सफल बनाएँ ॥

65 परिवर्तित है सृष्टि सारी, काल द्रव्य की है उपकारी ।
दुषमा-सुषमा काल सहारा, क्या विशेषता जिन ने पुकारा ॥

66 प्रतिश्रुति आदि प्रसिद्ध कुलकर, संख्या जिनकी चौदह मिलकर ।
किसने क्या है कार्य बताया, सबके मन से भय को भगाया ॥

67 विधी सेना भी जिनसे हारी, वे हैं मुनिव्रत महाव्रत धारी ।
मूलगुण अहिंसा क्या कहलाता, मुक्ति वधु को जो वर लाता ॥

68 धर्म की महिमा जिसने गाई, स्वर्ग सम्पदा उसने पाई ।
ब्रह्मचर्य है क्या कहलाता, इससे जोड़ो अपना नाता ॥

69 जिनवाणी भवतारक नैय्या, हम बालक हैं तुम हो मैय्या ।
ग्रन्थों के तुम नाम बनाओ, ‘ ’अ’ अक्षर से शुरु कराओ ॥

70 परिवर्तित है सृष्टि सारी, काल द्रव्य की है उपकारी ।
पाँच विशेषताएँ आप बताएँ, दुषमा काल की हमें गिनाएँ ॥

71 ग्यारह प्रतिमा के व्रत धारे, श्रावक श्रेष्ठ हैं सभी पुकारे ।
स्वरूप इनका है बतलाओ, उद्दिष्टत्याग क्षुल्लक बन जाओ ॥

72 जीवादिक है तत्त्व कहाते, सम्यग्दृष्टि जान है पाते ।
तत्त्व बन्ध है क्या कहलाता, भव भव में जो दुख का दाता ॥

73 मुनिवर से है जिसका नाता, ज्ञान मनःपर्यय कहलाता ।
परिभाषा इसकी बतलाओ, भेद सहित हमको समझाओ ॥

74 धर्म अनेक हैं वस्तु धारे, जिन आगम हैं जिन्हें उचारे ।
सप्त भंग के नाम बनाओ, स्याद्वाद की शान बढ़ाओ ॥

75 बहुत पढ़ा पर ज्ञान न आया, ज्ञानावरण का फल है पाया ।
बन्ध के कारण हमें बताएँ, कम से कम हैं पाँच गिनाएँ ॥

76 निद्रावरण है कर्म सताया, सोया नींद में कौन जगाया ।
कारण पाँच हैं हमें गिनाएँ, दर्शनावरणी कर्म नशाएँ ॥

77 पुण्य योग से जीवन पाया, सच्चा धर्म व मिली है माया ।
कदलीघात है क्या कहलाता, चउगतियों में जो भटकाता ॥

78 सन्तों में है सबसे न्यारे, विद्यासागर गुरु हमारे ।
पाँच शतक के नाम बताएँ, हिन्दी में है गुरु रचाएँ ॥

79 निज शरीर को योग्य बनाना, पुद्गल परमाणु को है लाना ।
पर्याप्ति कितनी कहलाती, नाम बताओ कष्ट मिटाती ॥

80 बिन तन छोड़े बाहर जाना, आत्म प्रदेशों का फैलाना ।
समुद्घात हैं होते कितने, नाम सहित बतलाओ जितने ॥

81 जीवन दुखमय अपना बनता, भव-भव में दुख वृक्ष है फलता ।
आर्तध्यान के भेद बताओ, उन सब के तुम नाम गिनाओ ॥

82 परमातम हैं निकल कहाते, पास हमारे कभी न आते ।
सिद्ध प्रभु हैं वे कहलाते, परिभाषा है कौन बताते ॥

83 नरक गति का बनता कारण, महाव्रती ही करता वारण ।
रौद्र ध्यान के भेद बताओ, चार कौन से हमें गिनाओ ॥

84 समदर्शन ना हमने पाया, दर्शन मोह जो कर्म है आया ।
बन्ध के कारण हमें बताएँ, कम से कम हैं तीन गिनाएँ ॥

85 सन्तों में है सबसे न्यारे, विद्यासागर गुरु हमारे ।
पाँच शतक हैं हमें बताएँ, संस्कृत भाषा की शान बढ़ाएँ ॥

86 मोक्षमहल को जिन्हें है पाना, निर्मलध्यान उन्हें है लगाना ।
शुक्लध्यान के भेद बताओ, चार कौन से हमें गिनाओ ॥

87 तन की देखो अद्‌भुत माया, मिले मिटे छूटे ना काया ।
तन आहारक क्या कहलाता, है विशेषता कौन बताता ॥

88 पुण्य उदय से दर्शन पाते, गणनायक हैं वे कहलाते ।
परिभाषा उनकी बतलाओ, श्री आचार्य को शीश नवाओ ॥

89 शिवपथ पर ना कदम बढ़ाया, मोहचरित्र का उदय जो आया।
बन्ध के कारण हमें बताएँ, कम से कम हैं पाँच बताएँ ॥

90 अठदस बार है जीना मरना, श्वास श्वास में यही है करना ।
नित्य निगोद है क्या कहलाता, अशुभकर्म का फल है पाता ॥

91 नरकगति से जिनका नाता, जीव नारकी वह कहलाता ।
कहाँ-कहाँ वह जन्म है लेता, कौन बताए इन्द्रिय जेता ॥

92 भव्य जनों ने बात है मानी, श्री जिनवाणी पूज्य कहानी।
उपाध्यायजी शीश नवाएँ, परिभाषा उनकी बतलाएँ॥

93 उदय असाता का जब आता, दुख का वेदन ही कर पाता।
बंध के कारण हमें बताएँ, कम से कम हैं पाँच गिनाएँ॥

94 साता का जब उदय है आता, प्राणी जग में सुख ही पाता।
कैसे बंध है इसका होता, सही बता क्यों समय है खोता॥

95 पूज्य दिगम्बर जिनकी काया, लेश ना रहती मन में माया।
साधू परमेष्ठी कहलाते, कैसे हम पहचान हैं पाते॥

96 ऊँचा नीचा गोत्र हमारा, पुण्य पाप का बने सहारा।
उच्च गोत्र है कैसे पाता, जीव जगत में कहीं न साता॥

97 नरक गति में नित दुख पाता, लड़ता-भिड़ता समय गँवाता।
बन्ध के कारण आप बताएँ, नरक आयु तो कभी न पाएँ॥

98 कर्म भूमि में जन्म है पाया, पुण्य योग से मिली है काया।
विशेषता है कौन बताए, तीन मनुज की हमें गिनाए॥

99 देव का जिसने तन है पाया, देवगति का जीव कहाया।
विशेषता उनकी बतलाए, कम से कम है पाँच गिनाए॥

100 धन्य-धन्य है भाग्य हमारे, तीर्थंकर हैं घर पे पधारे।
पञ्चाश्चर्य के नाम बताओ, नाम बताकर पुण्य कमाओ॥

101 भूख प्यास को नित ही सहना, सहते रहना अब क्या कहना।
बन्ध के कारण आप बताएँ, गति तिर्यञ्च तो कभी न पाए॥

102 अगले भव से मोक्ष है जाना, झूठा जग का माल खजाना।
देवों के तुम नाम बताओ, देवगति से ढूंढ़ के लाओ॥

103 समवसरण में शोभा पाते, तीर्थंकर की महिमा गाते।
प्रातिहार्य के नाम बताओ, आठ की संख्या पूर्ण कराओ॥

104 पुण्य उदय से नर तन पाया, नारायण पद नर ने पाया।
बन्ध के कारण आप बताएँ, नर आयु को सफल बनाएँ॥

105 पुण्य उदय से स्वर्ग में जाया, देव नाम है उसने पाया।
बन्ध के कारण हमें बताए, देवायु शुभ कर्म कहाये॥

106 वर्तमान के शासन नायक, जिनवाणी के हैं जो दायक।
महावीर वे क्यों कहलाए, कारण सबको कौन बताये॥

107 वर्तमान के शासक नायक, जिनवाणी के हैं जो दायक॥
वीर प्रभु वे क्यों कहलाय, कारण सबको कौन बताय॥

108 काय कषाय को कृष है करना, सल्लेखन का व्रत है धरना।
कारण कौन से हमें बताएँ, कम से कम है चार गिनाएँ॥

109 सम्यग्दर्शन एक सहारा, खुलता जिससे मोक्ष का द्वारा।
अंग निःशंकित क्या कहलाता, सारा जीवन सुखी बनाता॥

110 श्रावक ही साधु बन पाता, साधु बनकर मोक्ष है पाता।
श्रावक का तुम अर्थ बताओ, सीधा सच्चा ज्ञान कराओ॥

1 समवसरण में आठ भूमियाँ :-

1. चैत्य प्रासाद भूमि
2. जलखातिका भूमि
3. लतावन भूमि
4. उपवन भूमि
5. ध्वजा भूमि
6. कल्पवृक्ष भूमि
7. भवन भूमि
8. श्री मण्डप भूमि

2 तैजस शरीर के दो भेद हैं :-

1. निस्सरणात्मक 2. अनिस्सरणात्मक

1. शरीर से बाहर निकलकर शुभ-अशुभ कार्यों में निमित्त बनने वाला तैजस शरीर निस्सरणात्मक तैजस शरीर कहलाता है।
2. शरीर में ही रहकर कान्ति एवं तेज प्रदान करने वाला शरीर अनिस्सरणात्मक तैजसशरीर कहलाता है।

3 महाराष्ट्र के सिद्ध क्षेत्र :-

1. गजपन्था जी
2. कुंथुगिरि जी
3. मांगीतुंगी जी

4 पित्त ज्वर से ग्रसित पुरुष को मधुर पदार्थ कटुक प्रतीत होता है, उसी प्रकार मिथ्यात्व रूपी ज्वर से ग्रसित जीव को आत्मा, हितकारी जीवादि तत्त्व, सच्चे देव गुरु शास्त्र का स्वरूप विपरीत प्रतीत होता है। रुचता नहीं वह प्रथम गुणस्थानवर्ती मिथ्यादृष्टि कहा जाता है।

लक्षण -

1. सच्चे (वीतरागी) देवादि को छोड़कर अन्य रागी-द्वेषी देवता की आराधना करता है।
2. जीवादि सात तत्त्वों को नहीं मानता।
3. शरीर को ही आत्मा मानता है।
4. वस्तु के एक धर्म के प्रति हठ रखता हो।

5 तीर्थंकर बालक के जन्म को जानकर सौधर्म इन्द्र अपनी इन्द्राणी सहित ऐरावत हाथी पर सवार होकर जन्म नगरी में आता है। शची प्रसूति गृह में पहुँच कर बालक को बाहर लेकर आती है एवं सुमेरु पर्वत पर तीर्थंकर बालक का क्षीरसागर के जल से अभिषेक किया जाता है।

6 समवसरण की बारह सभाओं में तीर्थंकर के बायी ओर से क्रमशः

1. गणधर एवं समस्त मुनि
2. कल्पवासी देवियाँ
3. आर्यिकाएं एवं श्राविकाएं
4. ज्योतिषी देवियाँ
5. व्यन्तर देवियाँ
6. भवनवासी देवियाँ
7. व्यन्तर देव
8. ज्योतिष देव
9. भवनवासी देव
10. कल्पवासी देव
11. चक्रवर्ती एवं मनुष्य
12. पशु-पक्षी बैठते हैं। अष्टम श्री मण्डप भूमि में सोलह दीवारों से विभाजित बारह कोठे होते हैं जिनमें ये सभाएं लगती हैं।

7 चतुर्गति रूप इस संसार में भटकता हुआ संसारी प्राणी अनेक प्रकार के दुःख उठा रहा है। मोह के वशीभूत हुआ मृगतृष्णा की भाँति सुख की खोज पर पदार्थों में करता हुआ हताश हो रहा है। जन्म, जरा और मृत्यु रूपी रोग से ग्रसित यह जीव द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव रूप पंच परावर्तन कर रहा है। इत्यादि चिन्तन करना संसार भावना कहलाती है।

8 ऋजुता, सरलता का भाव आर्जव धर्म है। अथवा लोभादि के वशीभूत हो मायाचार नहीं करना, मन,वचन,काय की एकरूपता आर्जव धर्म है।

9 'प' अक्षर से ग्रन्थ के नाम :-

1. प्रवचनसार
2. पञ्चास्तिकाय
3. पद्मनन्दि पञ्चविंशतिका
4. पद्मपुराण
5. प्रद्युम्न चरित्र
6. परमात्मप्रकाश
7. परीषहजय शतक
8. पूर्णोदय शतक।

10 गुजरात के सिद्ध क्षेत्र :-

1. गिरनार जी
2. शत्रुंजय (पालीताणा)
3. तारंगा जी
4. पावागढ़

11 लोभ का त्याग करना अथवा शुचिता निर्मलता का भाव शौच धर्म है। अथवा शरीर की अपवित्रता का चिन्तन कर रत्नत्रय की आराधना करना भी शौच धर्म है।

12 जम्बूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन मात्र है। इसको विभाजित करने वाले छह पर्वत हैं, जिनके नाम :-

1. हिमवान् 2. महाहिमवान् 3. निषध 4. नील 5. रुक्मि 6. शिखरिणी पर्वत है एवं इस विभाजन में बने सात क्षेत्र हैं।

जिनके नाम क्रमशः - 1. भरत 2. हैमवत् 3. हरि 4. विदेह 5. रम्यक् 6. हिरण्य 7. ऐरावत क्षेत्र है।

13 आयु कर्म के चार भेद :-

1. नरक आयु
2. तिर्यञ्च आयु
3. मनुष्य आयु
4. देव आयु।

गोत्र कर्म के दो भेद :-

1. उच्चगोत्र
2. नीचगोत्र

14 संसार में जीव अकेला ही जन्मता है, अकेला ही मरता है। इसका शरीर भी साथी नहीं है तो अन्य परिजन कैसे हो सकते है। यह संसार सम्बन्ध पेड़ पर रात्रि व्यतीत करने वाले पक्षियों के समान है जो सुबह होते ही उड़ जाते है। अकेला ही जीव सुख-दुख का भोक्ता, कर्म के फल का भोक्ता होता है ऐसा चिन्तन करना एकत्व भावना है।

15 धन, मकान, परिवार जन आदि के प्रति आसक्ति रखना, उनका संग्रह करना परिग्रह पाप कहलाता है।

16 झारखण्ड एवं बिहार के सिद्धक्षेत्र :-

1. श्री सम्मेदशिखर जी

2. श्री चम्पापुर जी
3. श्री पावापुर जी
4. श्री राजगृही जी
5. श्री पटना 'गुलजार बाग'

17 द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा को लिए हुए, बिना इन्द्रिय और मन की सहायता से रूपी पदार्थ को जानने वाला प्रत्यक्ष ज्ञान अवधिज्ञान कहलाता है।

18 अन्तराय कर्म के पाँच भेद हैं :-
1. दानान्तराय
2. लाभान्तराय
3. भोगान्तराय
4. उपभोगान्तराय
5. वीर्यान्तराय

19 सोलहकारण भावनाओं के नाम :-
1. दर्शन विशुद्धि
2. विनय सम्पन्नता
3. निरतिचार शील-व्रतों का पालन
4. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग
5. अभीक्ष्ण संवेग
6. शक्ति अनुसार तप
7. शक्ति अनुसार त्याग
8. साधु समाधि
9. वैयावृत्य
10. अर्हत् भक्ति
11. आचार्य भक्ति
12. बहुश्रुत भक्ति
13. प्रवचन भक्ति
14. आवश्यक अपरिहारिण
15. मार्ग प्रभावना
16. प्रवचन वात्सल्य।

20 सम्यग्दर्शन के पच्चीस दोष :-
1. शंका 2. कांक्षा 3. विचिकित्सा 4. मूढ़ दृष्टि 5. अस्थिति करण 6. अनुपगूहन 7. अवात्सल्य 8. अप्रभावना 9. देवमूढ़ता 10. लोकमूढ़ता 11. गुरुमूढ़ता 12. ज्ञानमद 13. पूजामद 14. कुल मद 15. जाति मद 16. बल मद 17. ऋद्धि मद 18. तप मद 19. वपु मद 20. कुगुरु 21. कुदेव 22. कुधर्म तथा 3 इनके सेवक इस प्रकार से कुल =25
शंकादि आठ दोष, मद आठ, तीन मूढ़ता और छह अनायतन
ये कुल पच्चीस दोष।

21 जीवादि सात तत्त्वों एवं वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु पर अविचल श्रद्धा रखने वाला किन्तु व्रतादिक से रहित जीव अविरत सम्यग्दृष्टि कहलाता है। ये चौथा गुणस्थान है।

22 तीर्थंकर के मन में वैराग्य उत्पन्न होते ही लौकान्तिक देव आकर उनके वैराग्य की सराहना करते हुए स्तुति करते हैं। तत्पश्चात् तीर्थंकर पालकी पर आरूढ़ होते हैं। मनुष्य, देव आदि अपने कन्धों पर रखकर दीक्षा वन तक ले जाते हैं। वहाँ सिद्ध परमेष्ठी को नमस्कार करके पंचमुष्ठी केशलुंचन करते हुए तीर्थंकर जिनमुद्रा को धारण करते हैं।
सौधर्म इन्द्र केशों को क्षीरसागर में विसर्जित करता है। इस प्रकार दीक्षोपरान्त तीर्थंकर की पूजा भक्ति कर देवगण स्वस्थान लौट जाते है। इस प्रकार दीक्षा कल्याणक

मनाया जाता है।

23 मोह कर्म के उदय से यह जीव प्रकट रूप से पृथक् दिखने वाले माता-पिता, पुत्र-पुत्री, धन, मकान, दुकान आदि को अपना मानता है। जब सदा रहने वाला यह शरीर भी मेरा नहीं है, मुझसे भिन्न स्वभाव वाला है। तब माता-पिता आदि सब मेरे कैसे हो सकते हैं। ऐसा चिन्तन करना अन्यत्व भावना है। कहा भी है -

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।
घर संपत्ति पर प्रकट हैं, पर हैं परिजन लोय॥

24 श्रावकों के छह आवश्यक कहे गये हैं :-

1. देवपूजा
2. गुरु उपासना
3. स्वाध्याय
4. संयम
5. तप
6. दान

25 अष्ट मूलगुणों के नाम :- पञ्च उदुम्बर फल -1. बड़ 2. पीपल 3. ऊमर 4. पाकर 5. कठूमर एवं तीन मकार-6. मद्य 7. मांस एवं मधु 'शहद' इनका त्याग करना

अथवा

1. मद्य शराब का त्याग 2. माँस भक्षण का त्याग 3. मधु का त्याग 4. पंच उदुम्बर फलों का त्याग 5. रात्रि भोजन त्याग 6. जल छानकर पीना 7. नित्य देवदर्शन करना 8. जीवों पर दया करना।

26 दूसरों को क्लेश पहुँचाने वाले वचनों को छोड़कर अपने और दूसरों के हित करने वाले वचन बोलना सत्य धर्म है। अथवा वस्तु के / संसार के सत्य को जानकर उस अनुरूप आचरण करना सत्यधर्म है।

27 तीर्थंकर माता के सोलह स्वप्न :-

1. ऐरावत हाथी 2. श्वेत वृषभ 3. केशरी (सिंह) 4. लक्ष्मी 5. दो पुष्प माला 6. पूर्ण चन्द्र बिम्ब 7. उदित होता सूर्य 8. मीन युगल 9. दो स्वर्ण कलश 10. कमलों से शोभित सरोवर 11. गम्भीर समुद्र 12. सुन्दर सिंहासन 13. छोटी-छोटी घंटियों से सुशोभित विमान 14. धरणेन्द्र का भवन 15. चमकते रत्नों की राशि 16. निर्धूम अग्नि।

28 जीव में गुणस्थान :-

नरकगति	1 से 4 तक
तिर्यञ्चगति	1 से 5 तक
मनुष्यगति	1 से 14 तक
देवगति	1 से 4 तक

29 सुषमा-सुषमा काल की विशेषताएँ :-

1. यह प्रथम काल, उत्कृष्ट भोगभूमि का माना जाता है अर्थात् इस काल में व्यवस्थाएं उत्कृष्ट भोगभूमि के समान होती है।
2. यहाँ रात-दिन का भेद नहीं एवं शीत-गर्मी की वेदना भी नहीं है।
3. भोगोपभोग सामग्री कल्पवृक्षों से मिलती है।
4. युगल संतान ही पति-पत्नी के रूप में रहते है।
5. यहाँ के मनुष्यों का एवं तिर्यञ्चों का वज्रवृषभ नाराच संहनन एवं समचतुरस्र संस्थान होता है।

6. मृत्यु के बाद शरीर कपूरवत् उड़ जाता है।
7. विकलेन्द्रिय एवं असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव नहीं होते।
8. इस काल में जीव 21 दिन में पूर्ण वृद्धि को प्राप्त हो जाते हैं।
9. मनुष्यों की ऊँचाई तीन कोश (6000 धनुष) एवं आयु 3पल्य की होती है एवं स्वर्ण के समान वर्ण वाला शरीर होता है।
10. यह काल 4 कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है।

30 पाँचवा देशविरत गुणस्थान है इसका दूसरा नाम संयतासंयत भी है। जो श्रावक एक देश पाँच पापों का त्याग करता है, अणुव्रतों को धारण करता देशव्रती श्रावक कहलाता है। त्रस हिंसा के त्याग की अपेक्षा संयत एवं स्थावर हिंसा का त्याग न होने से असंयत अतः दोनों मिलाने पर संयतासंयत गुणस्थान कहा जाता है।

31 जहाँ पाँच पाप का पूर्ण त्याग होने से सकल संयम प्रकट हो गया है। किन्तु संज्वलन कषाय का मन्द उदय न होने से प्रमाद हो, उसे प्रमत्त विरत गुणस्थान कहते है।

32 औदारिक वैक्रियिक, आहारक, तैजस एवं कार्मण शरीर में क्रमशः असंख्यात गुने प्रदेश उससे असंख्यात गुने, उससे अनन्त गुने एवं उससे अनन्त गुने प्रदेश होते हैं।

33 प्रभु को केवलज्ञान उत्पन्न होने पर सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवशरण की अद्‌भुत रचना करता है। जिसमें विराजमान तीर्थंकर की समस्त देव भक्ति भाव पूर्वक अर्चना कर केवलज्ञान महोत्सव मनाते हैं।

34 रत्नत्रय एवं केवलज्ञान की प्राप्ति की दुर्लभता के विषय में चिन्तन करना बोधिदुर्लभ भावना है। निगोद दशा को छोड़ स्थावर (पृथ्वीआदिक) पर्याय पाना दुर्लभ है, क्रमशः त्रस पर्याय, मनुष्य देह, उत्तम देश, सुसंगति, श्रावक कुल, सम्यग्दर्शन, पञ्चम गुणस्थान, रत्नत्रय आराधन स्वरूप दीक्षा, मुनिव्रतों का निर्दोष पालन, समाधि की प्राप्ति और केवलज्ञान से सब दुर्लभ हैं, ऐसा चिन्तन करना बोधि दुर्लभ भावना है।

35 **सोलह स्वप्न** **फल**

1. ऐरावत हाथी
- सर्वोच्च माननीय उत्तम पुत्र
2. श्वेत वृषभ
- धर्मधुरी को धारण करने वाला
3. केशरी (सिंह)
- अनन्त बल का धारी
4. लक्ष्मी
- सुमेरु पर्वत पर इन्द्रों द्वारा अभिषिक्त
5. पुष्प मालाएं
- समीचीन धर्म प्रवर्तक
6. पूर्ण चन्द्र बिम्ब
- सर्वजन सन्तापहारी, आनन्दकारी
7. उदित होता सूर्य
- महाप्रतापी
8. मीन युगल

- विविध सुखो का भोक्ता

9. दो स्वर्ण कलश
- विविध निधियों वैभव का स्वामी

10. कमलों से शोभित सरोवर
- 1008 लक्षणों से सुशोभित

11. गम्भीर समुद्र
- केवलज्ञान को प्राप्त करने वाला

12. सुन्दर सिंहासन
- जगद् गुरु होकर साम्राज्य प्राप्त करेगा

13. सुशोभित विमान
- स्वर्ग से अवतरित होगा

14. धरणेन्द्र का भवन
- अवधिज्ञान से युक्त

15. चमकते रत्नों की राशि
- अनेक गुणों की खान

16. निर्धूम अग्नि
- कर्मों का नाश करने वाला

36 सात नरक भूमियाँ में कुल 49 पटल है। पहले से सातवी भूमि तक नीचे-नीचे क्रमशः 13, 11, 9, 7, 5, 3, व 1 पटल होता है।

37 सम्यग्दर्शन सहित अतिचार रहित आठ मूलगुणों का धारण करना और सात व्यसनों का अतिचार सहित त्याग करना दर्शन प्रतिमा है। पञ्च परमेष्ठी की शरण को प्राप्त, संसार भोगों से उदासीन इस प्रतिमा का धारी दार्शनिक श्रावक कहलाता है।

38 कृष्ण लेश्या के लक्षण :-

1. सदा बुरे विचार करना
2. बात-बात में क्रोध करना
3. दूसरों से घृणा करना
4. दया धर्म से रहित होना
5. बैर भाव रखना
6. सदा शोक संतप्त रहना अर्थात् अत्यन्त तीव्र परिणाम होना इत्यादि कृष्ण लेश्या के लक्षण हैं।

39 जिस गुणस्थान में सम्यक् और मिथ्यारूप मिश्रित श्रद्धान पाया जाए उसे सम्यक् मिथ्यात्व या मिश्र गुणस्थान कहते हैं। इस गुणस्थान में मरण नहीं होता एवं आयु बन्ध भी नहीं होता है।

40 कर्म निर्जरा हेतु बारह प्रकार के तपों को धारण करना उत्तम तप धर्म है। यह तप ख्याति पूजा लाभ की अपेक्षा बिना किया जाता है।

अनशन, अवमौदर्य, वृत्ति-परिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शय्यासन, कायक्लेश ये छह बाह्य तप एवं प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग, ध्यान ये छह अन्तरंग तप के भेद आगम में कहे गये हैं।

41 अठारह दोष :- जो अरिहन्तों में नहीं होते :- क्षुधा (भूख), पिपासा (प्यास), बुढ़ापा, रोग, जन्म, मरण, भय, घमण्ड, राग, द्वेष, मोह, चिन्ता, अरति, आश्चर्य, निद्रा, खेद, शोक और पसीना।

42 जहाँ संज्वलन कषाय का मंद उदय हो जाने से प्रमाद नहीं रहा, ऐसे प्रमाद रहित पूर्ण पापों के त्यागी मुनि अप्रमत्त मुनि कहलाते हैं।

43 चार घातिया कर्मों के क्षय हो जाने से जहाँ केवलज्ञान, केवलदर्शन, अनन्त सुख

व अनन्त वीर्य प्रकट हो जाते हैं, उन्हें केवली कहते हैं और उनके जब तक योग रहता है तब तक उन्हें सयोग केवली कहते हैं। तेरहवाँ गुणस्थान।

44 बाईस परीषह :- क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, दंशमशक, नाग्नय, अरति, स्त्री, चर्या, निषद्या, शय्या, आक्रोश, वध, याचना, अलाभ, रोग, तृण-स्पर्श, मल, सत्कार-पुरस्कार, अदर्शन, प्रज्ञा और अज्ञान।

45 सयोग केवली के जब योग नष्ट हो जाते हैं एवं जब तक शरीर से मुक्त नहीं होते इन्हें अयोग केवली कहते हैं। इस गुण का काल 5 ह्रस्व अक्षर (अ, इ, उ, ऋ, लृ) बोलने में जितना समय लगता उतना ही है।

46 सुषमा-दुषमा काल की विशेषताएँ :-

1. यह भोगभूमि (जघन्य) का काल माना जाता है।
2. यह काल दो कोड़-कोड़ी सागर प्रमाण वाला होता है।
3. इस काल में मनुष्यों की ऊँचाई 2000 धनुष प्रमाण एवं आयु एक पल्य की होती है जो घटते-घटते 500 धनुष एवं आयु एक पूर्व कोटि रह जाती है।
4. इस काल में मनुष्य एक दिन को छोड़कर आँवला के बराबर आहार ग्रहण करते हैं।
5. इस काल में युगल 49 दिनों में पूर्ण वृद्धि को प्राप्त हो जाते हैं।

47 नव निधियों के नाम

- कार्य

1. काल
- ऋतु के अनुसार पुष्प फल आदि देना
2. महाकाल
- भाजन, पंचलोह आदि धातुएं
3. पाण्डु
- धान्य तथा षट्रस
4. मानव
- आयुध तथा नीति एवं अन्य विषयक शास्त्र
5. शंख
- वादित्र
6. पद्म
- वस्त्र
7. नैसर्प
- शय्या, आसन
8. पिंगल
- आभरण
9. नाना रत्न
- अनेक रत्न आदि

48 मध्य प्रदेश के अतिशय क्षेत्र :-

1. पपौरा जी 2. बारहा 3. पटेरिया (गढ़ाकोटा) 4. आहार जी 5. कुण्डलपुर जी 6. बहोरीबन्द

49 सम्पूर्ण कर्मों के नष्ट होने के बाद तीर्थंकर को निर्वाण पद की प्राप्ति होती है। तब देवगण मोक्षस्थली पर आकर अग्नि संस्कार करते हैं। तदनन्तर उस भस्म को मस्तक पर लगाकर उन जैसा बनने की भावना भाते हैं। फिर समस्त इन्द्र मिलकर

आनन्द नाटक करते हैं। इस प्रकार सभी देव विधिपूर्वक निर्वाण की पूजा कर अपने-अपने स्थान लौट जाते हैं। इसी को मोक्षकल्याणक कहते हैं।

50 कीर्ति एवं प्रत्युपकार की वांछा से रहित होकर चार प्रकार का दान देना, उत्तम त्याग धर्म है अथवा अज्ञान पूर्वक जिन विषय-भोग सामग्री को ग्रहण किया, उन्हें बुद्धि पूर्वक छोड़ना, उत्तम त्याग धर्म कहलाता है।

51 पाँच अणुव्रत -(अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, परिग्रहपरिमाण) तीन गुणव्रत -(दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्ड विरति) एवं चार शिक्षाव्रत (सामायिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोग परिमाण, अतिथि संविभाग) रूप बारह व्रतों का पालन व्रत प्रतिमा है। इस प्रतिमा का धारी व्रती श्रावक कहलाता है।

52 कुल चौदह कुलकर होते हैं।
जिनके नाम :- 1. प्रतिश्रुति 2. सन्मति 3. क्षेमंकर 4. क्षेमंधर 5. सीमंकर 6. सीमंधर 7. विमलवाहन 8. चक्षुष्मान 9. यशस्वी 10. अभिचन्द्र 11. चन्द्राभ 12. पुरुद्देव 13. प्रसेनजित 14. नाभिराय।
महापुराण में ऋषभदेव व भरत को भी कुलकर कहा है।

53 देवपूजा के छह अंग होते हैं :-
1. अभिषेक
2. आह्वानन
3. स्थापन
4. सन्निधिकरण
5. पूजन
6. विसर्जन

54 समस्त मोहनीय कर्म के उपशम से उत्पन्न होने वाले गुणस्थान को उपशान्त मोह गुणस्थान कहते हैं।

55 षट्कर्मों के नाम :- 1. असि 2. मसि 3. कृषि 4. शिल्प 5. सेवा 6. वाणिज्य

56 स्वाध्याय के भेद :- पाँच- 1. वाचना 2. पृच्छना 3. आम्नाय 4. अनुप्रेक्षा 5. धर्मोपदेश

57 आँखों से देखा हो, कानों से जैसा सुना हो वैसा न कहकर अन्यथा कथन करना, झूठ पाप कहलाता है एवं जिससे किसी का जीवन ही चला जाए ऐसा सत्य भी झूठ ही कहा गया है।

58 प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायंकाल दो-दो घड़ी विधिपूर्वक, निरतिचार सामायिक करना, सामायिक प्रतिमा है।

59 आलसी, बुद्धिहीन, कामी, भोगी, डरपोक, ठग सदा मान-सम्मान पाने के भाव आदि नील लेश्या के परिणाम हैं।

60 किंचित् मात्र भी पर पदार्थ को अपना न मानते हुए आत्म तत्त्व का चिन्तन करना अथवा पर पदार्थों में ममत्व रूप परिणामों का त्याग करना उत्तम आकिंचन्य धर्म है।

61 दुषमा-दुषमा काल की विशेषताएँ :-
1. यह काल 21 हजार वर्ष का होता है।

2. इस काल के प्रारम्भ में मनुष्यों की आयु बीस वर्ष की होती है एवं अन्त में घटते-घटते ऊँचाई 1 हाथ एवं आयु 15 या 16 वर्ष रह जाती है।
3. इस काल में मनुष्यों का आहार कंदमूल, फल, मछली आदि होता है। सभी नग्न और भवनों से रहित होकर वनों में घूमते है।
4. इस काल में जन्म लेने वाले नरक व तिर्यञ्च गति से आते है एवं मरण कर वहीं जाते है।
5. इस काल में मनुष्य प्रायः पशुओं जैसा आचरण करने वाले क्रूर, बहरे, अंधे, गूंगे, बन्दर जैसे रूप वाले कुबड़े बौने शरीर वाले अनेक रोगों से सहित होते है।

62 दश करणों के नाम :-

1. बंध 2. उदय 3. सत्त्व 4. उत्कर्षण 5. अपकर्षण 6. उदीरणा 7. संक्रमण 8. उपशमकरण 9. निधत्ति 10. निकाचित

63 ज्ञानावरणादि आठों कर्मों का क्षय होकर आत्मा का सर्वथा शुद्ध हो जाना मोक्ष कहलाता है। मोक्ष के स्वभाव को मोक्ष तत्त्व कहते हैं।

64 पाँच समिति, पाँच महाव्रत और तीन गुप्ति रूप तेरह प्रकार का चारित्र होता है।

65 दुषमा-सुषमा काल की विशेषताएँ :-

1. इस काल में कर्मभूमि प्रारम्भ हो जाती है।
2. शलाका पुरुषों एवं महापुरुषों का जन्म एवं मोक्ष पुरुषार्थ इसी काल में होता है।
3. छः संहनन एवं छः संस्थान वाले मनुष्य इसी काल में जन्म लेते हैं।
4. इस काल के प्रारम्भ में मनुष्यों की ऊँचाई 500 धनुष एवं आयु एक पूर्व कोटि वर्ष की होती है एवं अन्त में घटते-घटते ऊँचाई 7 हाथ एवं आयु 120 वर्ष की रह जाती है।
5. इस काल में युगल सन्तान के जन्म का कोई नियम नहीं ।

66 कुलकर

शिक्षा- कौन सा भय

1. प्रतिश्रुत -
1. चन्द्र सूर्य दर्शन से उत्पन्न
2. सन्मति -
2. अन्धकार व तारागण से उत्पन्न
3. क्षेमंकर -
3. व्याघ्रादि का भय, गौआदि पालन की शिक्षा
4. क्षेमंधर -
4. अपनी रक्षा हेतु दण्डादि का प्रयोग
5. सीमंकर -
5. कल्पवृक्ष की सीमा विभाजन
6. सीमंधर -
6. वृक्षों का स्वामित्व विभाजन
7. विमलवाहन-
7. अश्वारोहण गजारोहण की शिक्षा
8. चक्षुष्मान-
8. सन्तान का परिचय देकर भय दूर
9. यशस्वी-
9. बालकों का नामकरण

10. अभिचन्द्र–
10. खेलना बोलना सिखलाना
11. चन्द्राभ–
11. सूर्य किरणों से शीत निवारण
12. मरुद्देव–
12. नौका, छतों की प्रयोग विधी
13. प्रसेनजित–
13. जरायु दूर करने का उपाय
14. नाभिराय–
14. नाभिनाल काटने की शिक्षा

67 मन वचन काय से सर्वथा त्रस स्थावर जीवों की हिंसा का पूर्ण त्याग अहिंसा महाव्रत कहलाता है।

68 ब्रह्म अर्थात् आत्म स्वरूप में रमण करना अथवा स्त्री–पुरुष विषयक काम–वासना का त्याग करना उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म है।

69 'अ' अक्षर से ग्रन्थ के नाम :–

1. आत्मानुशासन
2. आप्तपरीक्षा
3. आदिपुराण
4. आलापपद्धति
5. अष्टपाहुड
6. अष्टशती

70 दुषमा काल की विशेषताएँ :–

1. इस काल में मनुष्य हीन संहनन, मंद बुद्धि वाले होते हैं।
2. अनेक बार भोजन करते हैं।
3. यह काल 21000 वर्ष का होता है।
4. मनुष्यों की ऊँचाई प्रारम्भ में 7 हाथ आयु 120 वर्ष एवं घटते–घटते 3 हाथ एवं आयु 20 वर्ष की रह जाती है।
5. पाँच सौ वर्ष बाद उपकल्की राजा व हजार वर्ष बाद एक कल्की राजा उत्पन्न होता है।

71 घर छोड़कर वन में या साधु संघ में तपश्चरण करते हुए रहना, खण्डवस्त्र धारण करना, बिना याचना किये भिक्षावृत्ति से योग्य उचित आहार लेना, अपने लिए भोजन बनवाने का या बने हुए का त्याग करना उद्दिष्ट प्रतिमा है। इस प्रतिमा के धारी क्षुल्लक और ऐलक होते हैं।

72 आत्मा के साथ कर्म प्रदेश (पुद्गलों) का दूध पानी की तरह एकमेक हो जाना बन्ध तत्त्व कहलाता है।

73 द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की मर्यादा को लिए दूसरे के मन में स्थित पदार्थ अथवा विषय को, जो ज्ञान प्रत्यक्ष जानता है। वह मनःपर्यय ज्ञान कहलाता है। इसके दो भेद हैं :–

1. ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान
2. विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान

74 सप्तभंग के नाम :–

1. स्याद् अस्ति
2. स्याद् नास्ति
3. स्याद् अस्ति नास्ति
4. स्याद् अवक्तव्य
5. स्याद् अस्ति अवक्तव्य
6. स्याद् नास्ति अवक्तव्य
7. स्याद् अस्ति नास्ति अवक्तव्य

75 ज्ञानावरण कर्मबंध के पाँच कारण :–

1. शिक्षा गुरु का नाम छिपाना

2. किसी के अध्ययन में बाधा डालना जैसे बिजली बंद कर देना, पुस्तक फाड़ देना, पुस्तक की चोरी करना आदि
3. ज्ञानियों से ईर्ष्या भाव रखना
4. ज्ञान के साधनों का दुरुपयोग
5. आचार्य उपाध्याय के प्रतिकूल चलना
6. दूसरों के गुणों को देखकर जलना
7. शास्त्र विक्रय कर धन कमाना

76 दर्शनावरण कर्म बंध के कारण :-
1. अपनी दृष्टि का गर्व करना
2. आँखें फोड़ना
3. बहुत देर तक सोना, दिन में सोना
4. आलस्य करना, कुतीर्थ प्रशंसा
5. सम्यक् दृष्टियों में दूषण लगाना
6. मुनिगणों के प्रति ग्लानि के भाव रखना

77 आयु काल पूर्ण हुए बिना ही विष भक्षण, रक्त क्षय आदि कारणों से आयु कर्मों के निषेकों का झड़ जाना, अकालमरण अर्थात् कदलीघात कहलाता है।

78 1. निरंजनशतक 2. निजानुभवशतक
3. भावनाशतक 4. सुनीतिशतक
5. परीषहजयशतक

79 पर्याप्तियाँ छह होती हैं :-
1. आहार पर्याप्ति 2. शरीर पर्याप्ति
3. इन्द्रिय पर्याप्ति 4. भाषा पर्याप्ति
5. मन पर्याप्ति 6. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति

80 समुद्घात सात होते है :-
1. वेदना समुद्घात
2. कषाय समुद्घात
3. मारणान्तिक समुद्घात
4. वैक्रियिक समुद्घात
5. आहारक समुद्घात
6. केवली समुद्घात
7. केवली समुद्घात

81 आर्त्तध्यान के चार भेद :-
1. इष्ट वियोगज
2. अनिष्ट संयोगज
3. पीड़ा चिन्तन
4. निदान

82 आठ कर्मों से रहित एवं क्षायिक सम्यक्त्व आदि आठ गुणों से सहित, लोक के अग्र भाग में स्थित, शरीर रहित पुरुषाकार आत्म प्रदेश वाले सिद्ध प्रभु होते हैं।

83 रौद्र ध्यान के चार भेद :-
1. हिंसानन्द
2. मृषानन्द
3. चौर्यानन्द
4. विषय संरक्षणानन्द

84 1. केवली का अवर्णवाद जैसे भगवान कवलाहार करते हैं।
2. श्रुत का अवर्णवाद जैसे आगम में मांस भक्षण का विधान हैं।
3. संघ एवं धर्म का अवर्णवाद।
4. देव का अवर्णवाद।

85 पाँच संस्कृत शतक :-
1. निरंजनशतक
2. भावनाशतक
3. परीषहजयशतक
4. श्रमणशतक
5. सुनीतिशतक

86 शुक्लध्यान के चार भेद :-
1. पृथक्त्व वितर्क
2. एकत्व वितर्क
3. सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति
4. व्युपरत क्रिया निर्वतीनि

87 आहारक शरीर की विशेषताएँ :-
1. सफेद रंग का शुभ्र, मल मूत्रादि सप्त धातु से रहित होता है।
2. दीवाल, पहाड़ आदि से बाधा को प्राप्त नहीं होता।
3. शुभ कार्य को संपादित करता है।
4. प्रमत्त गुणस्थानवर्ती मुनिराज के होता है।

88 जो पंचाचार का पालन करते हैं संघ के नायक होते हैं एवं शिष्यों को शिक्षा-दीक्षा देकर अनुग्रह करते हैं, वे आचार्य परमेष्ठी कहलाते हैं।

89 चारित्रमोहनीय कर्म आस्रव के कारण :
1. शीलव्रती तपस्वियों की निन्दा करना।
2. धार्मिक कार्यों में बाधा उत्पन्न करना।
3. चारित्र में दूषण लगाना।
4. किसी को व्रतों से, संयम से च्युत करना।
5. संक्लेश उत्पादक वेष एवं व्रतों को धारण करना।
6. स्व-पर कषाय उत्पादक क्रियाएँ करना।

90 साधारण वनस्पतिकायिक के दो भेद हैं। नित्य निगोद एवं इतर निगोद। जो जीव कभी त्रस पर्याय को प्राप्त करने योग्य नहीं होते हैं, वे नित्य निगोदियाँ कहलाते हैं।

91 नारकी जीव पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च एवं मनुष्य गति में ही जन्म लेता है।

92 जो रत्नत्रय से युक्त होते हैं, द्वादशांग अथवा तात्कालिक उपलब्ध आगम के ज्ञाता होकर शिष्यों को मुनियों को शास्त्र का अध्ययन कराते हैं, वे उपाध्याय परमेष्ठी कहलाते हैं।

93 असाता वेदनीय कर्म बंध के कारण :-
1. स्वयं दु:खी होना एवं पर को दु:खी करना।
2. अनुकम्पा का अभाव।
3. अङ्गोपांग छेदन, भेदन।
4. अपनी आयु आदि का अभिमान करना।
5. हिंसा के साधनों का उत्पादन।
6. विश्वासघात कुटिलता।

94 सातावेदनीय कर्म आस्रव के कारण :
1. सभी प्राणियों पर अनुकम्पा का भाव।
2. व्रतियों के लिए दान देना।
3. सराग संयम का ग्रहण।
4. अर्हत पूजा, तपस्वियों की वैय्यावृत्य।
5. विनय शीलता।

95 दिगम्बर साधु की पहचान के चिह्न :-
1. मयूर पिच्छिका 2. कमण्डलु 3. नग्नता

96 उच्चगोत्र कर्म आस्रव के कारण :-
1. आत्म निन्दा पर प्रशंसा।
2. गुणी जनों के प्रति नम्रवृत्ति।
3. निरभिमानता, बहुगुण सम्पन्न होने पर भी बड़प्पन का भाव नहीं आने देना।
4. पर का तिरस्कार, निन्दा नहीं करना।

5. धार्मिक साधनों में अत्यन्त आदर बुद्धि रखना।

97 नरकायु आस्रव के कारण :-

1. बहुत आरम्भ, बहुत परिग्रह से युक्त होना।
2. मिथ्या दर्शन।
3. पाँच पापों में प्रवृत्ति।
4. यति वर्ग में फूट पैदा कराना।
5. कृष्ण लेश्या से उत्पन्न रौद्र परिणाम और रौद्र ध्यान पूर्वक मरण।

98 कर्मभूमिज मनुष्य की विशेषता :-

1. असि, मसि, कृषि, शिल्प, सेवा और वाणिज्य रूप षट्कर्मों से आजीविका चलाते हैं।
2. अच्छे-बुरे कर्मों के द्वारा स्वर्ग व नरक को जाते हैं।
3. संयम धारण करके मोक्ष भी प्राप्त कर सकते हैं।

99 देवों की विशेषताएँ :-

1. देवों का आहार (अमृत का) तो होता है, किन्तु निहार (मल-मूत्र), पसीना एवं सप्त धातुएँ नहीं होती है।
2. देवों के शरीर में बाल नहीं होते हैं एवं उनके शरीर में निगोदियाँ जीव भी नहीं होते।
3. देवों के शरीर की परछाई नहीं पड़ती है एवं पलकें भी नहीं झपकती हैं एवं अकालमरण नहीं होता है।
4. समचतुरस्र संस्थान होता है किन्तु संहनन नहीं होता।
5. देव सदा 16 वर्षीय नवयुवक के समान, सुन्दर, वृद्धावस्था रहित होते हैं।
6. देवों को रोग नही होते। इनमें स्त्री पुरुष दो वेद ही होते है।
7. देव अणिमा महिमा आदि आठ गुणों से सहित होते है।
8. एक देव की कम से कम 32 देवियाँ नियम से होती है।

100 पञ्चाश्चर्य के नाम :-

1. रत्नों की वृष्टि होना।
2. मन्द सुगन्धित शीतल पवन बहना।
3. दिव्य पुष्पों की वृष्टि होना।
4. जय-जय ध्वनि का उद्घोष होना।
5. देव दुन्दभि की मधुर ध्वनि होना।

101 तिर्यञ्च आयु के बन्ध के कारण :-

1. मिथ्यात्व युक्त अधर्म का उपदेश।
2. कुटिल स्वभाव, मायाचार रूप परिणाम।
3. छल प्रपञ्च की रुचि, फूट डालना।
4. जाति, कुल, शील संदूषण।
5. मरणकाल में आर्त-रौद्र परिणाम।
6. विसंवादन में रुचि।
7. नील कपोत लेश्या के परिणाम।
8. वर्ण, रस, गंध आदि को विकृत करने की अभिरुचि।

102 एक भवावतारी देवगति के जीव :-

1. सर्वार्थसिद्धि के सभी देव
2. लौकान्तिक देव
3. सौधर्म इन्द्र और उसकी शचि
4. लोकपाल

103 आठ प्रातिहार्यों के नाम :-

1. अशोक वृक्ष
2. तीन छत्र
3. चँवर
4. भामण्डल
5. सिंहासन
6. देव दुन्दभि
7. दिव्यध्वनि
8. पुष्पवृष्टि।

104 मनुष्यायु के बन्ध के कारण :-
1. अल्पारम्भ और अल्प परिग्रह
2. स्वाभाविक भद्रता, सरलता
3. संतोषी सवभाव होना, कम बोलना
4. गुरु-देवता-अतिथियों के पूजा सत्कार में अभिरुचि
5. मिथ्यादर्शन सहित बुद्धि, उदासीनता

105 देवायु बन्ध के कारण :-
1. सराग संयम एवं संयमासंयम रूप आचरण।
2. अकामनिर्जरा एवं बालतप।
3. कल्याणकारी धार्मिक मित्रों की संगति।
4. मरण समय में धर्म ध्यान के परिणाम।
5. कषायों का निग्रह, आयतन सेवा तथा तप की भावना।

106 वर्द्धमान को भयभीत करने के लिए संगम देव ने एक विशाल सर्प का रूप बनाया। जहाँ वे क्रीड़ा कर रहे वहाँ पहुँच गया, सब मित्र डर कर भाग गए किन्तु वर्द्धमान सर्प के साथ ही क्रीड़ा करने लगे। ऐसा देख संगम देव ने अपने रूप में आकर वर्द्धमान की प्रशंसा कर 'महावीर' नाम रख दिया।

107 सुमेरु पर्वत पर तीर्थंकर बालक का अभिषेक करते समय इन्द्र के मन में एक शंका उत्पन्न हुई कि बड़े-बड़े कलशों से अभिषेक होने पर छोटे से शरीर वाले प्रभु को संताप उत्पन्न तो नहीं होगा। अवधि ज्ञान से इस बात को समझकर इन्द्र के सन्देह को दूर करने के लिए अपने पैर के अंगूठे के द्वारा उस महान् गिरिराज को हिला दिया था, उससे प्रभावित होकर इन्द्र ने वर्धमान तीर्थंकर का नाम 'वीर' रखा था।

108 सल्लेखना ग्रहण के चार कारण :-
1. उपसर्ग आने पर (हो जाने पर)।
2. दुर्भिक्ष, अकाल पड़ जाने पर।
3. बुढ़ापा आने पर।
4. निष्प्रतिकारक रोग उत्पन्न होने पर।

109 जिनेन्द्र भगवान द्वारा कहा गया तत्त्व, आगम ही सत्य है अन्य रूप नहीं है इस प्रकार सन्मार्ग में किसी प्रकार की शंका नहीं करना, दृढ़ श्रद्धान रखना सम्यग्दृष्टि का निःशंकित अंग कहलाता है।

110 श्र से श्रद्धावान, व से विवेकवान और क से क्रियावान इस प्रकार श्रद्धा और विवेक के साथ क्रिया करने वाला पुरुष श्रावक कहलाता है।